विदेह VIDEHA

विदेह-सदेह १–३७ विस्तृत अध्ययन

Videha Sadeha 1–37 Detailed Study

विदेह ई-लर्निङ्ग प्रश्नोत्तरी शृंखला · Videha eLearning Quiz Book Series

खण्ड ७ / २२ · Volume 7 of 22

सम्पादक / लेखक: गजेन्द्र ठाकुर

VIDEHA — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

विदेह ई-लर्निङ्ग: https://www.videha.co.in/videha-elearning.htm

© Gajendra Thakur, Editor — Videha eJournal [Beta Version; suggestions invited]

विषय-सूची / Contents

१. विदेह-सदेह ६ — विस्तृत अध्ययन ३० प्रश्न

२. विदेह-सदेह ७ — विस्तृत अध्ययन १६७३ प्रश्न

३. विदेह-सदेह ८ — विस्तृत अध्ययन ७९५ प्रश्न

प्रत्येक अध्यायक प्रश्न-खण्डक बाद ओहि अध्यायक उत्तरमाला (उत्तर ओ व्याख्या) देल गेल अछि।

In each chapter, the answer key with explanations (उत्तरमाला) follows the questions.

अध्याय १ : विदेह-सदेह ६ — विस्तृत अध्ययन

खण्ड 5107 : विदेह-सदेह 6 — -- — (भाग ३)

१. '(भाग ३)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) धारावाहिक

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

२. '(भाग ३)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

३. '(भाग ३)'कैं रचना लिखबासँ पहिने... रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) धारावाहिक

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

४. '(भाग ३)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

५. '(भाग ३)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

६. '(भाग ३)'क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) धारावाहिक

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

७. '(भाग ३)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

८. '(भाग ३)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

९. '(भाग ३)'मे रचना लिखबासँ पहिने...क रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) रचना लिखबासँ पहिने...क रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१०. '(भाग ३)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5108 : विदेह-सदेह 6 — -- — VIDEHA MITHILA... (भाग ५)

११. 'VIDEHA MITHILA... (भाग ५)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) धारावाहिक

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

१२. 'VIDEHA MITHILA... (भाग ५)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

१३. 'VIDEHA MITHILA... (भाग ५)'कैं अंग्रेजी-गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) धारावाहिक

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

१४. 'VIDEHA MITHILA... (भाग ५)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१५. 'VIDEHA MITHILA... (भाग ५)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

१६. 'VIDEHA MITHILA... (भाग ५)'क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) धारावाहिक

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

१७. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ५)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

१८. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ५)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१९. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ५)’मे अंग्रेजी-गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) अंग्रेजी-गद्यक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

२०. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ५)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5109 : विदेह-सदेह 6 — -- — (अंक ६ केर संस्कृत शिक्षा)

२१. ‘(अंक ६ केर संस्कृत शिक्षा)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) धारावाहिक

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

२२. ‘(अंक ६ केर संस्कृत शिक्षा)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

२३. ‘(अंक ६ केर संस्कृत शिक्षा)’कैं संस्कृत-शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) धारावाहिक

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

२४. ‘(अंक ६ केर संस्कृत शिक्षा)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

२५. ‘(अंक ६ केर संस्कृत शिक्षा)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

२६. ‘(अंक ६ केर संस्कृत शिक्षा)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) धारावाहिक

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

२७. ‘(अंक ६ केर संस्कृत शिक्षा)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

२८. ‘(अंक ६ केर संस्कृत शिक्षा)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

२९. ‘(अंक ६ केर संस्कृत शिक्षा)’मे संस्कृत-शिक्षाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) संस्कृत-शिक्षाक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

३०. ‘(अंक ६ केर संस्कृत शिक्षा)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तरमाला — अध्याय १ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. **(A) धारावाहिक** — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

२. **(A) धारावाहिक** — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

३. **(A) धारावाहिक** — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

४. **(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि** — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

५. **(A) धारावाहिक** — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

६. **(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब** — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

७. **(A) धारावाहिक** — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

८. **(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब** — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

९. **(A) रचना लिखबासँ पहिने...क रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि** — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

१०. (A) उत्तरकेँ धारावाहिक धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

११. (A) धारावाहिक — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

१२. (A) धारावाहिक — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

१३. (A) धारावाहिक — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

१४. (A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

१५. (A) धारावाहिक — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

१६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

१७. (A) धारावाहिक — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

१८. (A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

१९. (A) अंग्रेजी-गद्यक रूप धारावाहिक केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

२०. (A) उत्तरकेँ धारावाहिक धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

२१. (A) धारावाहिक — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

२२. (A) धारावाहिक — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

२३. (A) धारावाहिक — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

२४. (A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

२५. (A) धारावाहिक — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

२६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

२७. (A) धारावाहिक — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

२८. (A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

२९. (A) संस्कृत-शिक्षाक रूप धारावाहिक केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

३०. (A) उत्तरकेँ धारावाहिक धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

अध्याय २ : विदेह-सदेह ७ — विस्तृत अध्ययन

खण्ड ३ : विदेह-सदेह ७ — पद्य (विस्तार)

१. विदेह-सदेह ७ मे अंजनी कुमार वर्मा ‘दाऊजी’ कतयक छथि?

(A) सहरसा
(B) दरभंगा
(C) मधुबनी
(D) पटना

२. विदेह-सदेह ७ मे अंजनी कुमार वर्मा ‘दाऊजी’क एकटा पद्यक नाम की?

(A) सुखाएल अतीत
(B) ब्रह्मास्त्र
(C) मोनक गति
(D) कोनो नहि

३. विदेह-सदेह ७ मे गजेन्द्र ठाकुर कोन जापानी पद्य-शैलीमे रचना केलनि?

(A) टनका-वाका, हाइकू, शेनर्यू, हैबून
(B) केवल गजल
(C) केवल दोहा
(D) कोनो नहि

४. विदेह-सदेह ७ मे गजेन्द्र ठाकुर कोन फारसी-मूलक शैलीमे रचना केलनि?

(A) रुबाइ, कता, गजल, कुण्डलिया
(B) केवल हाइकू
(C) केवल छन्द
(D) कोनो नहि

५. विदेह-सदेह ७ मे रवि भूषण पाठकक पद्यमे कोन पाबनिक उल्लेख अछि?

(A) छठि
(B) होली
(C) दीपावली
(D) कोनो नहि

६. विदेह-सदेह ७ मे राजेश मोहन झा ‘गुंजन’क एकटा पद्यक नाम की?

(A) मिझाइत दीप
(B) सुखाएल अतीत
(C) ब्रह्मास्त्र
(D) कोनो नहि

७. विदेह-सदेह ७ मे डॉ. शेफालिका वर्माक पद्यमे कोन विषय छल?

(A) इजोरियाक भाषा, उपेक्षित, देश
(B) केवल प्रेम
(C) केवल हास्य
(D) कोनो नहि

८. विदेह-सदेह ७ मे सतीश चन्द्र झाक पद्यमे कोन राजनीतिक विषय छल?

(A) चुनाव, भाषा आ राजनीति
(B) प्रेम
(C) प्रकृति
(D) कोनो नहि

९. विदेह-सदेह ७ मे मुन्नाजी कोन-कोन शैलीमे पद्य रचलनि?

(A) हाइकू, शेनर्यू, बोनिहार

(B) केवल गजल

(C) केवल छन्द

(D) कोनो नहि

१०. विदेह-सदेह ७ मे अन्नावरन देवेन्दरक पद्य कोन भाषाक अछि?

(A) तेलुगु

(B) तमिल

(C) कन्नड़

(D) बंगाली

११. विदेह-सदेह ७ मे गंगेश गुंजनक पद्य-शैलीक नाम की?

(A) आजाद गजल

(B) हाइकू

(C) रुबाइ

(D) कुण्डलिया

१२. विदेह-सदेह ७ मे ज्योति सुनीत चौधरीक हाइकू-टनकाक एक रचनाक नाम की?

(A) ब्रह्मास्त्र

(B) सुखाएल अतीत

(C) मिझाइत दीप

(D) कोनो नहि

१३. विदेह-सदेह ७ क ISBN की?

(A) 978-93-80538-65-5

(B) 978-93-80538-64-8

(C) 978-93-80538-63-1

(D) कोनो नहि

१४. विदेह-सदेह ७ क मूल्य की?

(A) २०० टाका

(B) १०० टाका

(C) १५० टाका

(D) ५० टाका

१५. विदेह-सदेह ७ मे चन्द्रशेखर कामतिक पद्यमे कोन सामाजिक-समकालीन विषय छल?

(A) आइ काल्हुक छौंड़ा सभ

(B) प्रकृति

(C) प्रेम

(D) कोनो नहि

खण्ड ३५ : विदेह-सदेह ७ — बलराम साहक पद्य (विस्तार)

१६. विदेह-सदेह ७ मे बलराम साहक जन्म-तिथि की?

(A) २१.११.१९७३

(B) १.१.१९८०

(C) १५.८.१९६५

(D) कोनो नहि

१७. बलराम साहक गाम कतय अछि?

(A) नौआबाखर, मधुबनी

(B) दरभंगा

(C) समस्तीपुर

(D) कोनो नहि

१८. बलराम साह पेशासँ की छथि?

(A) अधिवक्ता, जिला न्यायालय मधुबनी

(B) शिक्षक

(C) डॉक्टर

(D) कोनो नहि

१९. बलराम साहक पद्यक शीर्षक की?

(A) आकि नीन टूटि गेल

(B) गोबरक मूल्य

(C) पहरराति

(D) कोनो नहि

२०. 'आकि नीन टूटि गेल' कविताक संरचनात्मक विशेषता की?

(A) स्वप्न-शृंखलाक रूपमे रचित, हर सुखद दृश्यक बाद नीन टूटब

(B) केवल गद्य

(C) निरर्थक

(D) कोनो नहि

२१. कविताक एक सपनामे गामक झगड़ा कोना सुल्झैत अछि?

(A) जाति-एकता आ पंचैतीक माध्यमसँ

(B) केवल पुलिससँ

(C) कोर्ट-केससँ

(D) कोनो नहि

२२. कविताक एक अन्य सपनामे गामक बेटी की हासिल करैत छथि?

(A) गरीबीक बीच बी.ए.क डिग्री

(B) केवल विवाह

(C) विदेश-यात्रा

(D) कोनो नहि

२३. 'आकि नीन टूटि गेल' कविताक मूल भाव की?

(A) आदर्श समाजक स्वप्न आ यथार्थक बीच विडम्बना

(B) केवल हास्य

(C) प्रेम-कविता

(D) कोनो नहि

खण्ड 1678 : विदेह-सदेह 7 — गजेन्द्र ठाकुर: पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण...

२४. गजेन्द्र ठाकुरक "पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५. “पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६. “पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) आलोचना + बहुविधाक कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७. गजेन्द्र ठाकुरक “पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) विदेह सम्पादक

२८. गजेन्द्र ठाकुरक “पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) विदेह सम्पादक

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९. “पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा आलोचना + बहुविधाक कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०. गजेन्द्र ठाकुरक “पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१. “पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ आलोचना + बहुविधाक कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३२. गजेन्द्र ठाकुरक “पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३. खण्ड 1678क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गजेन्द्र ठाकुरक “पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” प्रविष्टि पद्य, आलोचना + बहुविधाक कविता आ “विदेह सम्पादक; विषय-सूत्र विषय-सूत्र; मैथिली विषय-सूत्र विषय-सूत्र; नव्य-न्याय; विश्व-काव्य तुलना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1679 : विदेह-सदेह 7 — अंजनी कुमार वर्मा 'दाऊजी': आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गी...

३४. अंजनी कुमार वर्मा 'दाऊजी'क “आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गीत / दुइ गोट भूख / सुखाएल अतीत / बेरोजगारक आत्मा / जाति आ तंत्र / कोसी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गीत / दुइ गोट भूख / सुखाएल अतीत / बेरोजगारक आत्मा / जाति आ तंत्र / कोसी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५. “आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गीत / दुइ गोट भूख / सुखाएल अतीत / बेरोजगारक आत्मा / जाति आ तंत्र / कोसी”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६. “आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गीत / दुइ गोट भूख / सुखाएल अतीत / बेरोजगारक आत्मा / जाति आ तंत्र / कोसी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता / गीत

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७. अंजनी कुमार वर्मा 'दाऊजी'क “आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गीत / दुइ गोट भूख / सुखाएल अतीत / बेरोजगारक आत्मा / जाति आ तंत्र / कोसी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) वीर+करुण+व्यंग्य

३८. अंजनी कुमार वर्मा 'दाऊजी'क “आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गीत / दुइ गोट भूख / सुखाएल अतीत / बेरोजगारक आत्मा / जाति आ तंत्र / कोसी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ वीर आ व्यंग्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९. “आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गीत / दुइ गोट भूख / सुखाएल अतीत / बेरोजगारक आत्मा / जाति आ तंत्र / कोसी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक अंजनी कुमार वर्मा 'दाऊजी', विधा पद्य, उप-विधा कविता / गीत

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०. अंजनी कुमार वर्मा 'दाऊजी'क “आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गीत / दुइ गोट भूख / सुखाएल अतीत / बेरोजगारक आत्मा / जाति आ तंत्र / कोसी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१. “आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गीत / दुइ गोट भूख / सुखाएल अतीत / बेरोजगारक आत्मा / जाति आ तंत्र / कोसी”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविता / गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४२. अंजनी कुमार वर्मा 'दाऊजी'क “आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गीत / दुइ गोट भूख / सुखाएल अतीत / बेरोजगारक आत्मा / जाति आ तंत्र / कोसी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३. खण्ड 1679क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) अंजनी कुमार वर्मा 'दाऊजी'क “आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गीत / दुइ गोट भूख / सुखाएल अतीत / बेरोजगारक आत्मा / जाति आ तंत्र / कोसी” प्रविष्टि पद्य, कविता / गीत आ “वीर+करुण+व्यंग्य; ग्राम्शी विषय-सूत्र; कोसी विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1680 : विदेह-सदेह 7 — मिथिलेश कुमार झा: खबरदार / गजल

४४. मिथिलेश कुमार झाक “खबरदार / गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) खबरदार / गजल

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५. “खबरदार / गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६. “खबरदार / गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता / गजल

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७. मिथिलेश कुमार झाक “खबरदार / गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) वीर+शृंगार-वियोग

४८. मिथिलेश कुमार झाक “खबरदार / गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) वीर आ शृंगार आ वियोग

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९. “खबरदार / गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मिथिलेश कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता / गजल

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०. मिथिलेश कुमार झाक “खबरदार / गजल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१. “खबरदार / गजल”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविता / गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५२. मिथिलेश कुमार झाक “खबरदार / गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३. खण्ड 1680क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मिथिलेश कुमार झाक “खबरदार / गजल” प्रविष्टि पद्य, कविता / गजल आ “वीर+शृंगार-वियोग; विषय-सूत्र सजगता + विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1681 : विदेह-सदेह 7 — बलराम साह: आकि नींद टूटि गेल

५४. बलराम साहक “आकि नींद टूटि गेल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) आकि नींद टूटि गेल

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५. “आकि नींद टूटि गेल”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६. “आकि नींद टूटि गेल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७. बलराम साहक “आकि नींद टूटि गेल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) वीर+शान्त

५८. बलराम साहक “आकि नींद टूटि गेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) वीर आ शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९. “आकि नींद टूटि गेल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक बलराम साह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०. बलराम साहक “आकि नींद टूटि गेल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१. “आकि नींद टूटि गेल”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६२. बलराम साहक “आकि नींद टूटि गेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३. खण्ड 1681क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) बलराम साहक “आकि नींद टूटि गेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर+शान्त; जागरण-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1682 : विदेह-सदेह 7 — गजेन्द्र ठाकुर: कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबू...

६४. गजेन्द्र ठाकुरक “कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५. “कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६. “कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) बहुविध पद्य

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७. गजेन्द्र ठाकुरक “कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) सम्पादक-कवि

६८. गजेन्द्र ठाकुरक “कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) सम्पादक-कवि

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९. “कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा बहुविध पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०. गजेन्द्र ठाकुरक “कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१. “कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ बहुविध पद्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७२. गजेन्द्र ठाकुरक “कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३. खण्ड 1682क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गजेन्द्र ठाकुरक “कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” प्रविष्टि पद्य, बहुविध पद्य आ “सम्पादक-कवि; जॉयस विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र; विदेह विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1683 : विदेह-सदेह 7 — रवि भूषण पाठक: हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश...

७४. रवि भूषण पाठकक “हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश आ गेयर / पाँच केबी / चमारक ऋण / दीवाली के पहिले / धनतेरस राति / चालीसक बात (आ अन्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश आ गेयर / पाँच केबी / चमारक ऋण / दीवाली के पहिले / धनतेरस राति / चालीसक बात (आ अन्य)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५. “हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश आ गेयर / पाँच केबी / चमारक ऋण / दीवाली के पहिले / धनतेरस राति / चालीसक बात (आ अन्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६. “हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश आ गेयर / पाँच केबी / चमारक ऋण / दीवाली के पहिले / धनतेरस राति / चालीसक बात (आ अन्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) हाइकू + कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७. रवि भूषण पाठकक “हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश आ गेयर / पाँच केबी / चमारक ऋण / दीवाली के पहिले / धनतेरस राति / चालीसक बात (आ अन्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) दलित विषय-सूत्र

७८. रवि भूषण पाठकक “हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश आ गेयर / पाँच केबी / चमारक ऋण / दीवाली के पहिले / धनतेरस राति / चालीसक बात (आ अन्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ वीर आ शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९. “हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश आ गेयर / पाँच केबी / चमारक ऋण / दीवाली के पहिले / धनतेरस राति / चालीसक बात (आ अन्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू + कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०. रवि भूषण पाठकक “हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश आ गेयर / पाँच केबी / चमारक ऋण / दीवाली के पहिले / धनतेरस राति / चालीसक बात (आ अन्य)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१. “हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश आ गेयर / पाँच केबी / चमारक ऋण / दीवाली के पहिले / धनतेरस राति / चालीसक बात (आ अन्य)”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ हाइकू + कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८२. रवि भूषण पाठकक “हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश आ गेयर / पाँच केबी / चमारक ऋण / दीवाली के पहिले / धनतेरस राति / चालीसक बात (आ अन्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३. खण्ड 1683क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रवि भूषण पाठकक “हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश आ गेयर / पाँच केबी / चमारक ऋण / दीवाली के पहिले / धनतेरस राति / चालीसक बात (आ अन्य)” प्रविष्टि पद्य, हाइकू + कविता आ “दलित विषय-सूत्र; 'चमारक ऋण' पहचान-कविता; करुण+वीर+शान्त; विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1684 : विदेह-सदेह 7 — राजेश मोहन झा 'गुंजन': मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केह...

८४. राजेश मोहन झा 'गुंजन'क “मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केहेन खेल / गरम जमाना / पलायन / सुगर स्त्री (आ अन्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केहेन खेल / गरम जमाना / पलायन / सुगर स्त्री (आ अन्य)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५. “मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केहेन खेल / गरम जमाना / पलायन / सुगर स्त्री (आ अन्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६. “मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केहेन खेल / गरम जमाना / पलायन / सुगर स्त्री (आ अन्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७. राजेश मोहन झा 'गुंजन'क “मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केहेन खेल / गरम जमाना / पलायन / सुगर स्त्री (आ अन्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य+व्यंग्य+करुण

८८. राजेश मोहन झा 'गुंजन'क “मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केहेन खेल / गरम जमाना / पलायन / सुगर स्त्री (आ अन्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ हास्य आ व्यंग्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९. “मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केहेन खेल / गरम जमाना / पलायन / सुगर स्त्री (आ अन्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक राजेश मोहन झा 'गुंजन', विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०. राजेश मोहन झा 'गुंजन'क “मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केहेन खेल / गरम जमाना / पलायन / सुगर स्त्री (आ अन्य)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९१. “मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केहेन खेल / गरम जमाना / पलायन / सुगर स्त्री (आ अन्य)”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९२. राजेश मोहन झा 'गुंजन'क “मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केहेन खेल / गरम जमाना / पलायन / सुगर स्त्री (आ अन्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३. खण्ड 1684क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) राजेश मोहन झा 'गुंजन'क “मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केहेन खेल / गरम जमाना / पलायन / सुगर स्त्री (आ अन्य)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य+व्यंग्य+करुण; राजनीतिक व्यंग्य; पलायन; नारीवादी अंत:पाठ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1685 : विदेह-सदेह 7 — नवीन कुमार 'आशा': सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल

९४. नवीन कुमार 'आशा'क “सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९५. “सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९६. “सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९७. नवीन कुमार 'आशा'क “सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण आ वीर

९८. नवीन कुमार 'आशा'क “सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ वीर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९९. “सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक नवीन कुमार 'आशा', विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००. नवीन कुमार 'आशा'क “सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१. “सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०२. नवीन कुमार 'आशा'क “सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३. खण्ड 1685क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नवीन कुमार 'आशा'क “सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ वीर; रोटी आ रोजी; मैथिली युवा स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1686 : विदेह-सदेह 7 — शम्भुनाथ झा 'वत्स': उद्वादी बनि जाइ

१०४. शम्भुनाथ झा 'वत्स'क “उद्वादी बनि जाइ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) उद्वादी बनि जाइ

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५. “उद्वादी बनि जाइ”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६. “उद्वादी बनि जाइ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७. शम्भुनाथ झा 'वत्स'क “उद्वादी बनि जाइ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) साहित्याचार्य वेदविद्

१०८. शम्भुनाथ झा 'वत्स'क “उद्वादी बनि जाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) वीर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९. “उद्वादी बनि जाइ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक शम्भुनाथ झा 'वत्स', विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०. शम्भुनाथ झा 'वत्स'क “उद्वादी बनि जाइ” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११. “उद्वादी बनि जाइ”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११२. शम्भुनाथ झा 'वत्स'क “उद्वादी बनि जाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३. खण्ड 1686क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) शम्भुनाथ झा 'वत्स'क “उद्वादी बनि जाइ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्याचार्य वेदविद्; वीर; मिथिला-पहचान आ आह्वान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1687 : विदेह-सदेह 7 — अजित मिश्र: नव वर्ष

११४. अजित मिश्रक “नव वर्ष” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) नव वर्ष

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५. “नव वर्ष”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६. “नव वर्ष”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७. अजित मिश्रक “नव वर्ष” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त आ शृंगार

११८. अजित मिश्रक “नव वर्ष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार आ शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९. “नव वर्ष”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक अजित मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०. अजित मिश्रक “नव वर्ष” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१. “नव वर्ष”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२२. अजित मिश्रक “नव वर्ष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३. खण्ड 1687क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) अजित मिश्रक “नव वर्ष” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ शृंगार; नववर्षीय मनन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1688 : विदेह-सदेह 7 — डॉ. शेफालिका वर्मा: नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / व...

१२४. डॉ. शेफालिका वर्माक “नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / विधाता / बच्चा आ बेव्यवस्था / स्मृति-शेष” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / विधाता / बच्चा आ बेव्यवस्था / स्मृति-शेष

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५. “नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / विधाता / बच्चा आ बेव्यवस्था / स्मृति-शेष”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६. “नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / विधाता / बच्चा आ बेव्यवस्था / स्मृति-शेष”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७. डॉ. शेफालिका वर्माक “नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / विधाता / बच्चा आ बेव्यवस्था / स्मृति-शेष” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) साहित्य अकादेमी

१२८. डॉ. शेफालिका वर्माक “नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / विधाता / बच्चा आ बेव्यवस्था / स्मृति-शेष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ बीभत्स

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९. “नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / विधाता / बच्चा आ बेव्यवस्था / स्मृति-शेष”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक डॉ. शेफालिका वर्मा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०. डॉ. शेफालिका वर्माक “नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / विधाता / बच्चा आ बेव्यवस्था / स्मृति-शेष” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१. “नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / विधाता / बच्चा आ बेव्यवस्था / स्मृति-शेष”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३२. डॉ. शेफालिका वर्माक “नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / विधाता / बच्चा आ बेव्यवस्था / स्मृति-शेष” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३. खण्ड 1688क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) डॉ. शेफालिका वर्माक “नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / विधाता / बच्चा आ बेव्यवस्था / स्मृति-शेष” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य अकादेमी; पर्यावरण-नारीवादी; करुण आ बीभत्स; स्पिवाकक हाशियाकरण-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1689 : विदेह-सदेह 7 — सतीश चन्द्र झा: चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पे...

१३४. सतीश चन्द्र झाक “चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पेट / पंच साल / बिहार एखनो बेहाल / नेत्रा तेतरी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पेट / पंच साल / बिहार एखनो बेहाल / नेत्रा तेतरी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५. “चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पेट / पंच साल / बिहार एखनो बेहाल / नेत्रा तेतरी”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६. “चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पेट / पंच साल / बिहार एखनो बेहाल / नेत्रा तेतरी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता / व्यंग्य

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७. सतीश चन्द्र झाक “चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पेट / पंच साल / बिहार एखनो बेहाल / नेत्रा तेतरी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) व्यंग्य आ करुण आ वीर

१३८. सतीश चन्द्र झाक “चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पेट / पंच साल / बिहार एखनो बेहाल / नेत्रा तेतरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ वीर आ व्यंग्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९. “चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पेट / पंच साल / बिहार एखनो बेहाल / नेत्रा तेतरी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता / व्यंग्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०. सतीश चन्द्र झाक “चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पेट / पंच साल / बिहार एखनो बेहाल / नेत्रा तेतरी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१. “चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पेट / पंच साल / बिहार एखनो बेहाल / नेत्रा तेतरी”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविता / व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४२. सतीश चन्द्र झाक “चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पेट / पंच साल / बिहार एखनो बेहाल / नेत्रा तेतरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३. खण्ड 1689क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सतीश चन्द्र झाक “चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पेट / पंच साल / बिहार एखनो बेहाल / नेत्रा तेतरी” प्रविष्टि पद्य, कविता / व्यंग्य आ “व्यंग्य आ करुण आ वीर; ग्राम्शीक चुनावी राजनीति-दृष्टि; बिहार चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1690 : विदेह-सदेह 7 — सुबोध कुमार ठाकुर: विडम्बना / प्रतीक्षा

१४४. सुबोध कुमार ठाकुरक “विडम्बना / प्रतीक्षा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) विडम्बना / प्रतीक्षा

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५. “विडम्बना / प्रतीक्षा”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६. “विडम्बना / प्रतीक्षा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७. सुबोध कुमार ठाकुरक “विडम्बना / प्रतीक्षा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण आ शान्त

१४८. सुबोध कुमार ठाकुरक “विडम्बना / प्रतीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९. “विडम्बना / प्रतीक्षा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सुबोध कुमार ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०. सुबोध कुमार ठाकुरक “विडम्बना / प्रतीक्षा” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१. “विडम्बना / प्रतीक्षा”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५२. सुबोध कुमार ठाकुरक “विडम्बना / प्रतीक्षा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३. खण्ड 1690क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सुबोध कुमार ठाकुरक “विडम्बना / प्रतीक्षा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शान्त; अस्तित्वगत प्रतीक्षा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1691 : विदेह-सदेह 7 — किशन कारीगर: दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह

१५४. किशन कारीगरक “दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५५. “दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६. “दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७. किशन कारीगरक “दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण आ शृंगार

१५८. किशन कारीगरक “दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ शृंगार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५९. “दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०. किशन कारीगरक “दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१. “दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६२. किशन कारीगरक “दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३. खण्ड 1691क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) किशन कारीगरक “दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शृंगार; प्रवास आ हानि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1692 : विदेह-सदेह 7 — राम विलास साहु: कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत

१६४. राम विलास साहुक “कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६५. “कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६. “कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता / गीत

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७. राम विलास साहुक “कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शृंगार आ शान्त

१६८. राम विलास साहुक “कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार आ शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६९. “कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता / गीत

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७०. राम विलास साहुक “कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७१. “कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविता / गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७२. राम विलास साहुक “कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७३. खण्ड 1692क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) राम विलास साहुक “कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत” प्रविष्टि पद्य, कविता / गीत आ “शृंगार आ शान्त; ऋतु-छवि; विद्यापति-परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1693 : विदेह-सदेह 7 — पंकज कुमार झा: भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष /...

१७४. पंकज कुमार झाक “भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष / सहजता / आउ सुनू कने बात हमर” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष / सहजता / आउ सुनू कने बात हमर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७५. “भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष / सहजता / आउ सुनू कने बात हमर”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६. “भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष / सहजता / आउ सुनू कने बात हमर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७७. पंकज कुमार झाक “भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष / सहजता / आउ सुनू कने बात हमर” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) वीर आ करुण

१७८. पंकज कुमार झाक “भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष / सहजता / आउ सुनू कने बात हमर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ वीर आ व्यंग्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७९. “भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष / सहजता / आउ सुनू कने बात हमर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक पंकज कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८०. पंकज कुमार झाक “भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष / सहजता / आउ सुनू कने बात हमर” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८१. “भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष / सहजता / आउ सुनू कने बात हमर”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८२. पंकज कुमार झाक “भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष / सहजता / आउ सुनू कने बात हमर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८३. खण्ड 1693क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पंकज कुमार झाक “भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष / सहजता / आउ सुनू कने बात हमर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर आ करुण; रीढ़-विहीन पुरुष पर व्यंग्य; सामाजिक जागरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1694 : विदेह-सदेह 7 — मुन्नाजी: हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार

१८४. मुन्नाजीक “हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८५. “हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६. “हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) हाइकू आ कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८७. मुन्नाजीक “हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) विहनि कथा आन्दोलनक अग्रणी

१८८. मुन्नाजीक “हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ वीर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८९. “हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मुन्नाजी, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू आ कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९०. मुन्नाजीक “हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९१. “हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ हाइकू आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९२. मुन्नाजीक “हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९३. खण्ड 1694क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मुन्नाजीक “हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ कविता आ “विहनि कथा आन्दोलनक अग्रणी; करुण आ वीर; श्रमिकक स्वर; ग्राम्शी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1695 : विदेह-सदेह 7 — ज्योति सुनीत चौधरी: हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जात...

१९४. ज्योति सुनीत चौधरीक “हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जातक खेल / स्वतन्त्रता दिवस / मिथिला चित्रकला (आ अन्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जातक खेल / स्वतन्त्रता दिवस / मिथिला चित्रकला (आ अन्य)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९५. “हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जातक खेल / स्वतन्त्रता दिवस / मिथिला चित्रकला (आ अन्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६. “हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जातक खेल / स्वतन्त्रता दिवस / मिथिला चित्रकला (आ अन्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) हाइकू-टनका आ कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९७. ज्योति सुनीत चौधरीक “हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जातक खेल / स्वतन्त्रता दिवस / मिथिला चित्रकला (आ अन्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) लन्दन-निवासी

१९८. ज्योति सुनीत चौधरीक “हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जातक खेल / स्वतन्त्रता दिवस / मिथिला चित्रकला (आ अन्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) लन्दन-निवासी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९९. “हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जातक खेल / स्वतन्त्रता दिवस / मिथिला चित्रकला (आ अन्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू-टनका आ कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२००. ज्योति सुनीत चौधरीक “हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जातक खेल / स्वतन्त्रता दिवस / मिथिला चित्रकला (आ अन्य)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०१. “हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जातक खेल / स्वतन्त्रता दिवस / मिथिला चित्रकला (आ अन्य)”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ हाइकू-टनका आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०२. ज्योति सुनीत चौधरीक “हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जातक खेल / स्वतन्त्रता दिवस / मिथिला चित्रकला (आ अन्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०३. खण्ड 1695क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ज्योति सुनीत चौधरीक “हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जातक खेल / स्वतन्त्रता दिवस / मिथिला चित्रकला (आ अन्य)” प्रविष्टि पद्य, हाइकू-टनका आ कविता आ “लन्दन-निवासी; स्पिवाकक प्रवासी-दृष्टि; भ्रष्टाचार-विरोधी; मिथिला चित्रकला; जात्यन्धता-आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1696 : विदेह-सदेह 7 — अग्रावरन देवेन्द्र: तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)

२०४. अग्रावरन देवेन्द्रक “तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०५. “तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०६. “तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) अनूदित कविता (तेलुगुसँ मैथिली)

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०७. अग्रावरन देवेन्द्रक “तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) तेलुगुसँ मैथिली

२०८. अग्रावरन देवेन्द्रक “तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) तेलुगुसँ मैथिली

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०९. “तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक अग्रावरन देवेन्द्र, विधा पद्य, उप-विधा अनूदित कविता (तेलुगुसँ मैथिली)

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१०. अग्रावरन देवेन्द्रक “तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२११. “तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ अनूदित कविता (तेलुगुसँ मैथिली)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१२. अग्रावरन देवेन्द्रक “तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१३. खण्ड 1696क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) अग्रावरन देवेन्द्रक “तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि पद्य, अनूदित कविता (तेलुगुसँ मैथिली) आ “तेलुगुसँ मैथिली; बेन्यामिनक अनुवाद-दृष्टि; अन्तर-साहित्यिक आदान-प्रदान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1697 : विदेह-सदेह 7 — गिरीश चन्द्र लाल: नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक र...

२१४. गिरीश चन्द्र लालक “नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक रंग अनेक रंग” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक रंग अनेक रंग

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१५. “नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक रंग अनेक रंग”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१६. “नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक रंग अनेक रंग”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१७. गिरीश चन्द्र लालक “नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक रंग अनेक रंग” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त आ शृंगार

२१८. गिरीश चन्द्र लालक “नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक रंग अनेक रंग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार आ शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१९. “नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक रंग अनेक रंग”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक गिरीश चन्द्र लाल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२०. गिरीश चन्द्र लालक “नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक रंग अनेक रंग” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२१. “नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक रंग अनेक रंग”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२२. गिरीश चन्द्र लालक “नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक रंग अनेक रंग” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२३. खण्ड 1697क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गिरीश चन्द्र लालक “नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक रंग अनेक रंग” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ शृंगार; आकाश-छवि; भोरक रूपक; आशावाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1698 : विदेह-सदेह 7 — गंगेश गुंजन: आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१०

२२४. गंगेश गुंजनक “आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१०” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१०

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२५. “आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१०”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२६. “आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१०”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) आजाद गजल आ कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२७. गंगेश गुंजनक “आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१०” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) साहित्य अकादेमी

२२८. गंगेश गुंजनक “आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१०” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) साहित्य अकादेमी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२९. “आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१०”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा आजाद गजल आ कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३०. गंगेश गुंजनक “आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१०” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३१. “आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१०”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ आजाद गजल आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३२. गंगेश गुंजनक “आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१०” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३३. खण्ड 1698क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गंगेश गुंजनक “आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१०” प्रविष्टि पद्य, आजाद गजल आ कविता आ “साहित्य अकादेमी; आजाद गजल; स्वतन्त्रता-दिवस मनन; बाख्तिनक बहु-स्वरीयता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1699 : विदेह-सदेह 7 — मनीष झा 'बौआभाइ': भेल एहेन अवतार छल

२३४. मनीष झा 'बौआभाइ'क “भेल एहेन अवतार छल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) भेल एहेन अवतार छल

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३५. “भेल एहेन अवतार छल”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३६. “भेल एहेन अवतार छल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३७. मनीष झा 'बौआभाइ'क “भेल एहेन अवतार छल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) अद्भुत आ व्यंग्य

२३८. मनीष झा 'बौआभाइ'क “भेल एहेन अवतार छल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) अद्भुत आ व्यंग्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३९. “भेल एहेन अवतार छल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मनीष झा 'बौआभाइ', विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४०. मनीष झा 'बौआभाइ'क “भेल एहेन अवतार छल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४१. “भेल एहेन अवतार छल”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४२. मनीष झा 'बौआभाइ'क “भेल एहेन अवतार छल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४३. खण्ड 1699क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मनीष झा 'बौआभाइ'क “भेल एहेन अवतार छल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अद्भुत आ व्यंग्य; अवतार-रूपक; विदेहक नव स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1700 : विदेह-सदेह 7 — लालबाबू कर्ण: जन्मभूमि

२४४. लालबाबू कर्णक “जन्मभूमि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) जन्मभूमि

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४५. “जन्मभूमि”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४६. “जन्मभूमि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४७. लालबाबू कर्णक “जन्मभूमि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) वात्सल्य आ शान्त

२४८. लालबाबू कर्णक “जन्मभूमि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ वात्सल्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४९. “जन्मभूमि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक लालबाबू कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५०. लालबाबू कर्णक “जन्मभूमि” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५१. “जन्मभूमि”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२५२. लालबाबू कर्णक “जन्मभूमि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५३. खण्ड 1700क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लालबाबू कर्णक “जन्मभूमि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वात्सल्य आ शान्त; जन्मभूमिकेँ पहचान रूपमे देखब; मिथिला-लगाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1701 : विदेह-सदेह 7 — चन्द्रशेखर कामित: आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी...

२५४. चन्द्रशेखर कामितक “आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी / गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी / गीत

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५५. “आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी / गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५६. “आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी / गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता / गीत

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५७. चन्द्रशेखर कामितक “आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी / गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य आ शृंगार

२५८. चन्द्रशेखर कामितक “आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी / गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार आ हास्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५९. “आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी / गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक चन्द्रशेखर कामित, विधा पद्य, उप-विधा कविता / गीत

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६०. चन्द्रशेखर कामितक “आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी / गीत” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६१. “आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी / गीत”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविता / गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२६२. चन्द्रशेखर कामितक “आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी / गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६३. खण्ड 1701क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) चन्द्रशेखर कामितक “आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी / गीत” प्रविष्टि पद्य, कविता / गीत आ “हास्य आ शृंगार; घरूआ हास्य; लोक-संवेदना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1702 : विदेह-सदेह 7 — मनोज झा 'मुक्ति': हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे

२६४. मनोज झा 'मुक्ति'क “हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६५. “हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६६. “हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) हाइकू आ कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६७. मनोज झा 'मुक्ति'क “हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त आ व्यंग्य

२६८. मनोज झा 'मुक्ति'क “हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ व्यंग्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६९. “हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मनोज झा 'मुक्ति', विधा पद्य, उप-विधा हाइकू आ कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७०. मनोज झा 'मुक्ति'क “हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७१. “हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ हाइकू आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२७२. मनोज झा 'मुक्ति'क “हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७३. खण्ड 1702क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मनोज झा 'मुक्ति'क “हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ कविता आ “शान्त आ व्यंग्य; पाखण्ड-आलोचना; सूक्ष्मतावाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1703 : विदेह-सदेह 7 — राजेन्द्र चौधरी: श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन

२७४. राजेन्द्र चौधरीक “श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७५. “श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७६. “श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) भजन

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७७. राजेन्द्र चौधरीक “श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) भक्ति रस

२७८. राजेन्द्र चौधरीक “श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) भक्ति

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७९. “श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक राजेन्द्र चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा भजन

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८०. राजेन्द्र चौधरीक “श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८१. “श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ भजनक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२८२. राजेन्द्र चौधरीक “श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८३. खण्ड 1703क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) राजेन्द्र चौधरीक “श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन” प्रविष्टि पद्य, भजन आ “भक्ति रस; भक्ति-परम्परा; भक्तिपरक रूप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1704 : विदेह-सदेह 7 — रमाकान्त राय 'रमा': वन्दना

२८४. रमाकान्त राय 'रमा'क “वन्दना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) वन्दना

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८५. “वन्दना”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८६. “वन्दना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) वन्दना

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८७. रमाकान्त राय 'रमा'क “वन्दना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) भक्ति आ शान्त

२८८. रमाकान्त राय 'रमा'क “वन्दना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ भक्ति

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८९. “वन्दना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक रमाकान्त राय 'रमा', विधा पद्य, उप-विधा वन्दना

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९०. रमाकान्त राय 'रमा'क “वन्दना” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९१. “वन्दना”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ वन्दनाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२९२. रमाकान्त राय 'रमा'क “वन्दना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९३. खण्ड 1704क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रमाकान्त राय 'रमा'क “वन्दना” प्रविष्टि पद्य, वन्दना आ “भक्ति आ शान्त; स्तुतिपरक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1705 : विदेह-सदेह 7 — प्रकाश प्रेमी: गीत

२९४. प्रकाश प्रेमीक “गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) गीत

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९५. प्रकाश प्रेमीक “गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९६. प्रकाश प्रेमीक “गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) गीत

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९७. प्रकाश प्रेमीक “गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शृंगार आ शान्त

२९८. प्रकाश प्रेमीक “गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार आ शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९९. प्रकाश प्रेमीक “गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक प्रकाश प्रेमी, विधा पद्य, उप-विधा गीत

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३००. प्रकाश प्रेमीक “गीत” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०१. प्रकाश प्रेमीक “गीत”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३०२. प्रकाश प्रेमीक “गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०३. खण्ड 1705क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) प्रकाश प्रेमीक “गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “शृंगार आ शान्त; गीत-परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1706 : विदेह-सदेह 7 — सुमन झा 'सृजन': कैक्टस जक दिल / बलि

३०४. सुमन झा 'सृजन'क “कैक्टस जक दिल / बलि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) कैक्टस जक दिल / बलि

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०५. सुमन झा 'सृजन'क “कैक्टस जक दिल / बलि”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०६. सुमन झा 'सृजन'क “कैक्टस जक दिल / बलि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०७. सुमन झा 'सृजन'क “कैक्टस जक दिल / बलि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण आ व्यंग्य

३०८. सुमन झा 'सृजन'क “कैक्टस जक दिल / बलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ व्यंग्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०९. सुमन झा 'सृजन'क “कैक्टस जक दिल / बलि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सुमन झा 'सृजन', विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१०. सुमन झा 'सृजन'क “कैक्टस जक दिल / बलि” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३११. सुमन झा 'सृजन'क “कैक्टस जक दिल / बलि”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३१२. सुमन झा 'सृजन'क “कैक्टस जक दिल / बलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१३. खण्ड 1706क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सुमन झा 'सृजन'क “कैक्टस जक दिल / बलि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ व्यंग्य; कैक्टस-दिल रूपक; बलिदान-विषय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1707 : विदेह-सदेह 7 — शिवकुमार मिश्र: भलमानुस समाज

३१४. शिवकुमार मिश्रक “भलमानुस समाज” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) भलमानुस समाज

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१५. शिवकुमार मिश्रक “भलमानुस समाज”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१६. शिवकुमार मिश्रक “भलमानुस समाज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१७. शिवकुमार मिश्रक “भलमानुस समाज” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य आ व्यंग्य

३१८. शिवकुमार मिश्रक “भलमानुस समाज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) हास्य आ व्यंग्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१९. शिवकुमार मिश्रक “भलमानुस समाज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक शिवकुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२०. शिवकुमार मिश्रक “भलमानुस समाज” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२१. शिवकुमार मिश्रक “भलमानुस समाज”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३२२. शिवकुमार मिश्रक “भलमानुस समाज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२३. खण्ड 1707क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) शिवकुमार मिश्रक “भलमानुस समाज” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ व्यंग्य; भलमानुस समाजक विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1708 : विदेह-सदेह 7 — डॉ. बचेश्वर झा: भट / भावाञ्जलि

३२४. डॉ. बचेश्वर झाक “भट / भावाञ्जलि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) भट / भावाञ्जलि

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२५. डॉ. बचेश्वर झाक “भट / भावाञ्जलि”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२६. डॉ. बचेश्वर झाक “भट / भावाञ्जलि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२७. डॉ. बचेश्वर झाक “भट / भावाञ्जलि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त आ करुण

३२८. डॉ. बचेश्वर झाक “भट / भावाञ्जलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२९. डॉ. बचेश्वर झाक “भट / भावाञ्जलि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक डॉ. बचेश्वर झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३०. डॉ. बचेश्वर झाक “भट / भावाञ्जलि” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३१. डॉ. बचेश्वर झाक “भट / भावाञ्जलि”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३३२. डॉ. बचेश्वर झाक “भट / भावाञ्जलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३३. खण्ड 1708क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) डॉ. बचेश्वर झाक “भट / भावाञ्जलि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ करुण; ग्राम्य-संवेदना आ शोकगीतात्मकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1709 : विदेह-सदेह 7 — श्यामल सुमन: सय

३३४. श्यामल सुमनक “सय” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) सय

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३५. श्यामल सुमनक “सय”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३६. श्यामल सुमनक “सय”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३७. श्यामल सुमनक “सय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) दोहा-परम्परा

३३८. श्यामल सुमनक “सय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३९. श्यामल सुमनक “सय”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक श्यामल सुमन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४०. श्यामल सुमनक “सय” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४१. श्यामल सुमनक “सय”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३४२. श्यामल सुमनक “सय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४३. खण्ड 1709क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) श्यामल सुमनक “सय” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दोहा-परम्परा; शान्त; सूक्ष्मतावाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1710 : विदेह-सदेह 7 — जय प्रकाश मंडल: उपराग / भूल कतए भेल

३४४. जय प्रकाश मंडलक “उपराग / भूल कतए भेल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) उपराग / भूल कतए भेल

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४५. जय प्रकाश मंडलक “उपराग / भूल कतए भेल”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४६. जय प्रकाश मंडलक “उपराग / भूल कतए भेल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४७. जय प्रकाश मंडलक “उपराग / भूल कतए भेल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण आ शान्त

३४८. जय प्रकाश मंडलक “उपराग / भूल कतए भेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४९. जय प्रकाश मंडलक “उपराग / भूल कतए भेल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक जय प्रकाश मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५०. जय प्रकाश मंडलक “उपराग / भूल कतए भेल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५१. जय प्रकाश मंडलक “उपराग / भूल कतए भेल”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३५२. जय प्रकाश मंडलक “उपराग / भूल कतए भेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५३. खण्ड 1710क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) जय प्रकाश मंडलक “उपराग / भूल कतए भेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शान्त; ग्रहण-रूपक; आत्म-प्रश्नाकुलता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1711 : विदेह-सदेह 7 — सत्येश्वर कुमार झा: दस गोट क्षणिका

३५४. सत्येश्वर कुमार झाक “दस गोट क्षणिका” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) दस गोट क्षणिका

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५५. सत्येश्वर कुमार झाक “दस गोट क्षणिका”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५६. सत्येश्वर कुमार झाक “दस गोट क्षणिका”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) क्षणिका

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५७. सत्येश्वर कुमार झाक “दस गोट क्षणिका” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त

३५८. सत्येश्वर कुमार झाक “दस गोट क्षणिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५९. सत्येश्वर कुमार झाक “दस गोट क्षणिका”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सत्येश्वर कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा क्षणिका

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६०. सत्येश्वर कुमार झाक “दस गोट क्षणिका” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६१. सत्येश्वर कुमार झाक “दस गोट क्षणिका”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ क्षणिकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३६२. सत्येश्वर कुमार झाक “दस गोट क्षणिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६३. खण्ड 1711क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सत्येश्वर कुमार झाक “दस गोट क्षणिका” प्रविष्टि पद्य, क्षणिका आ “शान्त; दस सूक्ष्म क्षण-चित्र; चेखवक संक्षिप्ति-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1712 : विदेह-सदेह 7 — कपिलेश्वर साहु: कोसी

३६४. कपिलेश्वर साहुक “कोसी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) कोसी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६५. कपिलेश्वर साहुक “कोसी”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६६. कपिलेश्वर साहुक “कोसी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६७. कपिलेश्वर साहुक “कोसी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) रौद्र आ करुण

३६८. कपिलेश्वर साहुक “कोसी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ रौद्र

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६९. कपिलेश्वर साहुक “कोसी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक कपिलेश्वर साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७०. कपिलेश्वर साहुक “कोसी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७१. कपिलेश्वर साहुक “कोसी”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३७२. कपिलेश्वर साहुक “कोसी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७३. खण्ड 1712क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) कपिलेश्वर साहुक “कोसी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रौद्र आ करुण; २००८ क कोसी-बाढ़; पर्यावरण आ दलित-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1713 : विदेह-सदेह 7 — राधाकान्त मंडल 'रमण': स्वागत गीत

३७४. राधाकान्त मंडल 'रमण'क “स्वागत गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) स्वागत गीत

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७५. राधाकान्त मंडल 'रमण'क “स्वागत गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७६. राधाकान्त मंडल 'रमण'क “स्वागत गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) गीत

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७७. राधाकान्त मंडल 'रमण'क “स्वागत गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) वात्सल्य आ शृंगार

३७८. राधाकान्त मंडल 'रमण'क “स्वागत गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार आ वात्सल्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७९. राधाकान्त मंडल 'रमण'क “स्वागत गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक राधाकान्त मंडल 'रमण', विधा पद्य, उप-विधा गीत

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८०. राधाकान्त मंडल 'रमण'क “स्वागत गीत” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८१. राधाकान्त मंडल 'रमण'क “स्वागत गीत”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३८२. राधाकान्त मंडल 'रमण'क “स्वागत गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८३. खण्ड 1713क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) राधाकान्त मंडल 'रमण'क “स्वागत गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “वात्सल्य आ शृंगार; स्वागत-गीत परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1714 : विदेह-सदेह 7 — धीरेन्द्र प्रेमर्षि: किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२

३८४. धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८५. धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८६. धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) फगुआ गीत आ गजल

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८७. धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य आ शृंगार

३८८. धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार आ हास्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८९. धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक धीरेन्द्र प्रेमर्षि, विधा पद्य, उप-विधा फगुआ गीत आ गजल

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९०. धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९१. धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ फगुआ गीत आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३९२. धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९३. खण्ड 1714क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, फगुआ गीत आ गजल आ “हास्य आ शृंगार; फगुआ-परम्परा; बाख्तिनक लोक-उत्सवी दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1715 : विदेह-सदेह 7 — सरोज 'खिलाड़ी': गीत

३९४. सरोज 'खिलाड़ी'क “गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) गीत

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९५. सरोज 'खिलाड़ी'क “गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९६. सरोज 'खिलाड़ी'क “गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) गीत

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९७. सरोज 'खिलाड़ी'क “गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) गीत-परम्परा

३९८. सरोज 'खिलाड़ी'क “गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) गीत-परम्परा

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९९. सरोज 'खिलाड़ी'क “गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सरोज 'खिलाड़ी', विधा पद्य, उप-विधा गीत

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४००. सरोज 'खिलाड़ी'क “गीत” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०१. सरोज 'खिलाड़ी'क “गीत”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४०२. सरोज 'खिलाड़ी'क “गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०३. खण्ड 1715क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सरोज 'खिलाड़ी'क “गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “गीत-परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1716 : विदेह-सदेह 7 — नन्द विलास राय: गीत १-२ / जनसंख्या

४०४. नन्द विलास रायक “गीत १-२ / जनसंख्या” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) गीत १-२ / जनसंख्या

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०५. नन्द विलास रायक “गीत १-२ / जनसंख्या”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०६. नन्द विलास रायक “गीत १-२ / जनसंख्या”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) गीत आ कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०७. नन्द विलास रायक “गीत १-२ / जनसंख्या” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन्म: 02.01.1957

४०८. नन्द विलास रायक “गीत १-२ / जनसंख्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) व्यंग्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०९. नन्द विलास रायक “गीत १-२ / जनसंख्या”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक नन्द विलास राय, विधा पद्य, उप-विधा गीत आ कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१०. नन्द विलास रायक “गीत १-२ / जनसंख्या” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४११. नन्द विलास रायक “गीत १-२ / जनसंख्या”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ गीत आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४१२. नन्द विलास रायक “गीत १-२ / जनसंख्या” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१३. खण्ड 1716क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नन्द विलास रायक “गीत १-२ / जनसंख्या” प्रविष्टि पद्य, गीत आ कविता आ “जन्म: 02.01.1957; गीत आ व्यंग्य; जनसंख्या-संकट पर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1717 : विदेह-सदेह 7 — विनीत ठाकुर: शान्ति दूत परवा

४१४. विनीत ठाकुरक “शान्ति दूत परवा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) शान्ति दूत परवा

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१५. विनीत ठाकुरक “शान्ति दूत परवा”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१६. विनीत ठाकुरक “शान्ति दूत परवा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१७. विनीत ठाकुरक “शान्ति दूत परवा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त आ वीर

४१८. विनीत ठाकुरक “शान्ति दूत परवा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) वीर आ शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१९. विनीत ठाकुरक “शान्ति दूत परवा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक विनीत ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२०. विनीत ठाकुरक “शान्ति दूत परवा” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२१. विनीत ठाकुरक “शान्ति दूत परवा”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४२२. विनीत ठाकुरक “शान्ति दूत परवा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२३. खण्ड 1717क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) विनीत ठाकुरक “शान्ति दूत परवा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ वीर; शान्ति-दूत रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1718 : विदेह-सदेह 7 — इन्द्रकान्त झा: गीत १-२

४२४. इन्द्रकान्त झाक “गीत १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) गीत १-२

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२५. इन्द्रकान्त झाक “गीत १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२६. इन्द्रकान्त झाक “गीत १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) गीत

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२७. इन्द्रकान्त झाक “गीत १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शृंगार

४२८. इन्द्रकान्त झाक “गीत १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२९. इन्द्रकान्त झाक “गीत १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक इन्द्रकान्त झा, विधा पद्य, उप-विधा गीत

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३०. इन्द्रकान्त झाक “गीत १-२” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३१. इन्द्रकान्त झाक “गीत १-२”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४३२. इन्द्रकान्त झाक “गीत १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३३. खण्ड 1718क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) इन्द्रकान्त झाक “गीत १-२” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “शृंगार; गीतात्मक परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1719 : विदेह-सदेह 7 — मनोज कुमार मंडल: जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी...

४३४. मनोज कुमार मंडलक “जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी चरित्र (आ अन्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी चरित्र (आ अन्य)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३५. मनोज कुमार मंडलक “जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी चरित्र (आ अन्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३६. मनोज कुमार मंडलक “जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी चरित्र (आ अन्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३७. मनोज कुमार मंडलक “जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी चरित्र (आ अन्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण आ हास्य आ वीर

४३८. मनोज कुमार मंडलक “जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी चरित्र (आ अन्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ वीर आ हास्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३९. मनोज कुमार मंडलक “जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी चरित्र (आ अन्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मनोज कुमार मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४०. मनोज कुमार मंडलक “जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी चरित्र (आ अन्य)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४१. मनोज कुमार मंडलक “जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी चरित्र (आ अन्य)”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४४२. मनोज कुमार मंडलक “जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी चरित्र (आ अन्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४३. खण्ड 1719क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मनोज कुमार मंडलक “जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी चरित्र (आ अन्य)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ हास्य आ वीर; ‘बेटी’मे नारीवादी स्वर; मिथिला-पहचान; फैशन-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1720 : विदेह-सदेह 7 — डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्मा: हमर गाम

४४४. डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्माक “हमर गाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) हमर गाम

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४५. डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्माक “हमर गाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४६. डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्माक “हमर गाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) दम्पति कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४७. डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्माक “हमर गाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) दम्पति-लेखन परम्परा

४४८. डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्माक “हमर गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ वात्सल्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४९. डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्माक “हमर गाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्मा, विधा पद्य, उप-विधा दम्पति कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५०. डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्माक “हमर गाम” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५१. डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्माक “हमर गाम”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ दम्पति कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४५२. डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्माक “हमर गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५३. खण्ड 1720क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्माक “हमर गाम” प्रविष्टि पद्य, दम्पति कविता आ “दम्पति-लेखन परम्परा; शान्त आ वात्सल्य; संयुक्त लेखकीयता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1721 : विदेह-सदेह 7 — रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर': गजल / गीत

४५४. रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “गजल / गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) गजल / गीत

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५५. रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “गजल / गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५६. रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “गजल / गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) गजल आ गीत

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५७. रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “गजल / गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन्म: १९५१

४५८. रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “गजल / गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) जन्म: १९५१

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५९. रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “गजल / गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर', विधा पद्य, उप-विधा गजल आ गीत

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६०. रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “गजल / गीत” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६१. रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “गजल / गीत”कैँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ गजल आ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४६२. रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “गजल / गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६३. खण्ड 1721क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क “गजल / गीत” प्रविष्टि पद्य, गजल आ गीत आ “जन्म: १९५१; विदेह-सहभागिता; लोक-आधुनिक सेतु” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1722 : विदेह-सदेह 7 — कामिनी कामायनी: वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन

४६४. कामिनी कामायनीक “वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६५. कामिनी कामायनीक “वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६६. कामिनी कामायनीक “वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६७. कामिनी कामायनीक “वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) नारी कवि

४६८. कामिनी कामायनीक “वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार आ बीभत्स

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६९. कामिनी कामायनीक “वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक कामिनी कामायनी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७०. कामिनी कामायनीक “वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७१. कामिनी कामायनीक “वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४७२. कामिनी कामायनीक “वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७३. खण्ड 1722क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) कामिनी कामायनीक “वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी कवि; श्रृंगार आ बीभत्स; स्पिवाकक वस्तुकरण-दृष्टि; बाजार-आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1723 : विदेह-सदेह 7 — बेचन ठाकुर: गीत

४७४. बेचन ठाकुरक “गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) गीत

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७५. बेचन ठाकुरक “गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७६. बेचन ठाकुरक “गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) गीत

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७७. बेचन ठाकुरक “गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) भिखारी ठाकुर परम्परा

४७८. बेचन ठाकुरक “गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) भिखारी ठाकुर परम्परा

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७९. बेचन ठाकुरक “गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक बेचन ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गीत

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८०. बेचन ठाकुरक “गीत” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८१. बेचन ठाकुरक “गीत”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४८२. बेचन ठाकुरक “गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८३. खण्ड 1723क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) बेचन ठाकुरक “गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “भिखारी ठाकुर परम्परा; लोक-संवेदना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1724 : विदेह-सदेह 7 — रमण कुमार सिंह: दिल्लीमे...

४८४. रमण कुमार सिंहक “दिल्लीमे...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) दिल्लीमे...

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८५. रमण कुमार सिंहक “दिल्लीमे...”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८६. रमण कुमार सिंहक “दिल्लीमे...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८७. रमण कुमार सिंहक “दिल्लीमे...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण आ व्यंग्य

४८८. रमण कुमार सिंहक “दिल्लीमे...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ व्यंग्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८९. रमण कुमार सिंहक “दिल्लीमे...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक रमण कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९०. रमण कुमार सिंहक “दिल्लीमे...” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९१. रमण कुमार सिंहक “दिल्लीमे...”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४९२. रमण कुमार सिंहक “दिल्लीमे...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९३. खण्ड 1724क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रमण कुमार सिंहक “दिल्लीमे...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ व्यंग्य; बुर्दियो-दृष्टिसँ दिल्ली-क्षेत्र; प्रवासी अलगाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1725 : विदेह-सदेह 7 — विज्ञानन्द झा 'विदू': हमर मिथिला / दहेज

४९४. विज्ञानन्द झा 'विदू'क “हमर मिथिला / दहेज” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) हमर मिथिला / दहेज

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९५. विज्ञानन्द झा 'विदू'क “हमर मिथिला / दहेज”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९६. विज्ञानन्द झा 'विदू'क “हमर मिथिला / दहेज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९७. विज्ञानन्द झा 'विदू'क “हमर मिथिला / दहेज” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) विदेह भाषा-सम्पादक

४९८. विज्ञानन्द झा 'विदू'क “हमर मिथिला / दहेज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) वीर आ रौद्र

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९९. विज्ञानन्द झा 'विदू'क “हमर मिथिला / दहेज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक विज्ञानन्द झा 'विदू', विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५००. विज्ञानन्द झा 'विदू'क “हमर मिथिला / दहेज” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०१. विज्ञानन्द झा 'विदू'क “हमर मिथिला / दहेज”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५०२. विज्ञानन्द झा 'विदू'क “हमर मिथिला / दहेज” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०३. खण्ड 1725क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) विज्ञानन्द झा 'विदू'क “हमर मिथिला / दहेज” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विदेह भाषा-सम्पादक; वीर आ रौद्र; दहेज-विरोध आ मिथिला-पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1726 : विदेह-सदेह 7 — इन्दु भूषण कुमार: सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साह...

५०४. इन्दु भूषण कुमारक “सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साहस (आ अन्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साहस (आ अन्य)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०५. इन्दु भूषण कुमारक “सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साहस (आ अन्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०६. इन्दु भूषण कुमारक “सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साहस (आ अन्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०७. इन्दु भूषण कुमारक “सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साहस (आ अन्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) वीर आ करुण आ व्यंग्य

५०८. इन्दु भूषण कुमारक “सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साहस (आ अन्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ वीर आ व्यंग्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०९. इन्दु भूषण कुमारक “सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साहस (आ अन्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक इन्दु भूषण कुमार, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१०. इन्दु भूषण कुमारक “सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साहस (आ अन्य)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५११. इन्दु भूषण कुमारक “सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साहस (आ अन्य)”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५१२. इन्दु भूषण कुमारक “सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साहस (आ अन्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१३. खण्ड 1726क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) इन्दु भूषण कुमारक “सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साहस (आ अन्य)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर आ करुण आ व्यंग्य; सफलता-विषयक विडम्बना; नगर-जीवन; साहस-विषय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1727 : विदेह-सदेह 7 — विवेकानन्द झा: नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चा...

५१४. विवेकानन्द झाक “नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी / हाइकू-शेनयू (आ ३० आ कविता)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी / हाइकू-शेनयू (आ ३० आ कविता)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१५. विवेकानन्द झाक “नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी / हाइकू-शेनयू (आ ३० आ कविता)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१६. विवेकानन्द झाक “नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी / हाइकू-शेनयू (आ ३० आ कविता)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता / हाइकू

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१७. विवेकानन्द झाक “नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी / हाइकू-शेनयू (आ ३० आ कविता)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) बहुत अधिक सृजनशील

५१८. विवेकानन्द झाक “नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी / हाइकू-शेनयू (आ ३० आ कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ शृंगार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१९. विवेकानन्द झाक “नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी / हाइकू-शेनयू (आ ३० आ कविता)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक विवेकानन्द झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता / हाइकू

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२०. विवेकानन्द झाक “नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी / हाइकू-शेनयू (आ ३० आ कविता)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२१. विवेकानन्द झाक “नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी / हाइकू-शेनयू (आ ३० आ कविता)”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविता / हाइकूक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५२२. विवेकानन्द झाक “नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी / हाइकू-शेनयू (आ ३० आ कविता)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२३. खण्ड 1727क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) विवेकानन्द झाक “नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी / हाइकू-शेनयू (आ ३० आ कविता)” प्रविष्टि पद्य, कविता / हाइकू आ “बहुत अधिक सृजनशील; शृंगार आ करुण आ अस्तित्वगत; कामू-संदर्भित आत्महत्या-कविता; हाइडेगरक प्रामाणिकता-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1728 : विदेह-सदेह 7 — रोशन झा: किछु हाइकू / गजल

५२४. रोशन झाक “किछु हाइकू / गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) किछु हाइकू / गजल

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२५. रोशन झाक “किछु हाइकू / गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२६. रोशन झाक “किछु हाइकू / गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) हाइकू आ गजल

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२७. रोशन झाक “किछु हाइकू / गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त आ शृंगार-वियोग

५२८. रोशन झाक “किछु हाइकू / गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार आ शान्त आ वियोग

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२९. रोशन झाक “किछु हाइकू / गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक रोशन झा, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू आ गजल

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३०. रोशन झाक “किछु हाइकू / गजल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३१. रोशन झाक “किछु हाइकू / गजल”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ हाइकू आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५३२. रोशन झाक “किछु हाइकू / गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३३. खण्ड 1728क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रोशन झाक “किछु हाइकू / गजल” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ गजल आ “शान्त आ शृंगार-वियोग; सूक्ष्मतावाद आ गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1729 : विदेह-सदेह 7 — प्रबीण चौधरी 'तीक': किछु हाइकू-क्षणिका / गजल

५३४. प्रबीण चौधरी 'तीक'क “किछु हाइकू-क्षणिका / गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) किछु हाइकू-क्षणिका / गजल

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३५. प्रबीण चौधरी 'तीक'क “किछु हाइकू-क्षणिका / गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३६. प्रबीण चौधरी 'तीक'क “किछु हाइकू-क्षणिका / गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) हाइकू आ गजल

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३७. प्रबीण चौधरी 'तीक'क “किछु हाइकू-क्षणिका / गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त आ शृंगार

५३८. प्रबीण चौधरी 'तीक'क “किछु हाइकू-क्षणिका / गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार आ शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३९. प्रबीण चौधरी 'तीक'क “किछु हाइकू-क्षणिका / गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक प्रबीण चौधरी 'तीक', विधा पद्य, उप-विधा हाइकू आ गजल

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४०. प्रबीण चौधरी 'तीक'क “किछु हाइकू-क्षणिका / गजल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४१. प्रबीण चौधरी 'तीक'क “किछु हाइकू-क्षणिका / गजल”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ हाइकू आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५४२. प्रबीण चौधरी 'तीक'क “किछु हाइकू-क्षणिका / गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४३. खण्ड 1729क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) प्रबीण चौधरी 'तीक'क “किछु हाइकू-क्षणिका / गजल” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ गजल आ “शान्त आ शृंगार; झलक-कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1730 : विदेह-सदेह 7 — सुभाष चन्द्र: क्षणिका

५४४. सुभाष चन्द्रक “क्षणिका” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) क्षणिका

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४५. सुभाष चन्द्रक “क्षणिका”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४६. सुभाष चन्द्रक “क्षणिका”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) क्षणिका

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४७. सुभाष चन्द्रक “क्षणिका” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) सूक्ष्मतावादी

५४८. सुभाष चन्द्रक “क्षणिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) सूक्ष्मतावादी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४९. सुभाष चन्द्रक “क्षणिका”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सुभाष चन्द्र, विधा पद्य, उप-विधा क्षणिका

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५०. सुभाष चन्द्रक “क्षणिका” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५१. सुभाष चन्द्रक “क्षणिका”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ क्षणिकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५५२. सुभाष चन्द्रक “क्षणिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५३. खण्ड 1730क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सुभाष चन्द्रक “क्षणिका” प्रविष्टि पद्य, क्षणिका आ “सूक्ष्मतावादी; एक-छवि-प्रधान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1731 : विदेह-सदेह 7 — रवीन्द्र कुमार दास: क्षणिका

५५४. रवीन्द्र कुमार दासक “क्षणिका” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) क्षणिका

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५५. रवीन्द्र कुमार दासक “क्षणिका”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५६. रवीन्द्र कुमार दासक “क्षणिका”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) क्षणिका

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५७. रवीन्द्र कुमार दासक “क्षणिका” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त रस

५५८. रवीन्द्र कुमार दासक “क्षणिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५९. रवीन्द्र कुमार दासक “क्षणिका”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक रवीन्द्र कुमार दास, विधा पद्य, उप-विधा क्षणिका

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६०. रवीन्द्र कुमार दासक “क्षणिका” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६१. रवीन्द्र कुमार दासक “क्षणिका”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ क्षणिकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५६२. रवीन्द्र कुमार दासक “क्षणिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६३. खण्ड 1731क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रवीन्द्र कुमार दासक “क्षणिका” प्रविष्टि पद्य, क्षणिका आ “शान्त रस; शुद्ध अवलोकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1732 : विदेह-सदेह 7 — कुसुम ठाकुर: हाइकू / शेनयू

५६४. कुसुम ठाकुरक “हाइकू / शेनयू” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) हाइकू / शेनयू

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६५. कुसुम ठाकुरक “हाइकू / शेनयू”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६६. कुसुम ठाकुरक “हाइकू / शेनयू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) हाइकू आ शेनयू

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६७. कुसुम ठाकुरक “हाइकू / शेनयू” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) नारी कवि

५६८. कुसुम ठाकुरक “हाइकू / शेनयू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६९. कुसुम ठाकुरक “हाइकू / शेनयू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक कुसुम ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू आ शेनयू

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७०. कुसुम ठाकुरक “हाइकू / शेनयू” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७१. कुसुम ठाकुरक “हाइकू / शेनयू”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ हाइकू आ शेनयूक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५७२. कुसुम ठाकुरक “हाइकू / शेनयू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७३. खण्ड 1732क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) कुसुम ठाकुरक “हाइकू / शेनयू” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ शेनयू आ “नारी कवि; शान्त; प्रकृति-छवि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1733 : विदेह-सदेह 7 — रमाकान्त झा 'सौराठ': घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा /...

५७४. रमाकान्त झा 'सौराठ'क “घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा / खिल रे बदन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा / खिल रे बदन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७५. रमाकान्त झा 'सौराठ'क “घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा / खिल रे बदन”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७६. रमाकान्त झा 'सौराठ'क “घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा / खिल रे बदन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता / गीत

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७७. रमाकान्त झा 'सौराठ'क “घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा / खिल रे बदन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण आ शृंगार

५७८. रमाकान्त झा 'सौराठ'क “घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा / खिल रे बदन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ शृंगार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७९. रमाकान्त झा 'सौराठ'क “घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा / खिल रे बदन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक रमाकान्त झा 'सौराठ', विधा पद्य, उप-विधा कविता / गीत

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८०. रमाकान्त झा 'सौराठ'क “घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा / खिल रे बदन” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८१. रमाकान्त झा 'सौराठ'क “घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा / खिल रे बदन”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविता / गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५८२. रमाकान्त झा 'सौराठ'क “घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा / खिल रे बदन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८३. खण्ड 1733क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रमाकान्त झा 'सौराठ'क “घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा / खिल रे बदन” प्रविष्टि पद्य, कविता / गीत आ “करुण आ शृंगार; टूटल घरक रूपक; प्रकृति-गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1734 : विदेह-सदेह 7 — मृदुला प्रधान: एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल ग...

५८४. मृदुला प्रधानक “एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल गणतन्त्र-दिवस / यमुनाजी / अन्तिम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल गणतन्त्र-दिवस / यमुनाजी / अन्तिम

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८५. मृदुला प्रधानक “एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल गणतन्त्र-दिवस / यमुनाजी / अन्तिम”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८६. मृदुला प्रधानक “एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल गणतन्त्र-दिवस / यमुनाजी / अन्तिम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८७. मृदुला प्रधानक “एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल गणतन्त्र-दिवस / यमुनाजी / अन्तिम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) नारी कवि

५८८. मृदुला प्रधानक “एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल गणतन्त्र-दिवस / यमुनाजी / अन्तिम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ वीर आ व्यंग्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८९. मृदुला प्रधानक “एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल गणतन्त्र-दिवस / यमुनाजी / अन्तिम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मृदुला प्रधान, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९०. मृदुला प्रधानक “एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल गणतन्त्र-दिवस / यमुनाजी / अन्तिम” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९१. मृदुला प्रधानक “एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल गणतन्त्र-दिवस / यमुनाजी / अन्तिम”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५९२. मृदुला प्रधानक “एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल गणतन्त्र-दिवस / यमुनाजी / अन्तिम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९३. खण्ड 1734क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मृदुला प्रधानक “एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल गणतन्त्र-दिवस / यमुनाजी / अन्तिम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी कवि; करुण आ व्यंग्य आ वीर; गणतन्त्र-दिवस शोकगीत; यमुना-पर्यावरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1735 : विदेह-सदेह 7 — प्रवीण कश्यप: आच्छादन

५९४. प्रवीण कश्यपक “आच्छादन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) आच्छादन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९५. प्रवीण कश्यपक “आच्छादन”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९६. प्रवीण कश्यपक “आच्छादन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९७. प्रवीण कश्यपक “आच्छादन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त

५९८. प्रवीण कश्यपक “आच्छादन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९९. प्रवीण कश्यपक “आच्छादन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक प्रवीण कश्यप, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६००. प्रवीण कश्यपक “आच्छादन” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०१. प्रवीण कश्यपक “आच्छादन”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६०२. प्रवीण कश्यपक “आच्छादन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०३. खण्ड 1735क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) प्रवीण कश्यपक “आच्छादन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त; आच्छादन-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1736 : विदेह-सदेह 7 — अरविन्द ठाकुर: आजाद गजल १-२

६०४. अरविन्द ठाकुरक “आजाद गजल १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) आजाद गजल १-२

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०५. अरविन्द ठाकुरक “आजाद गजल १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०६. अरविन्द ठाकुरक “आजाद गजल १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) आजाद गजल

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०७. अरविन्द ठाकुरक “आजाद गजल १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) विदेह गजल-आन्दोलन

६०८. अरविन्द ठाकुरक “आजाद गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) वियोग

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०९. अरविन्द ठाकुरक “आजाद गजल १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक अरविन्द ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा आजाद गजल

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१०. अरविन्द ठाकुरक “आजाद गजल १-२” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६११. अरविन्द ठाकुरक “आजाद गजल १-२”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ आजाद गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६१२. अरविन्द ठाकुरक “आजाद गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१३. खण्ड 1736क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) अरविन्द ठाकुरक “आजाद गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, आजाद गजल आ “विदेह गजल-आन्दोलन; वियोग आ राजनीतिक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1737 : विदेह-सदेह 7 — धीरेश्वर कुमार: हमर गाम

६१४. धीरेश्वर कुमारक “हमर गाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) हमर गाम

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१५. धीरेश्वर कुमारक “हमर गाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१६. धीरेश्वर कुमारक “हमर गाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१७. धीरेश्वर कुमारक “हमर गाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त आ वात्सल्य

६१८. धीरेश्वर कुमारक “हमर गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ वात्सल्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१९. धीरेश्वर कुमारक “हमर गाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक धीरेश्वर कुमार, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२०. धीरेश्वर कुमारक “हमर गाम” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२१. धीरेश्वर कुमारक “हमर गाम”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६२२. धीरेश्वर कुमारक “हमर गाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२३. खण्ड 1737क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) धीरेश्वर कुमारक “हमर गाम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ वात्सल्य; गामक स्मृति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1738 : विदेह-सदेह 7 — अखिलेश कुमार मंडल: ट्रेनक चोरबा

६२४. अखिलेश कुमार मंडलक “ट्रेनक चोरबा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) ट्रेनक चोरबा

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२५. अखिलेश कुमार मंडलक “ट्रेनक चोरबा”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२६. अखिलेश कुमार मंडलक “ट्रेनक चोरबा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२७. अखिलेश कुमार मंडलक “ट्रेनक चोरबा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य आ व्यंग्य

६२८. अखिलेश कुमार मंडलक “ट्रेनक चोरबा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) हास्य आ व्यंग्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२९. अखिलेश कुमार मंडलक “ट्रेनक चोरबा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक अखिलेश कुमार मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३०. अखिलेश कुमार मंडलक “ट्रेनक चोरबा” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३१. अखिलेश कुमार मंडलक “ट्रेनक चोरबा”कैँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६३२. अखिलेश कुमार मंडलक “ट्रेनक चोरबा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३३. खण्ड 1738क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) अखिलेश कुमार मंडलक “ट्रेनक चोरबा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ व्यंग्य; ट्रेन-चोर प्रसंग; काफ्काक विसंगति-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1739 : विदेह-सदेह 7 — कालीनाथ झा: अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोक...

६३४. कालीनाथ झाक “अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोकिलक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोकिलक

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३५. कालीनाथ झाक “अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोकिलक”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३६. कालीनाथ झाक “अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोकिलक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कुण्डलिया आ कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३७. कालीनाथ झाक “अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोकिलक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन्म: 24.06.1946

६३८. कालीनाथ झाक “अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोकिलक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) जन्म: 24.06.1946

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३९. कालीनाथ झाक “अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोकिलक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक कालीनाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कुण्डलिया आ कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४०. कालीनाथ झाक “अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोकिलक” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४१. कालीनाथ झाक “अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोकिलक”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कुण्डलिया आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६४२. कालीनाथ झाक “अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोकिलक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४३. खण्ड 1739क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) कालीनाथ झाक “अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोकिलक” प्रविष्टि पद्य, कुण्डलिया आ कविता आ “जन्म: 24.06.1946; कानपुर; शास्त्रीय कुण्डलिया-रूप; बापक शापक विषय; नव्य-न्याय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1740 : विदेह-सदेह 7 — सत्यानन्द पाठक: आह! जाड़ चलि गेल!

६४४. सत्यानन्द पाठकक “आह! जाड़ चलि गेल!” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) आह! जाड़ चलि गेल!

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४५. सत्यानन्द पाठकक “आह! जाड़ चलि गेल!”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४६. सत्यानन्द पाठकक “आह! जाड़ चलि गेल!”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४७. सत्यानन्द पाठकक “आह! जाड़ चलि गेल!” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य आ शान्त

६४८. सत्यानन्द पाठकक “आह! जाड़ चलि गेल!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ हास्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४९. सत्यानन्द पाठकक “आह! जाड़ चलि गेल!”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सत्यानन्द पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५०. सत्यानन्द पाठकक “आह! जाड़ चलि गेल!” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५१. सत्यानन्द पाठकक “आह! जाड़ चलि गेल!”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६५२. सत्यानन्द पाठकक “आह! जाड़ चलि गेल!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५३. खण्ड 1740क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सत्यानन्द पाठकक “आह! जाड़ चलि गेल!” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ शान्त; जाड़-बिदाइ; ऋतुजन्य हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1741 : विदेह-सदेह 7 — दयाकान्त: मैथिल

६५४. दयाकान्तक “मैथिल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) मैथिल

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५५. दयाकान्तक “मैथिल”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५६. दयाकान्तक “मैथिल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५७. दयाकान्तक “मैथिल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) वीर आ शान्त

६५८. दयाकान्तक “मैथिल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) वीर आ शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५९. दयाकान्तक “मैथिल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक दयाकान्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६०. दयाकान्तक “मैथिल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६१. दयाकान्तक “मैथिल”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६६२. दयाकान्तक “मैथिल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६३. खण्ड 1741क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) दयाकान्तक “मैथिल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर आ शान्त; मैथिली-पहचानक समर्थन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1742 : विदेह-सदेह 7 — रमेश: गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत

६६४. रमेशक “गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६५. रमेशक “गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६६. रमेशक “गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) गद्य कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६७. रमेशक “गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) गद्य-कविता

६६८. रमेशक “गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) गद्य-कविता

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६९. रमेशक “गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक रमेश, विधा पद्य, उप-विधा गद्य कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७०. रमेशक “गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७१. रमेशक “गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ गद्य कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६७२. रमेशक “गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७३. खण्ड 1742क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रमेशक “गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत” प्रविष्टि पद्य, गद्य कविता आ “गद्य-कविता; दार्शनिक अद्वैत-दृष्टि; अद्वैत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1743 : विदेह-सदेह 7 — शिवशंकर सिंह ठाकुर: बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावना...

६७४. शिवशंकर सिंह ठाकुरक “बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावनाञ्जलि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावनाञ्जलि

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७५. शिवशंकर सिंह ठाकुरक “बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावनाञ्जलि”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७६. शिवशंकर सिंह ठाकुरक “बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावनाञ्जलि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) बाइ आ गजल आ कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७७. शिवशंकर सिंह ठाकुरक “बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावनाञ्जलि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शृंगार आ करुण

६७८. शिवशंकर सिंह ठाकुरक “बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावनाञ्जलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ शृंगार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७९. शिवशंकर सिंह ठाकुरक “बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावनाञ्जलि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक शिवशंकर सिंह ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा बाइ आ गजल आ कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८०. शिवशंकर सिंह ठाकुरक “बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावनाञ्जलि” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८१. शिवशंकर सिंह ठाकुरक “बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावनाञ्जलि”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ बाइ आ गजल आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६८२. शिवशंकर सिंह ठाकुरक “बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावनाञ्जलि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८३. खण्ड 1743क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) शिवशंकर सिंह ठाकुरक “बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावनाञ्जलि” प्रविष्टि पद्य, बाइ आ गजल आ कविता आ “शृंगार आ करुण; बाइ-रूप; सोनाक उपमा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1744 : विदेह-सदेह 7 — इरा मल्लिक: भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टन...

६८४. इरा मल्लिकक "भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टनका / जीवन" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टनका / जीवन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८५. इरा मल्लिकक "भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टनका / जीवन"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८६. इरा मल्लिकक "भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टनका / जीवन"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता आ हाइकू

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८७. इरा मल्लिकक "भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टनका / जीवन" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) नारी कवि

६८८. इरा मल्लिकक "भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टनका / जीवन" प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८९. इरा मल्लिकक "भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टनका / जीवन"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक इरा मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा कविता आ हाइकू

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९०. इरा मल्लिकक "भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टनका / जीवन" रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९१. इरा मल्लिकक “भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टनका / जीवन”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविता आ हाइकूक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६९२. इरा मल्लिकक “भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टनका / जीवन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९३. खण्ड 1744क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) इरा मल्लिकक “भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टनका / जीवन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ हाइकू आ “नारी कवि; करुण आ शान्त; निद्राहीन राति; बहुरूपी शिल्प” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1745 : विदेह-सदेह 7 — विनीता झा: हम छी बुद्धिक थोड़

६९४. विनीता झाक “हम छी बुद्धिक थोड़” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) हम छी बुद्धिक थोड़

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९५. विनीता झाक “हम छी बुद्धिक थोड़”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९६. विनीता झाक “हम छी बुद्धिक थोड़”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९७. विनीता झाक “हम छी बुद्धिक थोड़” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य आ शान्त

६९८. विनीता झाक “हम छी बुद्धिक थोड़” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ हास्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९९. विनीता झाक “हम छी बुद्धिक थोड़”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक विनीता झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७००. विनीता झाक “हम छी बुद्धिक थोड़” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०१. विनीता झाक “हम छी बुद्धिक थोड़”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७०२. विनीता झाक “हम छी बुद्धिक थोड़” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०३. खण्ड 1745क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) विनीता झाक “हम छी बुद्धिक थोड़” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ शान्त; अपने बुद्धि पर विनम्र हास्यात्मक विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1746 : विदेह-सदेह 7 — अन्य कुमार चौधरी: वाणिक लैस

७०४. अन्य कुमार चौधरीक “वाणिक लैस” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) वाणिक लैस

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०५. अन्य कुमार चौधरीक “वाणिक लैस”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०६. अन्य कुमार चौधरीक “वाणिक लैस”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०७. अन्य कुमार चौधरीक “वाणिक लैस” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) वीर

७०८. अन्य कुमार चौधरीक “वाणिक लैस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) वीर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०९. अन्य कुमार चौधरीक “वाणिक लैस”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक अन्य कुमार चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१०. अन्य कुमार चौधरीक “वाणिक लैस” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७११. अन्य कुमार चौधरीक “वाणिक लैस”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७१२. अन्य कुमार चौधरीक “वाणिक लैस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१३. खण्ड 1746क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) अन्य कुमार चौधरीक “वाणिक लैस” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर; शस्त्रवत् वाणी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1747 : विदेह-सदेह 7 — जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल': गजल १-१२

७१४. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “गजल १-१२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) गजल १-१२

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१५. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “गजल १-१२”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१६. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “गजल १-१२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) गजल

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१७. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “गजल १-१२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) विदेह गजल-आन्दोलनक आधार-स्तम्भ

७१८. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “गजल १-१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार आ वियोग

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१९. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “गजल १-१२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा पद्य, उप-विधा गजल

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२०. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “गजल १-१२” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२१. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “गजल १-१२”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७२२. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “गजल १-१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२३. खण्ड 1747क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “गजल १-१२” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “विदेह गजल-आन्दोलनक आधार-स्तम्भ; शृंगार आ वियोग आ दार्शनिक; बाख्तिनक संवादवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1748 : विदेह-सदेह 7 — विकास झा रंजन: नजरि / गजल

७२४. विकास झा रंजनक “नजरि / गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) नजरि / गजल

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२५. विकास झा रंजनक “नजरि / गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२६. विकास झा रंजनक “नजरि / गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता आ गजल

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२७. विकास झा रंजनक “नजरि / गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शृंगार आ वियोग

७२८. विकास झा रंजनक “नजरि / गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार आ वियोग

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२९. विकास झा रंजनक “नजरि / गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक विकास झा रंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता आ गजल

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३०. विकास झा रंजनक “नजरि / गजल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३१. विकास झा रंजनक “नजरि / गजल”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविता आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७३२. विकास झा रंजनक “नजरि / गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३३. खण्ड 1748क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) विकास झा रंजनक “नजरि / गजल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ गजल आ “शृंगार आ वियोग; नजरि-कविता आ गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1749 : विदेह-सदेह 7 — अनिल मल्लिक: गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति

७३४. अनिल मल्लिकक “गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३५. अनिल मल्लिकक “गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३६. अनिल मल्लिकक “गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) गीत आ गजल आ कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३७. अनिल मल्लिकक “गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शृंगार आ वीर

७३८. अनिल मल्लिकक “गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) वीर आ शृंगार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३९. अनिल मल्लिकक “गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक अनिल मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा गीत आ गजल आ कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४०. अनिल मल्लिकक “गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४१. अनिल मल्लिकक “गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ गीत आ गजल आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७४२. अनिल मल्लिकक “गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४३. खण्ड 1749क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) अनिल मल्लिकक “गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति” प्रविष्टि पद्य, गीत आ गजल आ कविता आ “शृंगार आ वीर; स्वीकारोक्ति-कविता; बहुरूपी विस्तार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1750 : विदेह-सदेह 7 — आनन्द झा 'मैथिल': पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी

७४४. आनन्द झा 'मैथिल'क “पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४५. आनन्द झा 'मैथिल'क “पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४६. आनन्द झा 'मैथिल'क “पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४७. आनन्द झा 'मैथिल'क “पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य आ करुण

७४८. आनन्द झा 'मैथिल'क “पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ हास्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४९. आनन्द झा 'मैथिल'क “पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक आनन्द झा 'मैथिल', विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५०. आनन्द झा 'मैथिल'क “पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५१. आनन्द झा 'मैथिल'क “पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७५२. आनन्द झा 'मैथिल'क “पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५३. खण्ड 1750क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) आनन्द झा 'मैथिल'क “पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ करुण; गामक पंचैती-कविता; चिट्ठी-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1751 : विदेह-सदेह 7 — भात राय भट्ट: जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा

७५४. भात राय भट्टक “जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५५. भात राय भट्टक “जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५६. भात राय भट्टक “जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५७. भात राय भट्टक “जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) नेपाल

७५८. भात राय भट्टक “जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) वीर आ भक्ति

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५९. भात राय भट्टक “जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक भात राय भट्ट, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६०. भात राय भट्टक “जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६१. भात राय भट्टक “जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७६२. भात राय भट्टक “जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६३. खण्ड 1751क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) भात राय भट्टक “जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नेपाल; सीताक जन्मभूमि; वीर आ भक्ति; तीर्थयात्रा-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1752 : विदेह-सदेह 7 — अमित मोहन झा: कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार

७६४. अमित मोहन झाक “कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६५. अमित मोहन झाक “कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६६. अमित मोहन झाक “कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६७. अमित मोहन झाक “कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त आ शृंगार

७६८. अमित मोहन झाक “कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार आ शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६९. अमित मोहन झाक “कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक अमित मोहन झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७०. अमित मोहन झाक “कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७१. अमित मोहन झाक “कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७७२. अमित मोहन झाक “कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७३. खण्ड 1752क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) अमित मोहन झाक “कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ शृंगार; जीवन-प्रश्न आ त्योहार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1753 : विदेह-सदेह 7 — गुलसारिका: संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक...

७७४. गुलसारिकाक “संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक जीवनक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक जीवनक

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७५. गुलसारिकाक “संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक जीवनक”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७६. गुलसारिकाक “संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक जीवनक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७७. गुलसारिकाक “संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक जीवनक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) नारी कवि

७७८. गुलसारिकाक “संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक जीवनक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ शृंगार आ शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७९. गुलसारिकाक “संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक जीवनक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक गुलसारिका, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८०. गुलसारिकाक “संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक जीवनक” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८१. गुलसारिकाक “संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक जीवनक”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७८२. गुलसारिकाक “संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक जीवनक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८३. खण्ड 1753क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गुलसारिकाक “संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक जीवनक” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी कवि; शान्त आ करुण आ शृंगार; बहिनक बाल्यकाल-स्मृति; सन्तोष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1754 : विदेह-सदेह 7 — भावना नवीन: आजाद गजल १-४

७८४. भावना नवीनक “आजाद गजल १-४” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) आजाद गजल १-४

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८५. भावना नवीनक “आजाद गजल १-४”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८६. भावना नवीनक “आजाद गजल १-४”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) आजाद गजल

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८७. भावना नवीनक “आजाद गजल १-४” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) नारी गजल

७८८. भावना नवीनक “आजाद गजल १-४” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार आ वियोग

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८९. भावना नवीनक “आजाद गजल १-४”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक भावना नवीन, विधा पद्य, उप-विधा आजाद गजल

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९०. भावना नवीनक “आजाद गजल १-४” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९१. भावना नवीनक “आजाद गजल १-४”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ आजाद गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७९२. भावना नवीनक “आजाद गजल १-४” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९३. खण्ड 1754क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) भावना नवीनक “आजाद गजल १-४” प्रविष्टि पद्य, आजाद गजल आ “नारी गजल; श्रृंगार आ वियोग; गजल-रूपमे स्त्री-स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1755 : विदेह-सदेह 7 — मिहिर झा: बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल /...

७९४. मिहिर झाक “बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल / चक्रव्यूह” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल / चक्रव्यूह

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९५. मिहिर झाक “बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल / चक्रव्यूह”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९६. मिहिर झाक “बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल / चक्रव्यूह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) बहुविध पद्य

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९७. मिहिर झाक “बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल / चक्रव्यूह” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) सम्पादकक अनुसार श्रेष्ठ मैथिली बाइ

७९८. मिहिर झाक “बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल / चक्रव्यूह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) श्रृंगार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९९. मिहिर झाक “बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल / चक्रव्यूह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मिहिर झा, विधा पद्य, उप-विधा बहुविध पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८००. मिहिर झाक “बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल / चक्रव्यूह” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०१. मिहिर झाक “बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल / चक्रव्यूह”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ बहुविध पद्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८०२. मिहिर झाक “बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल / चक्रव्यूह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०३. खण्ड 1755क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मिहिर झाक “बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल / चक्रव्यूह” प्रविष्टि पद्य, बहुविध पद्य आ “सम्पादकक अनुसार श्रेष्ठ मैथिली बाइ; बहुरूपी शिल्प अस्पष्ट-विदेशी-शब्द; शृंगार आ दार्शनिक; फारसी-अरबी रूप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1756 : विदेह-सदेह 7 — डॉ. शशिधर कुमार: की इएह कहबैछ सुन्दरता?

८०४. डॉ. शशिधर कुमारक “की इएह कहबैछ सुन्दरता?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) की इएह कहबैछ सुन्दरता?

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०५. डॉ. शशिधर कुमारक “की इएह कहबैछ सुन्दरता?”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०६. डॉ. शशिधर कुमारक “की इएह कहबैछ सुन्दरता?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०७. डॉ. शशिधर कुमारक “की इएह कहबैछ सुन्दरता?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) अद्भुत आ व्यंग्य

८०८. डॉ. शशिधर कुमारक “की इएह कहबैछ सुन्दरता?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) अद्भुत आ व्यंग्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०९. डॉ. शशिधर कुमारक “की इएह कहबैछ सुन्दरता?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक डॉ. शशिधर कुमार, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१०. डॉ. शशिधर कुमारक “की इएह कहबैछ सुन्दरता?” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८११. डॉ. शशिधर कुमारक “की इएह कहबैछ सुन्दरता?”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८१२. डॉ. शशिधर कुमारक “की इएह कहबैछ सुन्दरता?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१३. खण्ड 1756क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) डॉ. शशिधर कुमारक “की इएह कहबैछ सुन्दरता?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अद्भुत आ व्यंग्य; सौन्दर्य पर प्रश्न; प्लेटोक सौन्दर्य-सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1757 : विदेह-सदेह 7 — अमरेन्द्र कुमार मिश्र: नेता

८१४. अमरेन्द्र कुमार मिश्रक “नेता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) नेता

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१५. अमरेन्द्र कुमार मिश्रक “नेता”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१६. अमरेन्द्र कुमार मिश्रक “नेता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१७. अमरेन्द्र कुमार मिश्रक “नेता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य आ व्यंग्य

८१८. अमरेन्द्र कुमार मिश्रक “नेता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) हास्य आ व्यंग्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१९. अमरेन्द्र कुमार मिश्रक “नेता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक अमरेन्द्र कुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२०. अमरेन्द्र कुमार मिश्रक “नेता” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२१. अमरेन्द्र कुमार मिश्रक “नेता”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८२२. अमरेन्द्र कुमार मिश्रक “नेता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२३. खण्ड 1757क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) अमरेन्द्र कुमार मिश्रक “नेता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ व्यंग्य; नेता-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1758 : विदेह-सदेह 7 — सुबोध झा: बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ...

८२४. सुबोध झाक “बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ अन्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ अन्य)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२५. सुबोध झाक “बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ अन्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२६. सुबोध झाक “बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ अन्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता आ शाइरी

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२७. सुबोध झाक “बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ अन्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य आ करुण

८२८. सुबोध झाक “बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ अन्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ हास्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२९. सुबोध झाक “बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ अन्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सुबोध झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता आ शाइरी

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३०. सुबोध झाक “बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ अन्य)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३१. सुबोध झाक “बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ अन्य)”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविता आ शाइरीक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८३२. सुबोध झाक “बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ अन्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३३. खण्ड 1758क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सुबोध झाक “बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ अन्य)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ शाइरी आ “हास्य आ करुण; बहुरूपी शिल्प; लोक-संवेदना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1759 : विदेह-सदेह 7 — मो. गुल हसन: सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...

८३४. मो. गुल हसनक “सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३५. मो. गुल हसनक “सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३६. मो. गुल हसनक “सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३७. मो. गुल हसनक “सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मुसलमान मैथिली स्वर

८३८. मो. गुल हसनक “सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ व्यंग्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३९. मो. गुल हसनक “सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मो. गुल हसन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४०. मो. गुल हसनक “सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४१. मो. गुल हसनक “सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८४२. मो. गुल हसनक “सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४३. खण्ड 1759क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मो. गुल हसनक “सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मुसलमान मैथिली स्वर; करुण आ व्यंग्य; बुर्दियो बहुलतावाद; किसान-पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1760 : विदेह-सदेह 7 — प्रीति प्रिया झा: बेटी

८४४. प्रीति प्रिया झाक “बेटी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) बेटी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४५. प्रीति प्रिया झाक “बेटी”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४६. प्रीति प्रिया झाक “बेटी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४७. प्रीति प्रिया झाक “बेटी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) नारी कवि

८४८. प्रीति प्रिया झाक “बेटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ वीर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४९. प्रीति प्रिया झाक “बेटी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक प्रीति प्रिया झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५०. प्रीति प्रिया झाक “बेटी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५१. प्रीति प्रिया झाक “बेटी”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८५२. प्रीति प्रिया झाक “बेटी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५३. खण्ड 1760क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) प्रीति प्रिया झाक “बेटी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी कवि; करुण आ वीर; बेटीक असुरक्षा; नारीवादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1761 : विदेह-सदेह 7 — पवन कुमार साह: प्रेम / गीत १-२

८५४. पवन कुमार साहक “प्रेम / गीत १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) प्रेम / गीत १-२

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५५. पवन कुमार साहक “प्रेम / गीत १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५६. पवन कुमार साहक “प्रेम / गीत १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता आ गीत

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५७. पवन कुमार साहक “प्रेम / गीत १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शृंगार

८५८. पवन कुमार साहक “प्रेम / गीत १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५९. पवन कुमार साहक “प्रेम / गीत १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक पवन कुमार साह, विधा पद्य, उप-विधा कविता आ गीत

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६०. पवन कुमार साहक “प्रेम / गीत १-२” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६१. पवन कुमार साहक “प्रेम / गीत १-२”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविता आ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८६२. पवन कुमार साहक “प्रेम / गीत १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६३. खण्ड 1761क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पवन कुमार साहक “प्रेम / गीत १-२” प्रविष्टि पद्य, कविता आ गीत आ “शृंगार; प्रेम आ गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1762 : विदेह-सदेह 7 — स्तुति नारायण: मन पड़ैत अछि

८६४. स्तुति नारायणक “मन पड़ैत अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) मन पड़ैत अछि

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६५. स्तुति नारायणक “मन पड़ैत अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६६. स्तुति नारायणक “मन पड़ैत अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६७. स्तुति नारायणक “मन पड़ैत अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण आ शान्त

८६८. स्तुति नारायणक “मन पड़ैत अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६९. स्तुति नारायणक “मन पड़ैत अछि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक स्तुति नारायण, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७०. स्तुति नारायणक “मन पड़ैत अछि” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७१. स्तुति नारायणक “मन पड़ैत अछि”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८७२. स्तुति नारायणक “मन पड़ैत अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७३. खण्ड 1762क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) स्तुति नारायणक “मन पड़ैत अछि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शान्त; स्मृति-व्याकुलता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1763 : विदेह-सदेह 7 — स्वाती शाक्यभरी: पिताजी

८७४. स्वाती शाक्यभरीक “पिताजी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) पिताजी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७५. स्वाती शाक्यभरीक “पिताजी”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७६. स्वाती शाक्यभरीक “पिताजी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७७. स्वाती शाक्यभरीक “पिताजी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) वात्सल्य आ करुण

८७८. स्वाती शाक्यभरीक “पिताजी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ भक्ति आ वात्सल्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७९. स्वाती शाक्यभरीक “पिताजी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक स्वाती शाक्यभरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८०. स्वाती शाक्यभरीक “पिताजी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८१. स्वाती शाक्यभरीक “पिताजी”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८८२. स्वाती शाक्यभरीक “पिताजी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८३. खण्ड 1763क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) स्वाती शाक्यभरीक “पिताजी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वात्सल्य आ करुण; पिताक प्रति श्रद्धांजलि; सन्तान-भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1764 : विदेह-सदेह 7 — अरविन्द रंजन दास: क्षणिका

८८४. अरविन्द रंजन दासक “क्षणिका” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) क्षणिका

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८५. अरविन्द रंजन दासक “क्षणिका”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८६. अरविन्द रंजन दासक “क्षणिका”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) क्षणिका

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८७. अरविन्द रंजन दासक “क्षणिका” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) सूक्ष्म अवलोकन

८८८. अरविन्द रंजन दासक “क्षणिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) सूक्ष्म अवलोकन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८९. अरविन्द रंजन दासक “क्षणिका”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक अरविन्द रंजन दास, विधा पद्य, उप-विधा क्षणिका

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९०. अरविन्द रंजन दासक “क्षणिका” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९१. अरविन्द रंजन दासक “क्षणिका”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ क्षणिकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८९२. अरविन्द रंजन दासक “क्षणिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९३. खण्ड 1764क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) अरविन्द रंजन दासक “क्षणिका” प्रविष्टि पद्य, क्षणिका आ “सूक्ष्म अवलोकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1765 : विदेह-सदेह 7 — बि.पि.उदासी: एलै जिबनक आहार

८९४. बि.पि.उदासीक “एलै जिबनक आहार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) एलै जिबनक आहार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९५. बि.पि.उदासीक “एलै जिबनक आहार”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९६. बि.पि.उदासीक “एलै जिबनक आहार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९७. बि.पि.उदासीक “एलै जिबनक आहार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण

८९८. बि.पि.उदासीक “एलै जिबनक आहार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९९. बि.पि.उदासीक “एलै जिबनक आहार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक बि.पि.उदासी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९००. बि.पि.उदासीक “एलै जिबनक आहार” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०१. बि.पि.उदासीक “एलै जिबनक आहार”कैँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९०२. बि.पि.उदासीक “एलै जिबनक आहार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०३. खण्ड 1765क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) बि.पि.उदासीक “एलै जिबनक आहार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1766 : विदेह-सदेह 7 — प्रमोद रंगीले: देखियौ अपन देशमे

९०४. प्रमोद रंगीलेक “देखियौ अपन देशमे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) देखियौ अपन देशमे

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०५. प्रमोद रंगीलेक “देखियौ अपन देशमे”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०६. प्रमोद रंगीलेक “देखियौ अपन देशमे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०७. प्रमोद रंगीलेक “देखियौ अपन देशमे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) व्यंग्य आ रौद्र

९०८. प्रमोद रंगीलेक “देखियौ अपन देशमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) व्यंग्य आ रौद्र

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०९. प्रमोद रंगीलेक “देखियौ अपन देशमे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक प्रमोद रंगीले, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९१०. प्रमोद रंगीलेक “देखियौ अपन देशमे” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९११. प्रमोद रंगीलेक “देखियौ अपन देशमे”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९१२. प्रमोद रंगीलेक “देखियौ अपन देशमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९१३. खण्ड 1766क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) प्रमोद रंगीलेक “देखियौ अपन देशमे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य आ रौद्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1767 : विदेह-सदेह 7 — रवि मिश्र 'भारद्वाज': अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद...

९१४. रवि मिश्र 'भारद्वाज'क “अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद गजल १-५ / नवकी बहुरिया” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद गजल १-५ / नवकी बहुरिया

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९१५. रवि मिश्र 'भारद्वाज'क “अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद गजल १-५ / नवकी बहुरिया”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९१६. रवि मिश्र 'भारद्वाज'क “अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद गजल १-५ / नवकी बहुरिया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता आ गजल

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९१७. रवि मिश्र 'भारद्वाज'क “अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद गजल १-५ / नवकी बहुरिया” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण, व्यंग्य आ शृंगार

९१८. रवि मिश्र 'भारद्वाज'क “अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद गजल १-५ / नवकी बहुरिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण, व्यंग्य आ शृंगार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९१९. रवि मिश्र 'भारद्वाज'क “अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद गजल १-५ / नवकी बहुरिया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक रवि मिश्र 'भारद्वाज', विधा पद्य, उप-विधा कविता आ गजल

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२०. रवि मिश्र 'भारद्वाज'क “अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद गजल १-५ / नवकी बहुरिया” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२१. रवि मिश्र 'भारद्वाज'क “अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद गजल १-५ / नवकी बहुरिया”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविता आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९२२. रवि मिश्र 'भारद्वाज'क “अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद गजल १-५ / नवकी बहुरिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२३. खण्ड 1767क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रवि मिश्र 'भारद्वाज'क “अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद गजल १-५ / नवकी बहुरिया” प्रविष्टि पद्य, कविता आ गजल आ “करुण, व्यंग्य आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1768 : विदेह-सदेह 7 — मधुपनाथ झा: धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए

९२४. मधुपनाथ झाक “धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२५. मधुपनाथ झाक “धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२६. मधुपनाथ झाक “धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२७. मधुपनाथ झाक “धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) पर्यावरणीय

९२८. मधुपनाथ झाक “धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ करुण

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२९. मधुपनाथ झाक “धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मधुपनाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३०. मधुपनाथ झाक “धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३१. मधुपनाथ झाक “धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९३२. मधुपनाथ झाक “धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३३. खण्ड 1768क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मधुपनाथ झाक “धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1769 : विदेह-सदेह 7 — बृषेश चन्द्र लाल: टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना

९३४. बृषेश चन्द्र लालक “टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३५. बृषेश चन्द्र लालक “टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३६. बृषेश चन्द्र लालक “टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) टनका, हाइकू आ कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३७. बृषेश चन्द्र लालक “टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त

९३८. बृषेश चन्द्र लालक “टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३९. बृषेश चन्द्र लालक “टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक बृषेश चन्द्र लाल, विधा पद्य, उप-विधा टनका, हाइकू आ कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९४०. बृषेश चन्द्र लालक “टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९४१. बृषेश चन्द्र लालक “टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ टनका, हाइकू आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९४२. बृषेश चन्द्र लालक “टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९४३. खण्ड 1769क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) बृषेश चन्द्र लालक “टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना” प्रविष्टि पद्य, टनका, हाइकू आ कविता आ “शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1770 : विदेह-सदेह 7 — आशुतोष मिश्र: गीत १-३ / आजाद गजल १-२

९४४. आशुतोष मिश्रक “गीत १-३ / आजाद गजल १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) गीत १-३ / आजाद गजल १-२

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९४५. आशुतोष मिश्रक “गीत १-३ / आजाद गजल १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९४६. आशुतोष मिश्रक “गीत १-३ / आजाद गजल १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) गीत आ गजल

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९४७. आशुतोष मिश्रक “गीत १-३ / आजाद गजल १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शृंगार आ वियोग

९४८. आशुतोष मिश्रक “गीत १-३ / आजाद गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार आ वियोग

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९४९. आशुतोष मिश्रक “गीत १-३ / आजाद गजल १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक आशुतोष मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गीत आ गजल

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९५०. आशुतोष मिश्रक “गीत १-३ / आजाद गजल १-२” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९५१. आशुतोष मिश्रक “गीत १-३ / आजाद गजल १-२”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ गीत आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९५२. आशुतोष मिश्रक “गीत १-३ / आजाद गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९५३. खण्ड 1770क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) आशुतोष मिश्रक “गीत १-३ / आजाद गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, गीत आ गजल आ “शृंगार आ वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1771 : विदेह-सदेह 7 — इन्सिता सारंगी: ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद)

९५४. इन्सिता सारंगीक “ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९५५. इन्सिता सारंगीक “ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९५६. इन्सिता सारंगीक “ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) अनूदित कविता (ओड़िया सँ मैथिली)

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९५७. इन्सिता सारंगीक “ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ओड़िया सँ मैथिली

९५८. इन्सिता सारंगीक “ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) ओड़िया सँ मैथिली

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९५९. इन्सिता सारंगीक “ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक इन्सिता सारंगी, विधा पद्य, उप-विधा अनूदित कविता (ओड़िया सँ मैथिली)

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९६०. इन्सिता सारंगीक “ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९६१. इन्सिता सारंगीक “ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद)”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ अनूदित कविता (ओड़िया सँ मैथिली)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९६२. इन्सिता सारंगीक “ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९६३. खण्ड 1771क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) इन्सिता सारंगीक “ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि पद्य, अनूदित कविता (ओड़िया सँ मैथिली) आ “ओड़िया सँ मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1772 : विदेह-सदेह 7 — मनोज कुमार झा: शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे)

९६४. मनोज कुमार झाक “शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९६५. मनोज कुमार झाक “शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९६६. मनोज कुमार झाक “शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९६७. मनोज कुमार झाक “शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) रौद्र आ वीर

९६८. मनोज कुमार झाक “शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) रौद्र आ वीर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९६९. मनोज कुमार झाक “शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मनोज कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९७०. मनोज कुमार झाक “शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९७१. मनोज कुमार झाक “शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे)”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९७२. मनोज कुमार झाक “शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९७३. खण्ड 1772क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मनोज कुमार झाक “शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रौद्र आ वीर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1773 : विदेह-सदेह 7 — शान्तिलक्ष्मी चौधरी: हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / ग...

९७४. शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / गजल १-६” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / गजल १-६

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९७५. शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / गजल १-६”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९७६. शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / गजल १-६”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) हाइकू, गद्य कविता आ गजल

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९७७. शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / गजल १-६” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) नारी कवि

९७८. शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / गजल १-६” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ शृंगार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९७९. शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / गजल १-६”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक शान्तिलक्ष्मी चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू, गद्य कविता आ गजल

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९८०. शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / गजल १-६” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९८१. शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / गजल १-६”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ हाइकू, गद्य कविता आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९८२. शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / गजल १-६” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९८३. खण्ड 1773क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / गजल १-६” प्रविष्टि पद्य, हाइकू, गद्य कविता आ गजल आ “शान्त आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1774 : विदेह-सदेह 7 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': हाइकू / क्षण भा

९८४. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू / क्षण भा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) हाइकू / क्षण भा

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९८५. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू / क्षण भा”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९८६. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू / क्षण भा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) हाइकू आ कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९८७. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू / क्षण भा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त

९८८. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू / क्षण भा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९८९. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू / क्षण भा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा पद्य, उप-विधा हाइकू आ कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९९०. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू / क्षण भा” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९९१. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू / क्षण भा”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ हाइकू आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९९२. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू / क्षण भा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९९३. खण्ड 1774क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू / क्षण भा” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ कविता आ “शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1775 : विदेह-सदेह 7 — नवीन ठाकुर: अन्त — एक अनुभूति / अनुभव

९९४. नवीन ठाकुरक “अन्त — एक अनुभूति / अनुभव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) अन्त — एक अनुभूति / अनुभव

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९९५. नवीन ठाकुरक “अन्त — एक अनुभूति / अनुभव”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९९६. नवीन ठाकुरक “अन्त — एक अनुभूति / अनुभव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९९७. नवीन ठाकुरक “अन्त — एक अनुभूति / अनुभव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन्म: १५.०५.१९८४

९९८. नवीन ठाकुरक “अन्त — एक अनुभूति / अनुभव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ करुण

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९९९. नवीन ठाकुरक “अन्त — एक अनुभूति / अनुभव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक नवीन ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०००. नवीन ठाकुरक “अन्त — एक अनुभूति / अनुभव” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००१. नवीन ठाकुरक “अन्त — एक अनुभूति / अनुभव”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१००२. नवीन ठाकुरक “अन्त — एक अनुभूति / अनुभव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००३. खण्ड 1775क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नवीन ठाकुरक “अन्त — एक अनुभूति / अनुभव” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1776 : विदेह-सदेह 7 — डॉ. अरुण कुमार सिंह: सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी

१००४. डॉ. अरुण कुमार सिंहक “सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००५. डॉ. अरुण कुमार सिंहक “सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००६. डॉ. अरुण कुमार सिंहक “सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००७. डॉ. अरुण कुमार सिंहक “सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त आ व्यंग्य

१००८. डॉ. अरुण कुमार सिंहक “सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ व्यंग्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००९. डॉ. अरुण कुमार सिंहक “सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१०. डॉ. अरुण कुमार सिंहक “सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०११. डॉ. अरुण कुमार सिंहक “सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०१२. डॉ. अरुण कुमार सिंहक “सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१३. खण्ड 1776क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) डॉ. अरुण कुमार सिंहक “सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1777 : विदेह-सदेह 7 — कुन्दन कुमार: आँखि झूठ नै बजैत अछि

१०१४. कुन्दन कुमारक “आँखि झूठ नै बजैत अछि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) आँखि झूठ नै बजैत अछि

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१५. कुन्दन कुमारक “आँखि झूठ नै बजैत अछि”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१६. कुन्दन कुमारक “आँखि झूठ नै बजैत अछि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१७. कुन्दन कुमारक “आँखि झूठ नै बजैत अछि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त

१०१८. कुन्दन कुमारक “आँखि झूठ नै बजैत अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१९. कुन्दन कुमारक “आँखि झूठ नै बजैत अछि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक कुन्दन कुमार, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२०. कुन्दन कुमारक “आँखि झूठ नै बजैत अछि” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२१. कुन्दन कुमारक “आँखि झूठ नै बजैत अछि”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०२२. कुन्दन कुमारक “आँखि झूठ नै बजैत अछि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२३. खण्ड 1777क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) कुन्दन कुमारक “आँखि झूठ नै बजैत अछि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1778 : विदेह-सदेह 7 — झा हेमन्त बापी: माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / ज...

१०२४. झा हेमन्त बापीक “माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / जेकर नै कएल जाएत बखान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / जेकर नै कएल जाएत बखान

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२५. झा हेमन्त बापीक “माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / जेकर नै कएल जाएत बखान”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२६. झा हेमन्त बापीक “माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / जेकर नै कएल जाएत बखान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२७. झा हेमन्त बापीक “माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / जेकर नै कएल जाएत बखान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण, रौद्र आ शृंगार

१०२८. झा हेमन्त बापीक “माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / जेकर नै कएल जाएत बखान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण, रौद्र आ शृंगार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२९. झा हेमन्त बापीक “माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / जेकर नै कएल जाएत बखान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक झा हेमन्त बापी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३०. झा हेमन्त बापीक “माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / जेकर नै कएल जाएत बखान” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३१. झा हेमन्त बापीक “माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / जेकर नै कएल जाएत बखान”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०३२. झा हेमन्त बापीक “माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / जेकर नै कएल जाएत बखान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३३. खण्ड 1778क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) झा हेमन्त बापीक “माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / जेकर नै कएल जाएत बखान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण, रौद्र आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1779 : विदेह-सदेह 7 — राहुल राही: हमर प्रियतम!

१०३४. राहुल राहीक “हमर प्रियतम!” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) हमर प्रियतम!

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३५. राहुल राहीक “हमर प्रियतम!”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३६. राहुल राहीक “हमर प्रियतम!”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३७. राहुल राहीक “हमर प्रियतम!” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शृंगार

१०३८. राहुल राहीक “हमर प्रियतम!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३९. राहुल राहीक “हमर प्रियतम!”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक राहुल राही, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४०. राहुल राहीक “हमर प्रियतम!” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४१. राहुल राहीक “हमर प्रियतम!”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०४२. राहुल राहीक “हमर प्रियतम!” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४३. खण्ड 1779क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) राहुल राहीक “हमर प्रियतम!” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1780 : विदेह-सदेह 7 — जवाहर लाल कश्यप: खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना...

१०४४. जवाहर लाल कश्यपक “खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना जी चुप / काटि लिअ कोना दुनू पखिया / हम पुछिलियिन के छी बाबू?” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना जी चुप / काटि लिअ कोना दुनू पखिया / हम पुछिलियिन के छी बाबू?

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४५. जवाहर लाल कश्यपक “खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना जी चुप / काटि लिअ कोना दुनू पखिया / हम पुछिलियिन के छी बाबू?”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४६. जवाहर लाल कश्यपक “खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना जी चुप / काटि लिअ कोना दुनू पखिया / हम पुछिलियिन के छी बाबू?”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४७. जवाहर लाल कश्यपक “खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना जी चुप / काटि लिअ कोना दुनू पखिया / हम पुछिलियिन के छी बाबू?” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण, वीर आ व्यंग्य

१०४८. जवाहर लाल कश्यपक “खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना जी चुप / काटि लिअ कोना दुनू पखिया / हम पुछिलियिन के छी बाबू?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण, वीर आ व्यंग्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४९. जवाहर लाल कश्यपक “खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना जी चुप / काटि लिअ कोना दुनू पखिया / हम पुछिलियिन के छी बाबू?”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक जवाहर लाल कश्यप, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५०. जवाहर लाल कश्यपक “खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना जी चुप / काटि लिअ कोना दुनू पखिया / हम पुछिलियिन के छी बाबू?” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५१. जवाहर लाल कश्यपक “खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना जी चुप / काटि लिअ कोना दुनू पखिया / हम पुछिलियिन के छी बाबू?”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०५२. जवाहर लाल कश्यपक “खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना जी चुप / काटि लिअ कोना दुनू पखिया / हम पुछिलियिन के छी बाबू?” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५३. खण्ड 1780क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) जवाहर लाल कश्यपक “खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना जी चुप / काटि लिअ कोना दुनू पखिया / हम पुछिलियिन के छी बाबू?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण, वीर आ व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1781 : विदेह-सदेह 7 — अच्छेलाल शास्त्री: की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य

१०५४. अच्छेलाल शास्त्रीक “की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५५. अच्छेलाल शास्त्रीक “की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५६. अच्छेलाल शास्त्रीक “की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५७. अच्छेलाल शास्त्रीक “की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) व्यंग्य आ करुण

१०५८. अच्छेलाल शास्त्रीक “की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) व्यंग्य आ करुण

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५९. अच्छेलाल शास्त्रीक “की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक अच्छेलाल शास्त्री, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६०. अच्छेलाल शास्त्रीक “की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६१. अच्छेलाल शास्त्रीक “की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०६२. अच्छेलाल शास्त्रीक “की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६३. खण्ड 1781क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) अच्छेलाल शास्त्रीक “की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य आ करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1782 : विदेह-सदेह 7 — सत्यनारायण झा: पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर त...

१०६४. सत्यनारायण झाक “पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर तकइत छी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर तकइत छी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६५. सत्यनारायण झाक “पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर तकइत छी”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६६. सत्यनारायण झाक “पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर तकइत छी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६७. सत्यनारायण झाक “पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर तकइत छी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त

१०६८. सत्यनारायण झाक “पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर तकइत छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६९. सत्यनारायण झाक “पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर तकइत छी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सत्यनारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७०. सत्यनारायण झाक “पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर तकइत छी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७१. सत्यनारायण झाक “पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर तकइत छी”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०७२. सत्यनारायण झाक “पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर तकइत छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७३. खण्ड 1782क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सत्यनारायण झाक “पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर तकइत छी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1783 : विदेह-सदेह 7 — शिवशंकर श्रीनिवास: गीत १-२

१०७४. शिवशंकर श्रीनिवासक “गीत १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) गीत १-२

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७५. शिवशंकर श्रीनिवासक “गीत १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७६. शिवशंकर श्रीनिवासक “गीत १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) गीत

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७७. शिवशंकर श्रीनिवासक “गीत १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शृंगार आ शान्त

१०७८. शिवशंकर श्रीनिवासक “गीत १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार आ शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७९. शिवशंकर श्रीनिवासक “गीत १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक शिवशंकर श्रीनिवास, विधा पद्य, उप-विधा गीत

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८०. शिवशंकर श्रीनिवासक “गीत १-२” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८१. शिवशंकर श्रीनिवासक “गीत १-२”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०८२. शिवशंकर श्रीनिवासक “गीत १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८३. खण्ड 1783क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) शिवशंकर श्रीनिवासक “गीत १-२” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “शृंगार आ शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1784 : विदेह-सदेह 7 — विनीत उत्पल: राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल...

१०८४. विनीत उत्पलक “राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल १-२

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८५. विनीत उत्पलक “राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८६. विनीत उत्पलक “राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता आ गजल

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८७. विनीत उत्पलक “राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) विदेह अनुवाद सम्पादक

१०८८. विनीत उत्पलक “राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) व्यंग्य, करुण आ शृंगार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८९. विनीत उत्पलक “राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक विनीत उत्पल, विधा पद्य, उप-विधा कविता आ गजल

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९०. विनीत उत्पलक “राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल १-२” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९१. विनीत उत्पलक “राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल १-२”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविता आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०९२. विनीत उत्पलक “राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९३. खण्ड 1784क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) विनीत उत्पलक “राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, कविता आ गजल आ “व्यंग्य, करुण आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1785 : विदेह-सदेह 7 — नित्या प्रियदर्शिनी: मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँ...

१०९४. नित्या प्रियदर्शिनीक “मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँखिमे नै मनमे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँखिमे नै मनमे

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९५. नित्या प्रियदर्शिनीक “मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँखिमे नै मनमे”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९६. नित्या प्रियदर्शिनीक “मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँखिमे नै मनमे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९७. नित्या प्रियदर्शिनीक “मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँखिमे नै मनमे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) नारी कवि

१०९८. नित्या प्रियदर्शिनीक “मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँखिमे नै मनमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) अद्भुत आ करुण

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९९. नित्या प्रियदर्शिनीक “मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँखिमे नै मनमे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक नित्या प्रियदर्शिनी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११००. नित्या प्रियदर्शिनीक “मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँखिमे नै मनमे” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०१. नित्या प्रियदर्शिनीक “मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँखिमे नै मनमे”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११०२. नित्या प्रियदर्शिनीक “मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँखिमे नै मनमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०३. खण्ड 1785क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नित्या प्रियदर्शिनीक “मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँखिमे नै मनमे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अद्भुत आ करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1786 : विदेह-सदेह 7 — नारायण झा: सरकार / जाड़

११०४. नारायण झाक “सरकार / जाड़” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) सरकार / जाड़

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०५. नारायण झाक “सरकार / जाड़”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०६. नारायण झाक “सरकार / जाड़”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०७. नारायण झाक “सरकार / जाड़” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) व्यंग्य आ शान्त

११०८. नारायण झाक “सरकार / जाड़” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) व्यंग्य आ शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०९. नारायण झाक “सरकार / जाड़”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक नारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११०. नारायण झाक “सरकार / जाड़” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११११. नारायण झाक “सरकार / जाड़”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१११२. नारायण झाक “सरकार / जाड़” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११३. खण्ड 1786क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नारायण झाक “सरकार / जाड़” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य आ शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1787 : विदेह-सदेह 7 — गणेश कुमार झा 'बावरा': बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु

१११४. गणेश कुमार झा 'बावरा'क “बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११५. गणेश कुमार झा 'बावरा'क “बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११६. गणेश कुमार झा 'बावरा'क “बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११७. गणेश कुमार झा 'बावरा'क “बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण, शृंगार आ वीर

१११८. गणेश कुमार झा 'बावरा'क “बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण, शृंगार आ वीर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११९. गणेश कुमार झा 'बावरा'क “बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक गणेश कुमार झा 'बावरा', विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२०. गणेश कुमार झा 'बावरा'क “बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२१. गणेश कुमार झा 'बावरा'क “बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११२२. गणेश कुमार झा 'बावरा'क “बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२३. खण्ड 1787क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गणेश कुमार झा 'बावरा'क “बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण, शृंगार आ वीर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1788 : विदेह-सदेह 7 — परिचय दास: भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद)

११२४. परिचय दासक “भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२५. परिचय दासक “भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२६. परिचय दासक “भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) अनूदित कविता (भोजपुरी सँ मैथिली)

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२७. परिचय दासक “भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) भोजपुरी सँ मैथिली

११२८. परिचय दासक “भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) भोजपुरी सँ मैथिली

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२९. परिचय दासक “भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक परिचय दास, विधा पद्य, उप-विधा अनूदित कविता (भोजपुरी सँ मैथिली)

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३०. परिचय दासक “भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३१. परिचय दासक “भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद)”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ अनूदित कविता (भोजपुरी सँ मैथिली)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११३२. परिचय दासक “भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३३. खण्ड 1788क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) परिचय दासक “भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि पद्य, अनूदित कविता (भोजपुरी सँ मैथिली) आ “भोजपुरी सँ मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1789 : विदेह-सदेह 7 — स्वाती लाल: गजल १-२

११३४. स्वाती लालक “गजल १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) गजल १-२

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३५. स्वाती लालक “गजल १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३६. स्वाती लालक “गजल १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) गजल

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३७. स्वाती लालक “गजल १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) नारी गजल

११३८. स्वाती लालक “गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार आ वियोग

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३९. स्वाती लालक “गजल १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक स्वाती लाल, विधा पद्य, उप-विधा गजल

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४०. स्वाती लालक “गजल १-२” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४१. स्वाती लालक “गजल १-२”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११४२. स्वाती लालक “गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४३. खण्ड 1789क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) स्वाती लालक “गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार आ वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1790 : विदेह-सदेह 7 — मुकुन्द मयंक: गजल १-३

११४४. मुकुन्द मयंकक “गजल १-३” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) गजल १-३

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४५. मुकुन्द मयंकक “गजल १-३”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४६. मुकुन्द मयंकक “गजल १-३”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) गजल

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४७. मुकुन्द मयंकक “गजल १-३” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शृंगार आ दार्शनिकता

११४८. मुकुन्द मयंकक “गजल १-३” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार आ दार्शनिकता

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४९. मुकुन्द मयंकक “गजल १-३”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मुकुन्द मयंक, विधा पद्य, उप-विधा गजल

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५०. मुकुन्द मयंकक “गजल १-३” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५१. मुकुन्द मयंकक “गजल १-३”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११५२. मुकुन्द मयंकक “गजल १-३” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५३. खण्ड 1790क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मुकुन्द मयंकक “गजल १-३” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार आ दार्शनिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1791 : विदेह-सदेह 7 — आशीष अनचिन्हार: बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत...

११५४. आशीष अनचिन्हारक “बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत / सेनूरदानक गीत” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत / सेनूरदानक गीत

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५५. आशीष अनचिन्हारक “बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत / सेनूरदानक गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५६. आशीष अनचिन्हारक “बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत / सेनूरदानक गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) बन्द, कता, नात आ गीत

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५७. आशीष अनचिन्हारक “बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत / सेनूरदानक गीत” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) विदेह सहायक सम्पादक

११५८. आशीष अनचिन्हारक “बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत / सेनूरदानक गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) विदेह सहायक सम्पादक

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५९. आशीष अनचिन्हारक “बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत / सेनूरदानक गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा बन्द, कता, नात आ गीत

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६०. आशीष अनचिन्हारक “बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत / सेनूरदानक गीत” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६१. आशीष अनचिन्हारक “बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत / सेनूरदानक गीत”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ बन्द, कता, नात आ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११६२. आशीष अनचिन्हारक “बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत / सेनूरदानक गीत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६३. खण्ड 1791क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) आशीष अनचिन्हारक “बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत / सेनूरदानक गीत” प्रविष्टि पद्य, बन्द, कता, नात आ गीत आ “विदेह सहायक सम्पादक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1792 : विदेह-सदेह 7 — पवन झा 'अग्निवाण': चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम

११६४. पवन झा 'अग्निवाण'क “चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६५. पवन झा 'अग्निवाण'क “चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६६. पवन झा 'अग्निवाण'क “चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६७. पवन झा 'अग्निवाण'क “चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) वीर आ भक्ति

११६८. पवन झा 'अग्निवाण'क “चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) वीर आ भक्ति

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६९. पवन झा 'अग्निवाण'क “चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक पवन झा 'अग्निवाण', विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७०. पवन झा 'अग्निवाण'क “चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७१. पवन झा 'अग्निवाण'क “चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११७२. पवन झा 'अग्निवाण'क “चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७३. खण्ड 1792क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पवन झा 'अग्निवाण'क “चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर आ भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1793 : विदेह-सदेह 7 — प्रवीण नारायण चौधरी: सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान

११७४. प्रवीण नारायण चौधरीक “सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७५. प्रवीण नारायण चौधरीक “सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७६. प्रवीण नारायण चौधरीक “सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७७. प्रवीण नारायण चौधरीक “सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य आ शृंगार

११७८. प्रवीण नारायण चौधरीक “सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) हास्य आ शृंगार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७९. प्रवीण नारायण चौधरीक “सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक प्रवीण नारायण चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८०. प्रवीण नारायण चौधरीक “सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८१. प्रवीण नारायण चौधरीक “सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११८२. प्रवीण नारायण चौधरीक “सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८३. खण्ड 1793क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) प्रवीण नारायण चौधरीक “सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1794 : विदेह-सदेह 7 — संजीव कुमार 'शर्मा': प्रतिदीप

११८४. संजीव कुमार 'शर्मा'क “प्रतिदीप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) प्रतिदीप

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८५. संजीव कुमार 'शर्मा'क “प्रतिदीप”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८६. संजीव कुमार 'शर्मा'क “प्रतिदीप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८७. संजीव कुमार 'शर्मा'क “प्रतिदीप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) वीर

११८८. संजीव कुमार 'शर्मा'क “प्रतिदीप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) वीर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८९. संजीव कुमार 'शर्मा'क “प्रतिदीप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक संजीव कुमार 'शर्मा', विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९०. संजीव कुमार 'शर्मा'क “प्रतिदीप” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९१. संजीव कुमार 'शर्मा'क “प्रतिदीप”कैँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११९२. संजीव कुमार 'शर्मा'क “प्रतिदीप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९३. खण्ड 1794क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) संजीव कुमार 'शर्मा'क “प्रतिदीप” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1795 : विदेह-सदेह 7 — सुधीर कुमार 'सुमन': समए

११९४. सुधीर कुमार 'सुमन'क “समए” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) समए

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९५. सुधीर कुमार 'सुमन'क “समए”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९६. सुधीर कुमार 'सुमन'क “समए”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९७. सुधीर कुमार 'सुमन'क “समए” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त

११९८. सुधीर कुमार 'सुमन'क “समए” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९९. सुधीर कुमार 'सुमन'क “समए”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सुधीर कुमार 'सुमन', विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२००. सुधीर कुमार 'सुमन'क “समए” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०१. सुधीर कुमार 'सुमन'क “समए”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२०२. सुधीर कुमार 'सुमन'क “समए” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०३. खण्ड 1795क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सुधीर कुमार 'सुमन'क “समए” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1796 : विदेह-सदेह 7 — उपेन्द्र नारायण 'अनुपम': दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम

१२०४. उपेन्द्र नारायण 'अनुपम'क “दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०५. उपेन्द्र नारायण 'अनुपम'क “दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०६. उपेन्द्र नारायण 'अनुपम'क “दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०७. उपेन्द्र नारायण 'अनुपम'क “दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण आ शृंगार

१२०८. उपेन्द्र नारायण 'अनुपम'क “दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ शृंगार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०९. उपेन्द्र नारायण 'अनुपम'क “दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक उपेन्द्र नारायण 'अनुपम', विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१०. उपेन्द्र नारायण 'अनुपम'क “दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२११. उपेन्द्र नारायण 'अनुपम'क “दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२१२. उपेन्द्र नारायण 'अनुपम'क “दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१३. खण्ड 1796क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) उपेन्द्र नारायण 'अनुपम'क “दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1797 : विदेह-सदेह 7 — डॉ. शिव कुमार प्रसाद: निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ

१२१४. डॉ. शिव कुमार प्रसादक “निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१५. डॉ. शिव कुमार प्रसादक “निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१६. डॉ. शिव कुमार प्रसादक “निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१७. डॉ. शिव कुमार प्रसादक “निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त आ वीर

१२१८. डॉ. शिव कुमार प्रसादक “निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ वीर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१९. डॉ. शिव कुमार प्रसादक “निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक डॉ. शिव कुमार प्रसाद, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२०. डॉ. शिव कुमार प्रसादक “निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२१. डॉ. शिव कुमार प्रसादक “निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ”कैँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२२२. डॉ. शिव कुमार प्रसादक “निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२३. खण्ड 1797क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) डॉ. शिव कुमार प्रसादक “निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ वीर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1798 : विदेह-सदेह 7 — प्रो. राजकुमार नीलकंठ: श्रद्धा

१२२४. प्रो. राजकुमार नीलकंठक “श्रद्धा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) श्रद्धा

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२५. प्रो. राजकुमार नीलकंठक “श्रद्धा”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२६. प्रो. राजकुमार नीलकंठक “श्रद्धा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२७. प्रो. राजकुमार नीलकंठक “श्रद्धा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) भक्ति आ शान्त

१२२८. प्रो. राजकुमार नीलकंठक “श्रद्धा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) भक्ति आ शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२९. प्रो. राजकुमार नीलकंठक “श्रद्धा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक प्रो. राजकुमार नीलकंठ, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३०. प्रो. राजकुमार नीलकंठक “श्रद्धा” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३१. प्रो. राजकुमार नीलकंठक “श्रद्धा”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२३२. प्रो. राजकुमार नीलकंठक “श्रद्धा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३३. खण्ड 1798क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) प्रो. राजकुमार नीलकंठक “श्रद्धा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भक्ति आ शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1799 : विदेह-सदेह 7 — राजदेव मंडल: देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा...

१२३४. राजदेव मंडलक “देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा परबा / हेलवार / कलीक पात / कुहेस / जय हे किसान” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा परबा / हेलवार / कलीक पात / कुहेस / जय हे किसान

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३५. राजदेव मंडलक “देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा परबा / हेलवार / कलीक पात / कुहेस / जय हे किसान”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३६. राजदेव मंडलक “देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा परबा / हेलवार / कलीक पात / कुहेस / जय हे किसान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) देश-गीत आ कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३७. राजदेव मंडलक “देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा परबा / हेलवार / कलीक पात / कुहेस / जय हे किसान” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) वीर, करुण आ व्यंग्य

१२३८. राजदेव मंडलक “देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा परबा / हेलवार / कलीक पात / कुहेस / जय हे किसान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) वीर, करुण आ व्यंग्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३९. राजदेव मंडलक “देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा परबा / हेलवार / कलीक पात / कुहेस / जय हे किसान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक राजदेव मंडल, विधा पद्य, उप-विधा देश-गीत आ कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४०. राजदेव मंडलक “देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा परबा / हेलवार / कलीक पात / कुहेस / जय हे किसान” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४१. राजदेव मंडलक “देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा परबा / हेलवार / कलीक पात / कुहेस / जय हे किसान”कैँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ देश-गीत आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२४२. राजदेव मंडलक “देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा परबा / हेलवार / कलीक पात / कुहेस / जय हे किसान” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४३. खण्ड 1799क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) राजदेव मंडलक “देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा परबा / हेलवार / कलीक पात / कुहेस / जय हे किसान” प्रविष्टि पद्य, देश-गीत आ कविता आ “वीर, करुण आ व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1800 : विदेह-सदेह 7 — जगदीश प्रसाद मंडल: जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी /...

१२४४. जगदीश प्रसाद मंडलक “जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी / चल रे जीवन / बौड़ाएल बटोही / संझ / घोड़ मन / मन-मणि / रहसा चौर / गीत १-६” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी / चल रे जीवन / बौड़ाएल बटोही / संझ / घोड़ मन / मन-मणि / रहसा चौर / गीत १-६

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४५. जगदीश प्रसाद मंडलक "जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी / चल रे जीवन / बौड़ाएल बटोही / संझ / घोड़ मन / मन-मणि / रहसा चौर / गीत १-६"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४६. जगदीश प्रसाद मंडलक "जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी / चल रे जीवन / बौड़ाएल बटोही / संझ / घोड़ मन / मन-मणि / रहसा चौर / गीत १-६"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता आ गीत

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४७. जगदीश प्रसाद मंडलक "जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी / चल रे जीवन / बौड़ाएल बटोही / संझ / घोड़ मन / मन-मणि / रहसा चौर / गीत १-६" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन्म: ५ जुलाई १९४७

१२४८. जगदीश प्रसाद मंडलक "जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी / चल रे जीवन / बौड़ाएल बटोही / संझ / घोड़ मन / मन-मणि / रहसा चौर / गीत १-६" प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) जन्म: ५ जुलाई १९४७

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४९. जगदीश प्रसाद मंडलक "जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी / चल रे जीवन / बौड़ाएल बटोही / संझ / घोड़ मन / मन-मणि / रहसा चौर / गीत १-६"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक जगदीश प्रसाद मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता आ गीत

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५०. जगदीश प्रसाद मंडलक "जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी / चल रे जीवन / बौड़ाएल बटोही / संझ / घोड़ मन / मन-मणि / रहसा चौर / गीत १-६" रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५१. जगदीश प्रसाद मंडलक "जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी / चल रे जीवन / बौड़ाएल बटोही / संझ / घोड़ मन / मन-मणि / रहसा चौर / गीत १-६"केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविता आ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२५२. जगदीश प्रसाद मंडलक “जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी / चल रे जीवन / बौड़ाएल बटोही / संझ / घोड़ मन / मन-मणि / रहसा चौर / गीत १-६” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५३. खण्ड 1800क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) जगदीश प्रसाद मंडलक “जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी / चल रे जीवन / बौड़ाएल बटोही / संझ / घोड़ मन / मन-मणि / रहसा चौर / गीत १-६” प्रविष्टि पद्य, कविता आ गीत आ “जन्म: ५ जुलाई १९४७” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1801 : विदेह-सदेह 7 — मुस्नी कामत: समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प /...

१२५४. मुस्नी कामतक “समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प / ठमकल शब्द / दहेजक बिहाड़ि / हराएल हमर स्वरूप / विदाइ” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प / ठमकल शब्द / दहेजक बिहाड़ि / हराएल हमर स्वरूप / विदाइ

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५५. मुस्नी कामतक “समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प / ठमकल शब्द / दहेजक बिहाड़ि / हराएल हमर स्वरूप / विदाइ”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५६. मुस्नी कामतक “समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प / ठमकल शब्द / दहेजक बिहाड़ि / हराएल हमर स्वरूप / विदाइ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५७. मुस्नी कामतक “समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प / ठमकल शब्द / दहेजक बिहाड़ि / हराएल हमर स्वरूप / विदाइ” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) नारी कवि

१२५८. मुस्नी कामतक “समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प / ठमकल शब्द / दहेजक बिहाड़ि / हराएल हमर स्वरूप / विदाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ वीर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५९. मुस्नी कामतक “समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प / ठमकल शब्द / दहेजक बिहाड़ि / हराएल हमर स्वरूप / विदाइ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मुस्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६०. मुस्नी कामतक “समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प / ठमकल शब्द / दहेजक बिहाड़ि / हराएल हमर स्वरूप / विदाइ” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६१. मुस्नी कामतक “समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प / ठमकल शब्द / दहेजक बिहाड़ि / हराएल हमर स्वरूप / विदाइ”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२६२. मुस्नी कामतक “समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प / ठमकल शब्द / दहेजक बिहाड़ि / हराएल हमर स्वरूप / विदाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६३. खण्ड 1801क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मुस्नी कामतक “समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प / ठमकल शब्द / दहेजक बिहाड़ि / हराएल हमर स्वरूप / विदाइ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ वीर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1802 : विदेह-सदेह 7 — सुनील कुमार झा: टनका-हाइकू / गजल १-२

१२६४. सुनील कुमार झाक “टनका-हाइकू / गजल १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) टनका-हाइकू / गजल १-२

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६५. सुनील कुमार झाक “टनका-हाइकू / गजल १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६६. सुनील कुमार झाक “टनका-हाइकू / गजल १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) टनका-हाइकू आ गजल

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६७. सुनील कुमार झाक “टनका-हाइकू / गजल १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त आ शृंगार

१२६८. सुनील कुमार झाक “टनका-हाइकू / गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ शृंगार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६९. सुनील कुमार झाक “टनका-हाइकू / गजल १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सुनील कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा टनका-हाइकू आ गजल

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७०. सुनील कुमार झाक “टनका-हाइकू / गजल १-२” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७१. सुनील कुमार झाक “टनका-हाइकू / गजल १-२”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ टनका-हाइकू आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२७२. सुनील कुमार झाक “टनका-हाइकू / गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७३. खण्ड 1802क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सुनील कुमार झाक “टनका-हाइकू / गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, टनका-हाइकू आ गजल आ “शान्त आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1803 : विदेह-सदेह 7 — जगदानन्द झा 'मनु': हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब

१२७४. जगदानन्द झा 'मनु'क “हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७५. जगदानन्द झा 'मनु'क “हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७६. जगदानन्द झा 'मनु'क “हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) हजल, बाइ आ गजल

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७७. जगदानन्द झा 'मनु'क “हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) बहुरूपी हजल-बाइ-गजल

१२७८. जगदानन्द झा 'मनु'क “हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) बहुरूपी हजल-बाइ-गजल

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७९. जगदानन्द झा 'मनु'क “हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा पद्य, उप-विधा हजल, बाइ आ गजल

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८०. जगदानन्द झा 'मनु'क “हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८१. जगदानन्द झा 'मनु'क “हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ हजल, बाइ आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२८२. जगदानन्द झा 'मनु'क “हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८३. खण्ड 1803क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) जगदानन्द झा 'मनु'क “हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब” प्रविष्टि पद्य, हजल, बाइ आ गजल आ “बहुरूपी हजल-बाइ-गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1804 : विदेह-सदेह 7 — कुन्दन कुमार कर्ण: आजाद गजल १-३

१२८४. कुन्दन कुमार कर्णक “आजाद गजल १-३” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) आजाद गजल १-३

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८५. कुन्दन कुमार कर्णक “आजाद गजल १-३”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८६. कुन्दन कुमार कर्णक “आजाद गजल १-३”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) आजाद गजल

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८७. कुन्दन कुमार कर्णक “आजाद गजल १-३” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शृंगार आ वियोग

१२८८. कुन्दन कुमार कर्णक “आजाद गजल १-३” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार आ वियोग

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८९. कुन्दन कुमार कर्णक “आजाद गजल १-३”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक कुन्दन कुमार कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा आजाद गजल

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९०. कुन्दन कुमार कर्णक “आजाद गजल १-३” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९१. कुन्दन कुमार कर्णक “आजाद गजल १-३”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ आजाद गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२९२. कुन्दन कुमार कर्णक “आजाद गजल १-३” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९३. खण्ड 1804क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) कुन्दन कुमार कर्णक “आजाद गजल १-३” प्रविष्टि पद्य, आजाद गजल आ “शृंगार आ वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1805 : विदेह-सदेह 7 — अमित मिश्र: हजल / गजल १-५

१२९४. अमित मिश्रक “हजल / गजल १-५” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) हजल / गजल १-५

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९५. अमित मिश्रक “हजल / गजल १-५”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९६. अमित मिश्रक “हजल / गजल १-५”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) हजल आ गजल

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९७. अमित मिश्रक “हजल / गजल १-५” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य आ शृंगार

१२९८. अमित मिश्रक “हजल / गजल १-५” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) हास्य आ शृंगार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९९. अमित मिश्रक “हजल / गजल १-५”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक अमित मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा हजल आ गजल

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३००. अमित मिश्रक “हजल / गजल १-५” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०१. अमित मिश्रक “हजल / गजल १-५”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ हजल आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३०२. अमित मिश्रक “हजल / गजल १-५” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०३. खण्ड 1805क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) अमित मिश्रक “हजल / गजल १-५” प्रविष्टि पद्य, हजल आ गजल आ “हास्य आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1806 : विदेह-सदेह 7 — चन्दन कुमार झा: बाइ / हजल / गजल १-३

१३०४. चन्दन कुमार झाक “बाइ / हजल / गजल १-३” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) बाइ / हजल / गजल १-३

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०५. चन्दन कुमार झाक “बाइ / हजल / गजल १-३”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०६. चन्दन कुमार झाक “बाइ / हजल / गजल १-३”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) बाइ, हजल आ गजल

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०७. चन्दन कुमार झाक “बाइ / हजल / गजल १-३” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) त्रिविध रूप

१३०८. चन्दन कुमार झाक “बाइ / हजल / गजल १-३” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार, हास्य आ वियोग

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०९. चन्दन कुमार झाक “बाइ / हजल / गजल १-३”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक चन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा बाइ, हजल आ गजल

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१०. चन्दन कुमार झाक “बाइ / हजल / गजल १-३” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३११. चन्दन कुमार झाक “बाइ / हजल / गजल १-३”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ बाइ, हजल आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३१२. चन्दन कुमार झाक “बाइ / हजल / गजल १-३” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१३. खण्ड 1806क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) चन्दन कुमार झाक “बाइ / हजल / गजल १-३” प्रविष्टि पद्य, बाइ, हजल आ गजल आ “शृंगार, हास्य आ वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1807 : विदेह-सदेह 7 — प्रबी झा: गजल

१३१४. प्रबी झाक “गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) गजल

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१५. प्रबी झाक “गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१६. प्रबी झाक “गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) गजल

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१७. प्रबी झाक “गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शृंगार आ वियोग

१३१८. प्रबी झाक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार आ वियोग

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१९. प्रबी झाक “गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक प्रबी झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२०. प्रबी झाक “गजल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२१. प्रबी झाक “गजल”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३२२. प्रबी झाक “गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२३. खण्ड 1807क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) प्रबी झाक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “श्रृंगार आ वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1808 : विदेह-सदेह 7 — अनुष्ठिया योग: किछु क्षणिका

१३२४. अनुष्ठिया योगक “किछु क्षणिका” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) किछु क्षणिका

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२५. अनुष्ठिया योगक “किछु क्षणिका”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२६. अनुष्ठिया योगक “किछु क्षणिका”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) क्षणिका

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२७. अनुष्ठिया योगक “किछु क्षणिका” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) लघु रूप

१३२८. अनुष्ठिया योगक “किछु क्षणिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त भाव

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२९. अनुष्ठिया योगक “किछु क्षणिका”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक अनुष्ठिया योग, विधा पद्य, उप-विधा क्षणिका

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३०. अनुष्ठिया योगक “किछु क्षणिका” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३१. अनुष्ठिया योगक “किछु क्षणिका”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ क्षणिकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३३२. अनुष्ठिया योगक “किछु क्षणिका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३३. खण्ड 1808क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) अनुष्ठिया योगक “किछु क्षणिका” प्रविष्टि पद्य, क्षणिका आ “शान्त भाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1809 : विदेह-सदेह 7 — सज्जे आलम गौहर: गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभ...

१३३४. सज्जे आलम गौहरक “गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभक ईद मुबारक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभक ईद मुबारक

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३५. सज्जे आलम गौहरक “गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभक ईद मुबारक”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३६. सज्जे आलम गौहरक “गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभक ईद मुबारक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) गजल आ कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३७. सज्जे आलम गौहरक “गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभक ईद मुबारक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मुस्लिम मैथिली स्वर

१३३८. सज्जे आलम गौहरक “गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभक ईद मुबारक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) मुस्लिम मैथिली स्वर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३९. सज्जे आलम गौहरक “गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभक ईद मुबारक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सज्जे आलम गौहर, विधा पद्य, उप-विधा गजल आ कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४०. सज्जे आलम गौहरक “गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभक ईद मुबारक” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४१. सज्जे आलम गौहरक “गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभक ईद मुबारक”कैँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ गजल आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३४२. सज्जे आलम गौहरक “गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभक ईद मुबारक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४३. खण्ड 1809क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सज्जे आलम गौहरक “गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभक ईद मुबारक” प्रविष्टि पद्य, गजल आ कविता आ “मुस्लिम मैथिली स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1810 : विदेह-सदेह 7 — बिनोद मिश्र: प्रेम पुष्प

१३४४. बिनोद मिश्रक “प्रेम पुष्प” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) प्रेम पुष्प

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४५. बिनोद मिश्रक “प्रेम पुष्प”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४६. बिनोद मिश्रक “प्रेम पुष्प”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४७. बिनोद मिश्रक “प्रेम पुष्प” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शृंगार

१३४८. बिनोद मिश्रक “प्रेम पुष्प” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४९. बिनोद मिश्रक “प्रेम पुष्प”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक बिनोद मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५०. बिनोद मिश्रक “प्रेम पुष्प” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५१. बिनोद मिश्रक “प्रेम पुष्प”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३५२. बिनोद मिश्रक “प्रेम पुष्प” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५३. खण्ड 1810क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) बिनोद मिश्रक “प्रेम पुष्प” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1811 : विदेह-सदेह 7 — रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार': झा (झा लोकगीत विधा)

१३५४. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “झा (झा लोकगीत विधा)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) झा (झा लोकगीत विधा)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५५. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “झा (झा लोकगीत विधा)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५६. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “झा (झा लोकगीत विधा)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) झा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५७. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “झा (झा लोकगीत विधा)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मैथिलीक भिखारी ठाकुर-समान लोकस्वर

१३५८. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “झा (झा लोकगीत विधा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) मैथिलीक भिखारी ठाकुर-समान लोकस्वर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५९. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “झा (झा लोकगीत विधा)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार', विधा पद्य, उप-विधा झा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६०. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “झा (झा लोकगीत विधा)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६१. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “झा (झा लोकगीत विधा)”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ झाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३६२. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “झा (झा लोकगीत विधा)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६३. खण्ड 1811क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “झा (झा लोकगीत विधा)” प्रविष्टि पद्य, झा आ “मैथिलीक भिखारी ठाकुर-समान लोकस्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1812 : विदेह-सदेह 7 — ओमप्रकाश झा: बाइ १-२ / गजल १-४

१३६४. ओमप्रकाश झाक “बाइ १-२ / गजल १-४” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) बाइ १-२ / गजल १-४

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६५. ओमप्रकाश झाक “बाइ १-२ / गजल १-४”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६६. ओमप्रकाश झाक “बाइ १-२ / गजल १-४”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) बाइ आ गजल

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६७. ओमप्रकाश झाक “बाइ १-२ / गजल १-४” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शृंगार आ वियोग

१३६८. ओमप्रकाश झाक “बाइ १-२ / गजल १-४” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार आ वियोग

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६९. ओमप्रकाश झाक “बाइ १-२ / गजल १-४”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक ओमप्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा बाइ आ गजल

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७०. ओमप्रकाश झाक “बाइ १-२ / गजल १-४” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७१. ओमप्रकाश झाक “बाइ १-२ / गजल १-४”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ बाइ आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३७२. ओमप्रकाश झाक “बाइ १-२ / गजल १-४” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७३. खण्ड 1812क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ओमप्रकाश झाक “बाइ १-२ / गजल १-४” प्रविष्टि पद्य, बाइ आ गजल आ “शृंगार आ वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1813 : विदेह-सदेह 7 — त्रिपुरारी कुमार शर्मा: आजाद गजल १-२

१३७४. त्रिपुरारी कुमार शर्माक “आजाद गजल १-२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) आजाद गजल १-२

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७५. त्रिपुरारी कुमार शर्माक “आजाद गजल १-२”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७६. त्रिपुरारी कुमार शर्माक “आजाद गजल १-२”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) आजाद गजल

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७७. त्रिपुरारी कुमार शर्माक “आजाद गजल १-२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शृंगार आ वियोग

१३७८. त्रिपुरारी कुमार शर्माक “आजाद गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार आ वियोग

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७९. त्रिपुरारी कुमार शर्माक “आजाद गजल १-२”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक त्रिपुरारी कुमार शर्मा, विधा पद्य, उप-विधा आजाद गजल

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८०. त्रिपुरारी कुमार शर्माक “आजाद गजल १-२” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८१. त्रिपुरारी कुमार शर्माक “आजाद गजल १-२”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ आजाद गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३८२. त्रिपुरारी कुमार शर्माक “आजाद गजल १-२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८३. खण्ड 1813क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) त्रिपुरारी कुमार शर्माक “आजाद गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, आजाद गजल आ “शृंगार आ वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1814 : विदेह-सदेह 7 — राजीव रंजन मिश्र: भक्ति गजल १-३

१३८४. राजीव रंजन मिश्रक “भक्ति गजल १-३” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) भक्ति गजल १-३

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८५. राजीव रंजन मिश्रक “भक्ति गजल १-३”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८६. राजीव रंजन मिश्रक “भक्ति गजल १-३”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) भक्ति गजल

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८७. राजीव रंजन मिश्रक “भक्ति गजल १-३” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) भक्ति आ शृंगार

१३८८. राजीव रंजन मिश्रक “भक्ति गजल १-३” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) भक्ति आ शृंगार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८९. राजीव रंजन मिश्रक “भक्ति गजल १-३”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक राजीव रंजन मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गजल

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९०. राजीव रंजन मिश्रक “भक्ति गजल १-३” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९१. राजीव रंजन मिश्रक “भक्ति गजल १-३”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ भक्ति गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३९२. राजीव रंजन मिश्रक “भक्ति गजल १-३” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९३. खण्ड 1814क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) राजीव रंजन मिश्रक “भक्ति गजल १-३” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गजल आ “भक्ति आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1815 : विदेह-सदेह 7 — दीप नारायण विद्यार्थी: आजाद गजल

१३९४. दीप नारायण विद्यार्थीक “आजाद गजल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) आजाद गजल

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९५. दीप नारायण विद्यार्थीक “आजाद गजल”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९६. दीप नारायण विद्यार्थीक “आजाद गजल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) आजाद गजल

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९७. दीप नारायण विद्यार्थीक “आजाद गजल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) आजाद गजल-रूप

१३९८. दीप नारायण विद्यार्थीक “आजाद गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) आजाद गजल-रूप

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९९. दीप नारायण विद्यार्थीक “आजाद गजल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक दीप नारायण विद्यार्थी, विधा पद्य, उप-विधा आजाद गजल

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४००. दीप नारायण विद्यार्थीक “आजाद गजल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०१. दीप नारायण विद्यार्थीक “आजाद गजल”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ आजाद गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४०२. दीप नारायण विद्यार्थीक “आजाद गजल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०३. खण्ड 1815क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) दीप नारायण विद्यार्थीक “आजाद गजल” प्रविष्टि पद्य, आजाद गजल आ “आजाद गजल-रूप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1816 : विदेह-सदेह 7 — उमेश मंडल: भोगी / श्रोता

१४०४. उमेश मंडलक “भोगी / श्रोता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) भोगी / श्रोता

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०५. उमेश मंडलक “भोगी / श्रोता”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०६. उमेश मंडलक “भोगी / श्रोता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०७. उमेश मंडलक “भोगी / श्रोता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) विदेह सह-सम्पादक

१४०८. उमेश मंडलक “भोगी / श्रोता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०९. उमेश मंडलक “भोगी / श्रोता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक उमेश मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१०. उमेश मंडलक “भोगी / श्रोता” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४११. उमेश मंडलक “भोगी / श्रोता”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४१२. उमेश मंडलक “भोगी / श्रोता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१३. खण्ड 1816क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) उमेश मंडलक “भोगी / श्रोता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1817 : विदेह-सदेह 7 — उमेश पासवान: गवहा संक्रान्ति

१४१४. उमेश पासवानक “गवहा संक्रान्ति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) गवहा संक्रान्ति

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१५. उमेश पासवानक “गवहा संक्रान्ति”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१६. उमेश पासवानक “गवहा संक्रान्ति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१७. उमेश पासवानक “गवहा संक्रान्ति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) दलित स्वर

१४१८. उमेश पासवानक “गवहा संक्रान्ति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) दलित स्वर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१९. उमेश पासवानक “गवहा संक्रान्ति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक उमेश पासवान, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२०. उमेश पासवानक “गवहा संक्रान्ति” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२१. उमेश पासवानक “गवहा संक्रान्ति”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४२२. उमेश पासवानक “गवहा संक्रान्ति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२३. खण्ड 1817क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) उमेश पासवानक “गवहा संक्रान्ति” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दलित स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1818 : विदेह-सदेह 7 — संजय कुमार मंडल: मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि

१४२४. संजय कुमार मंडलक “मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२५. संजय कुमार मंडलक “मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२६. संजय कुमार मंडलक “मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२७. संजय कुमार मंडलक “मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण आ शृंगार

१४२८. संजय कुमार मंडलक “मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ शृंगार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२९. संजय कुमार मंडलक “मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक संजय कुमार मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३०. संजय कुमार मंडलक “मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३१. संजय कुमार मंडलक “मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४३२. संजय कुमार मंडलक “मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३३. खण्ड 1818क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) संजय कुमार मंडलक “मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1819 : विदेह-सदेह 7 — प्रवेश कुमार झा 'श्रेथ': खाएब की / हम छी आजुक नेता

१४३४. प्रवेश कुमार झा 'श्रेथ'क “खाएब की / हम छी आजुक नेता” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) खाएब की / हम छी आजुक नेता

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३५. प्रवेश कुमार झा 'श्रेथ'क “खाएब की / हम छी आजुक नेता”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३६. प्रवेश कुमार झा 'श्रेथ'क “खाएब की / हम छी आजुक नेता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३७. प्रवेश कुमार झा 'श्रेथ'क “खाएब की / हम छी आजुक नेता” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य आ व्यंग्य

१४३८. प्रवेश कुमार झा 'श्रेथ'क “खाएब की / हम छी आजुक नेता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) हास्य आ व्यंग्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३९. प्रवेश कुमार झा 'श्रेथ'क “खाएब की / हम छी आजुक नेता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक प्रवेश कुमार झा 'श्रेथ', विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४०. प्रवेश कुमार झा 'श्रेथ'क “खाएब की / हम छी आजुक नेता” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४१. प्रवेश कुमार झा 'थ्रेथ'क “खाएब की / हम छी आजुक नेता”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४४२. प्रवेश कुमार झा 'थ्रेथ'क “खाएब की / हम छी आजुक नेता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४३. खण्ड 1819क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) प्रवेश कुमार झा 'थ्रेथ'क “खाएब की / हम छी आजुक नेता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1820 : विदेह-सदेह 7 — कामोद झा: किओ नै

१४४४. कामोद झाक “किओ नै” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) किओ नै

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४५. कामोद झाक “किओ नै”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४६. कामोद झाक “किओ नै”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४७. कामोद झाक “किओ नै” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण आ शान्त

१४४८. कामोद झाक “किओ नै” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४९. कामोद झाक “किओ नै”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक कामोद झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५०. कामोद झाक “किओ नै” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५१. कामोद झाक “किओ नै”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४५२. कामोद झाक “किओ नै” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५३. खण्ड 1820क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) कामोद झाक “किओ नै” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1821 : विदेह-सदेह 7 — कपिलेश्वर राउत: मातृभाषा

१४५४. कपिलेश्वर राउतक “मातृभाषा” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) मातृभाषा

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५५. कपिलेश्वर राउतक “मातृभाषा”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५६. कपिलेश्वर राउतक “मातृभाषा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५७. कपिलेश्वर राउतक “मातृभाषा” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) दलित स्वर

१४५८. कपिलेश्वर राउतक “मातृभाषा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) वीर आ शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५९. कपिलेश्वर राउतक “मातृभाषा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक कपिलेश्वर राउत, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६०. कपिलेश्वर राउतक “मातृभाषा” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६१. कपिलेश्वर राउतक “मातृभाषा”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४६२. कपिलेश्वर राउतक “मातृभाषा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६३. खण्ड 1821क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) कपिलेश्वर राउतक “मातृभाषा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर आ शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1822 : विदेह-सदेह 7 — जीबू कुमार झा: प्रार्थना गीत / पहिल भेट

१४६४. जीबू कुमार झाक “प्रार्थना गीत / पहिल भेट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) प्रार्थना गीत / पहिल भेट

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६५. जीबू कुमार झाक “प्रार्थना गीत / पहिल भेट”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६६. जीबू कुमार झाक “प्रार्थना गीत / पहिल भेट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) प्रार्थना गीत आ कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६७. जीबू कुमार झाक “प्रार्थना गीत / पहिल भेट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) भक्ति आ शृंगार

१४६८. जीबू कुमार झाक “प्रार्थना गीत / पहिल भेट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) भक्ति आ शृंगार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६९. जीबू कुमार झाक “प्रार्थना गीत / पहिल भेट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक जीबू कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा प्रार्थना गीत आ कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७०. जीबू कुमार झाक “प्रार्थना गीत / पहिल भेट” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७१. जीबू कुमार झाक “प्रार्थना गीत / पहिल भेट”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ प्रार्थना गीत आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४७२. जीबू कुमार झाक “प्रार्थना गीत / पहिल भेट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७३. खण्ड 1822क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) जीबू कुमार झाक “प्रार्थना गीत / पहिल भेट” प्रविष्टि पद्य, प्रार्थना गीत आ कविता आ “भक्ति आ श्रृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1823 : विदेह-सदेह 7 — अनामिका राज: नवका बाट

१४७४. अनामिका राजक “नवका बाट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) नवका बाट

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७५. अनामिका राजक “नवका बाट”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७६. अनामिका राजक “नवका बाट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७७. अनामिका राजक “नवका बाट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) वीर आ शान्त

१४७८. अनामिका राजक “नवका बाट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) वीर आ शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७९. अनामिका राजक “नवका बाट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक अनामिका राज, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८०. अनामिका राजक “नवका बाट” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८१. अनामिका राजक “नवका बाट”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४८२. अनामिका राजक “नवका बाट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८३. खण्ड 1823क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) अनामिका राजक “नवका बाट” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर आ शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1824 : विदेह-सदेह 7 — प्रो. चम्पा शर्मा: डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद)

१४८४. प्रो. चम्पा शर्माक “डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८५. प्रो. चम्पा शर्माक “डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८६. प्रो. चम्पा शर्माक “डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) अनूदित कविता (डोगरी सँ मैथिली)

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८७. प्रो. चम्पा शर्माक “डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) डोगरी सँ मैथिली

१४८८. प्रो. चम्पा शर्माक “डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) डोगरी सँ मैथिली

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८९. प्रो. चम्पा शर्माक “डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक प्रो. चम्पा शर्मा, विधा पद्य, उप-विधा अनूदित कविता (डोगरी सँ मैथिली)

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९०. प्रो. चम्पा शर्माक “डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९१. प्रो. चम्पा शर्माक “डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद)”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ अनूदित कविता (डोगरी सँ मैथिली)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४९२. प्रो. चम्पा शर्माक “डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९३. खण्ड 1824क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) प्रो. चम्पा शर्माक “डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि पद्य, अनूदित कविता (डोगरी सँ मैथिली) आ “डोगरी सँ मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1825 : विदेह-सदेह 7 — मोहन प्रसाद: आउ करी नव मिथिलाक निर्माण

१४९४. मोहन प्रसादक “आउ करी नव मिथिलाक निर्माण” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

(A) आउ करी नव मिथिलाक निर्माण

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९५. मोहन प्रसादक “आउ करी नव मिथिलाक निर्माण”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९६. मोहन प्रसादक “आउ करी नव मिथिलाक निर्माण”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९७. मोहन प्रसादक “आउ करी नव मिथिलाक निर्माण” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) वीर

१४९८. मोहन प्रसादक “आउ करी नव मिथिलाक निर्माण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) वीर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९९. मोहन प्रसादक “आउ करी नव मिथिलाक निर्माण”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाम मोहन प्रसाद, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५००. मोहन प्रसादक “आउ करी नव मिथिलाक निर्माण” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०१. मोहन प्रसादक “आउ करी नव मिथिलाक निर्माण”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई प्रविष्टि कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५०२. मोहन प्रसादक “आउ करी नव मिथिलाक निर्माण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०३. खण्ड 1825क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मोहन प्रसादक “आउ करी नव मिथिलाक निर्माण” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1826 : विदेह-सदेह 7 — नगीना कुमारी झा: साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप

१५०४. नगीना कुमारी झाक “साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

(A) साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०५. नगीना कुमारी झाक “साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०६. नगीना कुमारी झाक “साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०७. नगीना कुमारी झाक “साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) नारी कवि

१५०८. नगीना कुमारी झाक “साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) नारी कवि

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०९. नगीना कुमारी झाक “साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाम नगीना कुमारी झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१०. नगीना कुमारी झाक “साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५११. नगीना कुमारी झाक “साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई प्रविष्टि कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५१२. नगीना कुमारी झाक “साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१३. खण्ड 1826क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नगीना कुमारी झाक “साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी कवि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1827 : विदेह-सदेह 7 — लालबाबू मंडल: जुलूस

१५१४. लालबाबू मंडलक “जुलूस” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

(A) जुलूस

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१५. लालबाबू मंडलक “जुलूस”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१६. लालबाबू मंडलक “जुलूस”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१७. लालबाबू मंडलक “जुलूस” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) रौद्र आ वीर

१५१८. लालबाबू मंडलक “जुलूस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) रौद्र आ वीर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१९. लालबाबू मंडलक “जुलूस”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाम लालबाबू मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२०. लालबाबू मंडलक “जुलूस” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२१. लालबाबू मंडलक “जुलूस”कैं विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई प्रविष्टि कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५२२. लालबाबू मंडलक “जुलूस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२३. खण्ड 1827क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लालबाबू मंडलक “जुलूस” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रौद्र आ वीर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1828 : विदेह-सदेह 7 — संदीप कुमार साफी: भकजोगनी / वसन्त पंचमी

१५२४. संदीप कुमार साफीक “भकजोगनी / वसन्त पंचमी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

(A) भकजोगनी / वसन्त पंचमी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२५. संदीप कुमार साफीक “भकजोगनी / वसन्त पंचमी”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२६. संदीप कुमार साफीक “भकजोगनी / वसन्त पंचमी”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२७. संदीप कुमार साफीक “भकजोगनी / वसन्त पंचमी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त आ शृंगार

१५२८. संदीप कुमार साफीक “भकजोगनी / वसन्त पंचमी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ शृंगार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२९. संदीप कुमार साफीक “भकजोगनी / वसन्त पंचमी”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाम संदीप कुमार साफी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३०. संदीप कुमार साफीक “भकजोगनी / वसन्त पंचमी” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३१. संदीप कुमार साफीक “भकजोगनी / वसन्त पंचमी”केँ विदेह-सदेह 7क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई प्रविष्टि कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५३२. संदीप कुमार साफीक “भकजोगनी / वसन्त पंचमी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 7क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३३. खण्ड 1828क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) संदीप कुमार साफीक “भकजोगनी / वसन्त पंचमी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 5110 : विदेह-सदेह 7 — -- — मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ५)

१५३४. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ५)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) पाँचम किस्त

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

१५३५. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ५)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) पाँचम किस्त

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

१५३६. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ५)’केँ शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) पाँचम किस्त

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

१५३७. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ५)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक पाँचम किस्त दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१५३८. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ५)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) पाँचम किस्त

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

१५३९. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ५)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) पाँचम किस्त

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

१५४०. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ५)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) पाँचम किस्त

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

१५४१. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ५)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) पाँचम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१५४२. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ५)’मे शोध-लेखक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) शोध-लेखक रूप पाँचम किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१५४३. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ५)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ पाँचम किस्त धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5111 : विदेह-सदेह 7 — गजेन्द्र ठाकुर — सहस्रबाढ़नि (अंक ७)

१५४४. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ७)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) सातम किस्त

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

१५४५. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ७)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) सातम किस्त

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

१५४६. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ७)’कैँ उपन्यास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) सातम किस्त

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

१५४७. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ७)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक सातम किस्त दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१५४८. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ७)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) सातम किस्त

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

१५४९. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ७)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) सातम किस्त

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

१५५०. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ७)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) सातम किस्त

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

१५५१. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ७)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) सातम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१५५२. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ७)’मे उपन्यासक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) उपन्यासक रूप सातम किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१५५३. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ७)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकेँ सातम किस्त धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5112 : विदेह-सदेह 7 — गजेन्द्र ठाकुर — महाभारत (अंक ७)

१५५४. ‘महाभारत (अंक ७)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) सातम किस्त

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

१५५५. ‘महाभारत (अंक ७)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) सातम किस्त

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

१५५६. ‘महाभारत (अंक ७)’केँ महाकाव्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) सातम किस्त

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

१५५७. ‘महाभारत (अंक ७)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक सातम किस्त दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१५५८. ‘महाभारत (अंक ७)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) सातम किस्त

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

१५५९. ‘महाभारत (अंक ७)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) सातम किस्त

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

१५६०. ‘महाभारत (अंक ७)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) सातम किस्त

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

१५६१. ‘महाभारत (अंक ७)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) सातम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१५६२. ‘महाभारत (अंक ७)’मे महाकाव्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) महाकाव्यक रूप सातम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१५६३. ‘महाभारत (अंक ७)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैं सातम किस्त धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5113 : विदेह-सदेह 7 — गजेन्द्र ठाकुर — हम नहि जायब विदेश

१५६४. ‘हम नहि जायब विदेश’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) प्रवास-प्रेरित कथा

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

१५६५. ‘हम नहि जायब विदेश’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) प्रवास-प्रेरित कथा

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

१५६६. ‘हम नहि जायब विदेश’कैं कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) प्रवास-प्रेरित कथा

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

१५६७. ‘हम नहि जायब विदेश’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक प्रवास-प्रेरित कथा दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१५६८. ‘हम नहि जायब विदेश’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) प्रवास-प्रेरित कथा

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

१५६९. ‘हम नहि जायब विदेश’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) प्रवास-प्रेरित कथा

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

१५७०. ‘हम नहि जायब विदेश’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) प्रवास-प्रेरित कथा

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

१५७१. ‘हम नहि जायब विदेश’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) प्रवास-प्रेरित कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१५७२. ‘हम नहि जायब विदेश’मे कथाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) कथाक रूप प्रवास-प्रेरित कथा कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१५७३. ‘हम नहि जायब विदेश’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ प्रवास-प्रेरित कथा धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5114 : विदेह-सदेह 7 — गजेन्द्र ठाकुर — (अंक ७ केर पद्य भाग)

१५७४. ‘(अंक ७ केर पद्य भाग)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) विविध

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

१५७५. ‘(अंक ७ केर पद्य भाग)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) विविध

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

१५७६. ‘(अंक ७ केर पद्य भाग)’कैँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) विविध

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

१५७७. ‘(अंक ७ केर पद्य भाग)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक विविध दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१५७८. ‘(अंक ७ केर पद्य भाग)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) विविध

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

१५७९. ‘(अंक ७ केर पद्य भाग)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) विविध

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

१५८०. ‘(अंक ७ केर पद्य भाग)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) विविध

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

१५८१. ‘(अंक ७ केर पद्य भाग)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) विविधक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१५८२. ‘(अंक ७ केर पद्य भाग)’मे पद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) पद्यक रूप विविध कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१५८३. ‘(अंक ७ केर पद्य भाग)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ विविध धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5115 : विदेह-सदेह 7 — -- — (अंक ७ केर संस्कृत शिक्षा)

१५८४. ‘(अंक ७ केर संस्कृत शिक्षा)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) धारावाहिक

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

१५८५. '(अंक ७ केर संस्कृत शिक्षा)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

१५८६. '(अंक ७ केर संस्कृत शिक्षा)'कैँ संस्कृत-शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) धारावाहिक

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

१५८७. '(अंक ७ केर संस्कृत शिक्षा)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१५८८. '(अंक ७ केर संस्कृत शिक्षा)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

१५८९. '(अंक ७ केर संस्कृत शिक्षा)'क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) धारावाहिक

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

१५९०. '(अंक ७ केर संस्कृत शिक्षा)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

१५९१. '(अंक ७ केर संस्कृत शिक्षा)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१५९२. '(अंक ७ केर संस्कृत शिक्षा)'मे संस्कृत-शिक्षाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) संस्कृत-शिक्षाक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१५९३. ‘(अंक ७ केर संस्कृत शिक्षा)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकेँ धारावाहिक धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5116 : विदेह-सदेह 7 — प्रीति — दशपात अरिपन

१५९४. ‘दशपात अरिपन’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) --

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

१५९५. ‘दशपात अरिपन’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) --

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

१५९६. ‘दशपात अरिपन’केँ मिथिला कला रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) --

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

१५९७. ‘दशपात अरिपन’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१५९८. ‘दशपात अरिपन’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) --

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

१५९९. ‘दशपात अरिपन’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) --

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

१६००. ‘दशपात अरिपन’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) --

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

१६०१. ‘दशपात अरिपन’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१६०२. ‘दशपात अरिपन’मे मिथिला कलाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) मिथिला कलाक रूप -- कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१६०३. ‘दशपात अरिपन’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैं -- धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5117 : विदेह-सदेह 7 — -- — (भाग ४)

१६०४. ‘(भाग ४)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) धारावाहिक

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

१६०५. ‘(भाग ४)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

१६०६. ‘(भाग ४)’कैं संगीत शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) धारावाहिक

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

१६०७. ‘(भाग ४)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१६०८. ‘(भाग ४)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

१६०९. ‘(भाग ४)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) धारावाहिक

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

१६१०. ‘(भाग ४)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

१६११. ‘(भाग ४)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१६१२. ‘(भाग ४)’मे संगीत शिक्षाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) संगीत शिक्षाक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१६१३. ‘(भाग ४)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5118 : विदेह-सदेह 7 — -- — अपाला आत्रेयी (पूर्ण)

१६१४. ‘अपाला आत्रेयी (पूर्ण)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) एकांकी

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

१६१५. ‘अपाला आत्रेयी (पूर्ण)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) एकांकी

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

१६१६. ‘अपाला आत्रेयी (पूर्ण)’कैँ बालानां कृते रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) एकांकी

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

१६१७. ‘अपाला आत्रेयी (पूर्ण)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक एकांकी दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१६१८. ‘अपाला आत्रेयी (पूर्ण)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) एकांकी

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

१६१९. ‘अपाला आत्रेयी (पूर्ण)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) एकांकी

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

१६२०. ‘अपाला आत्रेयी (पूर्ण)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) एकांकी

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

१६२१. ‘अपाला आत्रेयी (पूर्ण)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) एकांकीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१६२२. ‘अपाला आत्रेयी (पूर्ण)’मे बालानां कृतेक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) बालानां कृतेक रूप एकांकी कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१६२३. ‘अपाला आत्रेयी (पूर्ण)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ एकांकी धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5119 : विदेह-सदेह 7 — विद्यानन्द झा — पंजी-प्रबंध (भाग ६)

१६२४. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ६)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) धारावाहिक

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

१६२५. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ६)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

१६२६. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ६)’कैं पंजी-प्रबंध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) धारावाहिक

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

१६२७. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ६)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१६२८. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ६)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

१६२९. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ६)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) धारावाहिक

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

१६३०. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ६)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

१६३१. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ६)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१६३२. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ६)’मे पंजी-प्रबंधक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) पंजी-प्रबंधक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१६३३. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ६)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकेँ धारावाहिक धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5120 : विदेह-सदेह 7 — -- — बच्चा झाक जीवनी (भाग २)

१६३४. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग २)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) धारावाहिक

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

१६३५. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग २)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

१६३६. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग २)’केँ मिथिला आ' संस्कृत रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) धारावाहिक

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

१६३७. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग २)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१६३८. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग २)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

१६३९. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग २)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) धारावाहिक

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

१६४०. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग २)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

१६४१. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग २)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१६४२. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग २)’मे मिथिला आ' संस्कृतक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) मिथिला आ' संस्कृतक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१६४३. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग २)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5121 : विदेह-सदेह 7 — -- — (भाग ३)

१६४४. ‘(भाग ३)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) धारावाहिक

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

१६४५. ‘(भाग ३)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

१६४६. ‘(भाग ३)’कैँ भाषा-प्रौद्योगिकी रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) धारावाहिक

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

१६४७. ‘(भाग ३)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१६४८. ‘(भाग ३)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

१६४९. '(भाग ३)'क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) धारावाहिक

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

१६५०. '(भाग ३)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

१६५१. '(भाग ३)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१६५२. '(भाग ३)'मे भाषा-प्रौद्योगिकीक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) भाषा-प्रौद्योगिकीक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१६५३. '(भाग ३)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5122 : विदेह-सदेह 7 — -- — (भाग ४)

१६५४. '(भाग ४)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) धारावाहिक

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

१६५५. '(भाग ४)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

१६५६. '(भाग ४)'कैँ रचना लिखबासँ पहिने... रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) धारावाहिक

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

१६५७. '(भाग ४)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१६५८. '(भाग ४)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

१६५९. '(भाग ४)'क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) धारावाहिक

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

१६६०. '(भाग ४)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

१६६१. '(भाग ४)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१६६२. '(भाग ४)'मे रचना लिखबासँ पहिने...क रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) रचना लिखबासँ पहिने...क रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१६६३. '(भाग ४)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5123 : विदेह-सदेह 7 — विवेकानन्द झा — Globalization (VN Jha)

१६६४. 'Globalization (VN Jha)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) --

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

१६६५. ‘Globalization (VN Jha)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) --

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

१६६६. ‘Globalization (VN Jha)’कैं अंग्रेजी-गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) --

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

१६६७. ‘Globalization (VN Jha)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

१६६८. ‘Globalization (VN Jha)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) --

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

१६६९. ‘Globalization (VN Jha)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) --

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

१६७०. ‘Globalization (VN Jha)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) --

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

१६७१. ‘Globalization (VN Jha)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

१६७२. ‘Globalization (VN Jha)’मे अंग्रेजी-गद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) अंग्रेजी-गद्यक रूप -- कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

१६७३. 'Globalization (VN Jha)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकेँ -- धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तरमाला — अध्याय २ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (A) सहरसा — अंजनी कुमार वर्मा 'दाऊजी' सहरसाक छथि।

२. (A) सुखाएल अतीत — अंजनी कुमार वर्मा 'दाऊजी'क पद्यमे 'सुखाएल अतीत' सम्मिलित अछि।

३. (A) टनका-वाका, हाइकू, शेनर्यू, हैबून — गजेन्द्र ठाकुर टनका-वाका, हाइकू, शेनर्यू आ हैबून सन जापानी पद्य-शैलीमे रचना केलनि।

४. (A) रुबाइ, कता, गजल, कुण्डलिया — गजेन्द्र ठाकुर रुबाइ, कता, गजल आ कुण्डलिया सन शैलीमे सेहो रचना केलनि।

५. (A) छठि — रवि भूषण पाठकक पद्य 'ऐ बेर छठिमे' छठि-पाबनिसँ जुड़ल अछि।

६. (A) मिझाइत दीप — राजेश मोहन झा 'गुंजन'क पद्यमे 'मिझाइत दीप' सम्मिलित अछि।

७. (A) इजोरियाक भाषा, उपेक्षित, देश — डॉ. शेफालिका वर्माक पद्यमे 'इजोरियाक भाषा', 'उपेक्षित' आ 'देश' सन सामाजिक-दार्शनिक विषय छल।

८. (A) चुनाव, भाषा आ राजनीति — सतीश चन्द्र झाक पद्यमे चुनाव, भाषा आ राजनीति सन विषय छल।

९. (A) हाइकू, शेनर्यू, बोनिहार — मुन्नाजी हाइकू, शेनर्यू आ 'बोनिहार', 'माटिक ललकार' सन रचना केलनि।

१०. (A) तेलुगु — अन्नावरन देवेन्दरक पद्य 'अंतिम शब्द' तेलुगु भाषाक थिक।

११. (A) आजाद गजल — गंगेश गुंजनक 'आजाद गजल' शैलीक रचना विदेह-सदेह ७ मे अछि।

१२. (A) ब्रह्मास्त्र — ज्योति सुनीत चौधरीक हाइकू-टनका शैलीमे 'ब्रह्मास्त्र' सम्मिलित अछि।

१३. (A) 978-93-80538-65-5 — विदेह-सदेह ७ क ISBN 978-93-80538-65-5 थिक।

१४. (A) २०० टाका — विदेह-सदेह ७ क मूल्य भारतीय रू. २००/- छल।

१५. (A) आइ काल्हुक छौंड़ा सभ — चन्द्रशेखर कामतिक पद्यमे 'आइ काल्हुक छौंड़ा सभ' सन समकालीन सामाजिक विषय छल।

१६. (A) २१.११.१९७३ — बलराम साहक जन्म २१.११.१९७३ केँ भेल।

१७. (A) नौआबाखर, मधुबनी — बलराम साहक गाम नौआबाखर, पत्रालय हटनी, भाया घोघरडीहा, जिला मधुबनी (बिहार) अछि।

१८. (A) अधिवक्ता, जिला न्यायालय मधुबनी — बलराम साह पेशासँ जिला न्यायालय, मधुबनीक अधिवक्ता छथि।

१९. (A) आकि नीन टूटि गेल — बलराम साहक पद्यक शीर्षक 'आकि नीन टूटि गेल' थिक।

२०. (B) केवल गद्य — कविता एक स्वप्न-शृंखलाक रूपमे रचित अछि, जाहिमे कवि बेर-बेर कोनो सुखद सामाजिक दृश्य (जेना बिना घूसक इन्दिरा आवास भेटब) देखैत छथि, मुदा हर बेर नीन टूटि जाइत छन्हि — एक विडम्बनात्मक शैली।

२१. (A) जाति-एकता आ पंचैतीक माध्यमसँ — कविताक एक सपनामे लाठी-फरसाक झगड़ाक बाद जाति-जातिक एकता आ पंचैती (हाकिम-दरोगाक संग) सभटा झगड़ा मेटा दैत अछि।

२२. (A) गरीबीक बीच बी.ए.क डिग्री — कविताक एक सपनामे गामक बेटी गरीबीसँ लड़ि कऽ बी.ए.क डिग्री प्राप्त करैत छथि।

२३. (A) आदर्श समाजक स्वप्न आ यथार्थक बीच विडम्बना — कविताक मूल भाव अछि — कवि एक आदर्श, सुखी समाजक स्वप्न देखैत छथि (न्याय, समता, शिक्षा), मुदा हर बेर नीन टूटि कऽ यथार्थमे घुरि अबैत छथि, जे एक गहिर सामाजिक विडम्बना देखबैत अछि।

२४. (A) पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी — सूचकांकमे गजेन्द्र ठाकुरक रचना "पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी" रूपमे देल अछि।

२५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२६. (C) आलोचना + बहुविधाक कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आलोचना + बहुविधाक कविता” अछि।

२७. (D) विदेह सम्पादक — टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह सम्पादक” अछि।

२८. (A) विदेह सम्पादक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “विदेह सम्पादक” रूपमे देखाइत अछि।

२९. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा आलोचना + बहुविधाक कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३१. (D) ई पाठ आलोचना + बहुविधाक कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३३. (B) गजेन्द्र ठाकुरक “पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” प्रविष्टि पद्य, आलोचना + बहुविधाक कविता आ “विदेह सम्पादक; विषय-सूत्र विषय-सूत्र; मैथिली विषय-सूत्र विषय-सूत्र; नव्य-न्याय; विश्व-काव्य तुलना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३४. (A) आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गीत / दुइ गोट भूख / सुखाएल अतीत / बेरोजगारक आत्मा / जाति आ तंत्र / कोसी — सूचकांकमे अंजनी कुमार वर्मा 'दाऊजी'क रचना “आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गीत / दुइ गोट भूख / सुखाएल अतीत / बेरोजगारक आत्मा / जाति आ तंत्र / कोसी” रूपमे देल अछि।

३५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३६. (C) कविता / गीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता / गीत” अछि।

३७. (D) वीर+करुण+व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर+करुण+व्यंग्य” अछि।

३८. (A) करुण आ वीर आ व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ वीर आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

३९. (B) लेखक अंजनी कुमार वर्मा 'दाऊजी', विधा पद्य, उप-विधा कविता / गीत — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४१. (D) ई पाठ कविता / गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४३. (B) अंजनी कुमार वर्मा 'दाऊजी'क “आत्मबल / ओजक भोज / समस्या / वासंती गीत / दुइ गोट भूख / सुखाएल अतीत / बेरोजगारक आत्मा / जाति आ तंत्र / कोसी” प्रविष्टि पद्य, कविता / गीत आ “वीर+करुण+व्यंग्य; ग्राम्शी विषय-सूत्र; कोसी विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४४. (A) खबरदार / गजल — सूचकांकमे मिथिलेश कुमार झाक रचना “खबरदार / गजल” रूपमे देल अछि।

४५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४६. (C) कविता / गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता / गजल” अछि।

४७. (D) वीर+शृंगार-वियोग — टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर+शृंगार-वियोग” अछि।

४८. (A) वीर आ शृंगार आ वियोग — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “वीर आ शृंगार आ वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

४९. (B) लेखक मिथिलेश कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता / गजल — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५१. (D) ई पाठ कविता / गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५३. (B) मिथिलेश कुमार झाक “खबरदार / गजल” प्रविष्टि पद्य, कविता / गजल आ “वीर+श्रृंगार-वियोग; विषय-सूत्र सजगता + विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५४. (A) आकि नींद टूटि गेल — सूचकांकमे बलराम साहक रचना “आकि नींद टूटि गेल” रूपमे देल अछि।

५५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

५७. (D) वीर+शान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर+शान्त” अछि।

५८. (A) वीर आ शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “वीर आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

५९. (B) लेखक बलराम साह, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६३. (B) बलराम साहक “आकि नींद टूटि गेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर+शान्त; जागरण-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६४. (A) कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी — सूचकांकमे गजेन्द्र ठाकुरक रचना “कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” रूपमे देल अछि।

६५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६६. (C) बहुविध पद्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बहुविध पद्य” अछि।

६७. (D) सम्पादक-कवि — टिप्पणीक पहिल संकेत “सम्पादक-कवि” अछि।

६८. (A) सम्पादक-कवि — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “सम्पादक-कवि” रूपमे देखाइत अछि।

६९. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा बहुविध पद्य — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७१. (D) ई पाठ बहुविध पद्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७३. (B) गजेन्द्र ठाकुरक “कुण्डलिया १-४ / टनका-वाका / हाइकू / शेनयू / हैबून / बाइ / कता १-२ / गजल १-२ / कटिहारी” प्रविष्टि पद्य, बहुविध पद्य आ “सम्पादक-कवि; जॉयस विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र; विदेह विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७४. (A) हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश आ गेयर / पाँच केबी / चमारक ऋण / दीवाली के पहिले / धनतेरस राति / चालीसक बात (आ अन्य) — सूचकांकमे रवि भूषण पाठकक रचना “हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश आ गेयर / पाँच केबी / चमारक ऋण / दीवाली के पहिले / धनतेरस राति / चालीसक बात (आ अन्य)” रूपमे देल अछि।

७५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७६. (C) हाइकू + कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हाइकू + कविता” अछि।

७७. (D) दलित विषय-सूत्र — टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित विषय-सूत्र” अछि।

७८. (A) करुण आ वीर आ शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ वीर आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

७९. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू + कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

८०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

८१. (D) ई पाठ हाइकू + कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

८२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

८३. (B) रवि भूषण पाठकक "हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / देश आ गेयर / पाँच केबी / चमारक ऋण / दीवाली के पहिले / धनतेरस राति / चालीसक बात (आ अन्य)" प्रविष्टि पद्य, हाइकू + कविता आ "दलित विषय-सूत्र; 'चमारक ऋण' पहचान-कविता; करुण+वीर+शान्त; विषय-सूत्र" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

८४. (A) मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केहेन खेल / गरम जमाना / पलायन / सुगर स्त्री (आ अन्य) — सूचकांकमे राजेश मोहन झा 'गुंजन'क रचना "मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केहेन खेल / गरम जमाना / पलायन / सुगर स्त्री (आ अन्य)" रूपमे देल अछि।

८५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

८६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कविता" अछि।

८७. (D) हास्य+व्यंग्य+करुण — टिप्पणीक पहिल संकेत "हास्य+व्यंग्य+करुण" अछि।

८८. (A) करुण आ हास्य आ व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "करुण आ हास्य आ व्यंग्य" रूपमे देखाइत अछि।

८९. (B) लेखक राजेश मोहन झा 'गुंजन', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

९०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

९१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

९२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

९३. (B) राजेश मोहन झा 'गुंजन'क "मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / केहेन खेल / गरम जमाना / पलायन / सुगर स्त्री (आ अन्य)" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "हास्य+व्यंग्य+करुण; राजनीतिक व्यंग्य; पलायन; नारीवादी अंत:पाठ" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

९४. (A) सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल — सूचकांकमे नवीन कुमार 'आशा'क रचना "सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल" रूपमे देल अछि।

९५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

९६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कविता" अछि।

९७. (D) करुण आ वीर — टिप्पणीक पहिल संकेत "करुण आ वीर" अछि।

९८. (A) करुण आ वीर — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "करुण आ वीर" रूपमे देखाइत अछि।

९९. (B) लेखक नवीन कुमार 'आशा', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१००. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१०१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१०२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१०३. (B) नवीन कुमार 'आशा'क "सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "करुण आ वीर; रोटी आ रोजी; मैथिली युवा स्वर" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१०४. (A) उद्वादी बनि जाइ — सूचकांकमे शम्भुनाथ झा 'वत्स'क रचना "उद्वादी बनि जाइ" रूपमे देल अछि।

१०५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१०६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कविता" अछि।

१०७. (D) साहित्याचार्य वेदविद् — टिप्पणीक पहिल संकेत "साहित्याचार्य वेदविद्" अछि।

१०८. (A) वीर — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "वीर" रूपमे देखाइत अछि।

१०९. (B) लेखक शम्भुनाथ झा 'वत्स', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

११०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१११. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

११२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

११३. (B) शम्भुनाथ झा 'वत्स'क "उद्वादी बनि जाइ" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "साहित्याचार्य वेदविद्; वीर; मिथिला-पहचान आ आह्वान" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

११४. (A) नव वर्ष — सूचकांकमे अजित मिश्रक रचना "नव वर्ष" रूपमे देल अछि।

११५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

११६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कविता" अछि।

११७. (D) शान्त आ शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत "शान्त आ शृंगार" अछि।

११८. (A) शृंगार आ शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "शृंगार आ शान्त" रूपमे देखाइत अछि।

११९. (B) लेखक अजित मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१२०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१२१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१२२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१२३. (B) अजित मिश्रक "नव वर्ष" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "शान्त आ शृंगार; नववर्षीय मनन" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१२४. (A) नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / विधाता / बच्चा आ बेव्यवस्था / स्मृति-शेष — सूचकांकमे डॉ. शेफालिका वर्माक रचना "नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / विधाता / बच्चा आ बेव्यवस्था / स्मृति-शेष" रूपमे देल अछि।

१२५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१२६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कविता" अछि।

१२७. (D) साहित्य अकादेमी — टिप्पणीक पहिल संकेत "साहित्य अकादेमी" अछि।

१२८. (A) करुण आ बीभत्स — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "करुण आ बीभत्स" रूपमे देखाइत अछि।

१२९. (B) लेखक डॉ. शेफालिका वर्मा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१३०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१३१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१३२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१३३. (B) डॉ. शेफालिका वर्माक "नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / विधाता / बच्चा आ बेव्यवस्था / स्मृति-शेष" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "साहित्य अकादेमी; पर्यावरण-नारीवादी; करुण आ बीभत्स; स्पिवाकक हाशियाकरण-दृष्टि" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१३४. (A) चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पेट / पंच साल / बिहार एखनो बेहाल / नेत्रा तेतरी — सूचकांकमे सतीश चन्द्र झाक रचना "चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पेट / पंच साल / बिहार एखनो बेहाल / नेत्रा तेतरी" रूपमे देल अछि।

१३५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१३६. (C) कविता / व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कविता / व्यंग्य" अछि।

१३७. (D) व्यंग्य आ करुण आ वीर — टिप्पणीक पहिल संकेत "व्यंग्य आ करुण आ वीर" अछि।

१३८. (A) करुण आ वीर आ व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "करुण आ वीर आ व्यंग्य" रूपमे देखाइत अछि।

१३९. (B) लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता / व्यंग्य — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१४०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१४१. (D) ई पाठ कविता / व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१४२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१४३. (B) सतीश चन्द्र झाक "चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पेट / पंच साल / बिहार एखनो बेहाल / नेत्रा तेतरी" प्रविष्टि पद्य, कविता / व्यंग्य आ "व्यंग्य आ करुण आ वीर; ग्राम्शीक चुनावी राजनीति-दृष्टि; बिहार चेतना" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१४४. (A) विडम्बना / प्रतीक्षा — सूचकांकमे सुबोध कुमार ठाकुरक रचना "विडम्बना / प्रतीक्षा" रूपमे देल अछि।

१४५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१४६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कविता" अछि।

१४७. (D) करुण आ शान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत "करुण आ शान्त" अछि।

१४८. (A) करुण आ शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "करुण आ शान्त" रूपमे देखाइत अछि।

१४९. (B) लेखक सुबोध कुमार ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१५०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१५१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१५२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१५३. (B) सुबोध कुमार ठाकुरक "विडम्बना / प्रतीक्षा" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "करुण आ शान्त; अस्तित्वगत प्रतीक्षा" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१५४. (A) दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह — सूचकांकमे किशन कारीगरक रचना "दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह" रूपमे देल अछि।

१५५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१५६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कविता" अछि।

१५७. (D) करुण आ शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत "करुण आ शृंगार" अछि।

१५८. (A) करुण आ शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "करुण आ शृंगार" रूपमे देखाइत अछि।

१५९. (B) लेखक किशन कारीगर, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१६०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१६१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१६२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१६३. (B) किशन कारीगरक "दौगल चलि जाएब गाम / एकटा तँ ओ छलीह" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "करुण आ शृंगार; प्रवास आ हानि" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१६४. (A) कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत — सूचकांकमे राम विलास साहुक रचना "कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत" रूपमे देल अछि।

१६५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१६६. (C) कविता / गीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कविता / गीत" अछि।

१६७. (D) शृंगार आ शान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत "शृंगार आ शान्त" अछि।

१६८. (A) शृंगार आ शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "शृंगार आ शान्त" रूपमे देखाइत अछि।

१६९. (B) लेखक राम विलास साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता / गीत — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१७०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१७१. (D) ई पाठ कविता / गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१७२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१७३. (B) राम विलास साहुक "कोइली कूहकै आमक डारि / प्रीतक गीत" प्रविष्टि पद्य, कविता / गीत आ "शृंगार आ शान्त; ऋतु-छवि; विद्यापति-परम्परा" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१७४. (A) भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष / सहजता / आउ सुनू कने बात हमर — सूचकांकमे पंकज कुमार झाक रचना "भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष / सहजता / आउ सुनू कने बात हमर" रूपमे देल अछि।

१७५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१७६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कविता" अछि।

१७७. (D) वीर आ करुण — टिप्पणीक पहिल संकेत "वीर आ करुण" अछि।

१७८. (A) करुण आ वीर आ व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "करुण आ वीर आ व्यंग्य" रूपमे देखाइत अछि।

१७९. (B) लेखक पंकज कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१८०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१८१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१८२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१८३. (B) पंकज कुमार झाक "भाई रे अना नै परो / उद्बोधन / रीढ़ विहीन पुरुष / सहजता / आउ सुनू कने बात हमर" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "वीर आ करुण; रीढ़-विहीन पुरुष पर व्यंग्य; सामाजिक जागरण" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१८४. (A) हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार — सूचकांकमे मुन्नाजीक रचना "हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार" रूपमे देल अछि।

१८५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१८६. (C) हाइकू आ कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "हाइकू आ कविता" अछि।

१८७. (D) विहनि कथा आन्दोलनक अग्रणी — टिप्पणीक पहिल संकेत "विहनि कथा आन्दोलनक अग्रणी" अछि।

१८८. (A) करुण आ वीर — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "करुण आ वीर" रूपमे देखाइत अछि।

१८९. (B) लेखक मुन्नाजी, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू आ कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१९०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१९१. (D) ई पाठ हाइकू आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१९२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१९३. (B) मुन्नाजीक "हाइकू / शेनयू / बोनिहार / माटिक ललकार" प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ कविता आ "विहनि कथा आन्दोलनक अग्रणी; करुण आ वीर; श्रमिकक स्वर; ग्राम्शी" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१९४. (A) हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जातक खेल / स्वतन्त्रता दिवस / मिथिला चित्रकला (आ अन्य) — सूचकांकमे ज्योति सुनीत चौधरीक रचना "हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जातक खेल / स्वतन्त्रता दिवस / मिथिला चित्रकला (आ अन्य)" रूपमे देल अछि।

१९५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१९६. (C) हाइकू-टनका आ कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "हाइकू-टनका आ कविता" अछि।

१९७. (D) लन्दन-निवासी — टिप्पणीक पहिल संकेत “लन्दन-निवासी” अछि।

१९८. (A) लन्दन-निवासी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “लन्दन-निवासी” रूपमे देखाइत अछि।

१९९. (B) लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू-टनका आ कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२००. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२०१. (D) ई पाठ हाइकू-टनका आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२०२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२०३. (B) ज्योति सुनीत चौधरीक “हाइकू-टनका / भ्रष्टाचार / जीतक परिभाषा / जातक खेल / स्वतन्त्रता दिवस / मिथिला चित्रकला (आ अन्य)” प्रविष्टि पद्य, हाइकू-टनका आ कविता आ “लन्दन-निवासी; स्पिवाकक प्रवासी-दृष्टि; भ्रष्टाचार-विरोधी; मिथिला चित्रकला; जात्यन्धता-आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२०४. (A) तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद) — सूचकांकमे अग्रावरन देवेन्द्रक रचना “तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)” रूपमे देल अछि।

२०५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२०६. (C) अनूदित कविता (तेलुगुसँ मैथिली) — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनूदित कविता (तेलुगुसँ मैथिली)” अछि।

२०७. (D) तेलुगुसँ मैथिली — टिप्पणीक पहिल संकेत “तेलुगुसँ मैथिली” अछि।

२०८. (A) तेलुगुसँ मैथिली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “तेलुगुसँ मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

२०९. (B) लेखक अग्रावरन देवेन्द्र, विधा पद्य, उप-विधा अनूदित कविता (तेलुगुसँ मैथिली) — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२१०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२११. (D) ई पाठ अनूदित कविता (तेलुगुसँ मैथिली)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२१२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२१३. (B) अग्रावरन देवेन्द्रक “तेलुगु पद्य — अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि पद्य, अनूदित कविता (तेलुगुसँ मैथिली) आ “तेलुगुसँ मैथिली; बेन्यामिनक अनुवाद-दृष्टि; अन्तर-साहित्यिक आदान-प्रदान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२१४. (A) नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक रंग अनेक रंग — सूचकांकमे गिरीश चन्द्र लालक रचना “नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक रंग अनेक रंग” रूपमे देल अछि।

२१५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२१६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

२१७. (D) शान्त आ शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ शृंगार” अछि।

२१८. (A) शृंगार आ शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

२१९. (B) लेखक गिरीश चन्द्र लाल, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२२०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२२१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२२२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२२३. (B) गिरीश चन्द्र लालक “नील अकास / शुभ भात / मन में भेल अछि भोर / एक रंग अनेक रंग” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ शृंगार; आकाश-छवि; भोरक रूपक; आशावाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२२४. (A) आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१० — सूचकांकमे गंगेश गुंजनक रचना “आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१०” रूपमे देल अछि।

२२५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२२६. (C) आजाद गजल आ कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आजाद गजल आ कविता” अछि।

२२७. (D) साहित्य अकादेमी — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी” अछि।

२२८. (A) साहित्य अकादेमी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “साहित्य अकादेमी” रूपमे देखाइत अछि।

२२९. (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा आजाद गजल आ कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२३०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२३१. (D) ई पाठ आजाद गजल आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२३२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२३३. (B) गंगेश गुंजनक “आजाद गजल १-२ / स्वतन्त्रता दिवस २०१०” प्रविष्टि पद्य, आजाद गजल आ कविता आ “साहित्य अकादेमी; आजाद गजल; स्वतन्त्रता-दिवस मनन; बाख्तिनक बहु-स्वरीयता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२३४. (A) भेल एहेन अवतार छल — सूचकांकमे मनीष झा 'बौआभाइ'क रचना “भेल एहेन अवतार छल” रूपमे देल अछि।

२३५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२३६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

२३७. (D) अद्भुत आ व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “अद्भुत आ व्यंग्य” अछि।

२३८. (A) अद्भुत आ व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “अद्भुत आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

२३९. (B) लेखक मनीष झा 'बौआभाइ', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२४०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२४१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२४२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२४३. (B) मनीष झा 'बौआभाइ'क “भेल एहेन अवतार छल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अद्भुत आ व्यंग्य; अवतार-रूपक; विदेहक नव स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२४४. (A) जन्मभूमि — सूचकांकमे लालबाबू कर्णक रचना “जन्मभूमि” रूपमे देल अछि।

२४५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२४६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

२४७. (D) वात्सल्य आ शान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “वात्सल्य आ शान्त” अछि।

२४८. (A) शान्त आ वात्सल्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त आ वात्सल्य” रूपमे देखाइत अछि।

२४९. (B) लेखक लालबाबू कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२५०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२५१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२५२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२५३. (B) लालबाबू कर्णक “जन्मभूमि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वात्सल्य आ शान्त; जन्मभूमिकेँ पहचान रूपमे देखब; मिथिला-लगाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२५४. (A) आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी / गीत — सूचकांकमे चन्द्रशेखर कामितक रचना “आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी / गीत” रूपमे देल अछि।

२५५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२५६. (C) कविता / गीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता / गीत” अछि।

२५७. (D) हास्य आ शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ शृंगार” अछि।

२५८. (A) शृंगार आ हास्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ हास्य” रूपमे देखाइत अछि।

२५९. (B) लेखक चन्द्रशेखर कामित, विधा पद्य, उप-विधा कविता / गीत — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२६०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२६१. (D) ई पाठ कविता / गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२६२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२६३. (B) चन्द्रशेखर कामितक “आइ कास्तुक छाड़ा सभ / दुनू परानी फूकि-फूकि पी / गीत” प्रविष्टि पद्य, कविता / गीत आ “हास्य आ शृंगार; घरूआ हास्य; लोक-संवेदना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२६४. (A) हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे — सूचकांकमे मनोज झा 'मुक्ति'क रचना “हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे” रूपमे देल अछि।

२६५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२६६. (C) हाइकू आ कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हाइकू आ कविता” अछि।

२६७. (D) शान्त आ व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ व्यंग्य” अछि।

२६८. (A) शान्त आ व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

२६९. (B) लेखक मनोज झा 'मुक्ति', विधा पद्य, उप-विधा हाइकू आ कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२७०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२७१. (D) ई पाठ हाइकू आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२७२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२७३. (B) मनोज झा 'मुक्ति'क “हाइकू / देखाबटी छोड़ि दे” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ कविता आ “शान्त आ व्यंग्य; पाखण्ड-आलोचना; सूक्ष्मतावाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२७४. (A) श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन — सूचकांकमे राजेन्द्र चौधरीक रचना “श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन” रूपमे देल अछि।

२७५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२७६. (C) भजन — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भजन” अछि।

२७७. (D) भक्ति रस — टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति रस” अछि।

२७८. (A) भक्ति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “भक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

२७९. (B) लेखक राजेन्द्र चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा भजन — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२८०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२८१. (D) ई पाठ भजनक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२८२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२८३. (B) राजेन्द्र चौधरीक “श्रीकृष्ण भजन / म्रतराक भजन” प्रविष्टि पद्य, भजन आ “भक्ति रस; भक्ति-परम्परा; भक्तिपरक रूप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२८४. (A) वन्दना — सूचकांकमे रमाकान्त राय 'रमा'क रचना “वन्दना” रूपमे देल अछि।

२८५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२८६. (C) वन्दना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “वन्दना” अछि।

२८७. (D) भक्ति आ शान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति आ शान्त” अछि।

२८८. (A) शान्त आ भक्ति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त आ भक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

२८९. (B) लेखक रमाकान्त राय 'रमा', विधा पद्य, उप-विधा वन्दना — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२९०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२९१. (D) ई पाठ वन्दनाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२९२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२९३. (B) रमाकान्त राय 'रमा'क “वन्दना” प्रविष्टि पद्य, वन्दना आ “भक्ति आ शान्त; स्तुतिपरक कविता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२९४. (A) गीत — सूचकांकमे प्रकाश प्रेमीक रचना “गीत” रूपमे देल अछि।

२९५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२९६. (C) गीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

२९७. (D) शृंगार आ शान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार आ शान्त” अछि।

२९८. (A) शृंगार आ शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

२९९. (B) लेखक प्रकाश प्रेमी, विधा पद्य, उप-विधा गीत — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३००. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३०१. (D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३०२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३०३. (B) प्रकाश प्रेमीक “गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “शृंगार आ शान्त; गीत-परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३०४. (A) कैक्टस जक दिल / बलि — सूचकांकमे सुमन झा 'सृजन'क रचना “कैक्टस जक दिल / बलि” रूपमे देल अछि।

३०५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३०६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

३०७. (D) करुण आ व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ व्यंग्य” अछि।

३०८. (A) करुण आ व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

३०९. (B) लेखक सुमन झा 'सृजन', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३१०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३११. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३१२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३१३. (B) सुमन झा 'सृजन'क “कैक्टस जक दिल / बलि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ व्यंग्य; कैक्टस-दिल रूपक; बलिदान-विषय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३१४. (A) भलमानुस समाज — सूचकांकमे शिवकुमार मिश्रक रचना “भलमानुस समाज” रूपमे देल अछि।

३१५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३१६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

३१७. (D) हास्य आ व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ व्यंग्य” अछि।

३१८. (A) हास्य आ व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “हास्य आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

३१९. (B) लेखक शिवकुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३२०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३२१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३२२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३२३. (B) शिवकुमार मिश्रक “भलमानुस समाज” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ व्यंग्य; भलमानुस समाजक विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३२४. (A) भट / भावाञ्जलि — सूचकांकमे डॉ. बचेश्वर झाक रचना “भट / भावाञ्जलि” रूपमे देल अछि।

३२५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३२६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

३२७. (D) शान्त आ करुण — टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ करुण” अछि।

३२८. (A) करुण आ शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

३२९. (B) लेखक डॉ. बचेश्वर झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३३०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३३१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३३२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३३३. (B) डॉ. बचेश्वर झाक “भट / भावाञ्जलि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ करुण; ग्राम्य-संवेदना आ शोकगीतात्मकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३३४. (A) सय — सूचकांकमे श्यामल सुमनक रचना “सय” रूपमे देल अछि।

३३५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३३६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

३३७. (D) दोहा-परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “दोहा-परम्परा” अछि।

३३८. (A) शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

३३९. (B) लेखक श्यामल सुमन, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३४०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३४१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३४२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३४३. (B) श्यामल सुमनक “सय” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दोहा-परम्परा; शान्त; सूक्ष्मतावाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३४४. (A) उपराग / भूल कतए भेल — सूचकांकमे जय प्रकाश मंडलक रचना “उपराग / भूल कतए भेल” रूपमे देल अछि।

३४५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३४६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

३४७. (D) करुण आ शान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ शान्त” अछि।

३४८. (A) करुण आ शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

३४९. (B) लेखक जय प्रकाश मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३५०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३५१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३५२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३५३. (B) जय प्रकाश मंडलक “उपराग / भूल कतए भेल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शान्त; ग्रहण-रूपक; आत्म-प्रश्नाकुलता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३५४. (A) दस गोट क्षणिका — सूचकांकमे सत्येश्वर कुमार झाक रचना “दस गोट क्षणिका” रूपमे देल अछि।

३५५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३५६. (C) क्षणिका — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “क्षणिका” अछि।

३५७. (D) शान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त” अछि।

३५८. (A) शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

३५९. (B) लेखक सत्येश्वर कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा क्षणिका — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३६०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३६१. (D) ई पाठ क्षणिकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३६२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३६३. (B) सत्येश्वर कुमार झाक “दस गोट क्षणिका” प्रविष्टि पद्य, क्षणिका आ “शान्त; दस सूक्ष्म क्षण-चित्र; चेखवक संक्षिप्ति-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३६४. (A) कोसी — सूचकांकमे कपिलेश्वर साहुक रचना “कोसी” रूपमे देल अछि।

३६५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३६६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

३६७. (D) रौद्र आ करुण — टिप्पणीक पहिल संकेत “रौद्र आ करुण” अछि।

३६८. (A) करुण आ रौद्र — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ रौद्र” रूपमे देखाइत अछि।

३६९. (B) लेखक कपिलेश्वर साहु, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३७०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३७१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३७२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३७३. (B) कपिलेश्वर साहुक “कोसी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रौद्र आ करुण; २००८ क कोसी-बाढ़; पर्यावरण आ दलित-दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३७४. (A) स्वागत गीत — सूचकांकमे राधाकान्त मंडल 'रमण'क रचना “स्वागत गीत” रूपमे देल अछि।

३७५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३७६. (C) गीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

३७७. (D) वात्सल्य आ शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत “वात्सल्य आ शृंगार” अछि।

३७८. (A) शृंगार आ वात्सल्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ वात्सल्य” रूपमे देखाइत अछि।

३७९. (B) लेखक राधाकान्त मंडल 'रमण', विधा पद्य, उप-विधा गीत — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३८०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३८१. (D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३८२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३८३. (B) राधाकान्त मंडल 'रमण'क “स्वागत गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “वात्सल्य आ शृंगार; स्वागत-गीत परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३८४. (A) किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२ — सूचकांकमे धीरेन्द्र प्रेमर्षिक रचना “किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२” रूपमे देल अछि।

३८५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३८६. (C) फगुआ गीत आ गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “फगुआ गीत आ गजल” अछि।

३८७. (D) हास्य आ शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ शृंगार” अछि।

३८८. (A) शृंगार आ हास्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ हास्य” रूपमे देखाइत अछि।

३८९. (B) लेखक धीरेन्द्र प्रेमर्षि, विधा पद्य, उप-विधा फगुआ गीत आ गजल — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३९०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३९१. (D) ई पाठ फगुआ गीत आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३९२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३९३. (B) धीरेन्द्र प्रेमर्षिक “किछु रंग फगुआक / फगुआ गीत / गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, फगुआ गीत आ गजल आ “हास्य आ शृंगार; फगुआ-परम्परा; बाख्तिनक लोक-उत्सवी दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३९४. (A) गीत — सूचकांकमे सरोज 'खिलाड़ी'क रचना “गीत” रूपमे देल अछि।

३९५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३९६. (C) गीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

३९७. (D) गीत-परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “गीत-परम्परा” अछि।

३९८. (A) गीत-परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “गीत-परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

३९९. (B) लेखक सरोज 'खिलाड़ी', विधा पद्य, उप-विधा गीत — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४००. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४०१. (D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४०२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४०३. (B) सरोज 'खिलाड़ी'क “गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “गीत-परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४०४. (A) गीत १-२ / जनसंख्या — सूचकांकमे नन्द विलास रायक रचना “गीत १-२ / जनसंख्या” रूपमे देल अछि।

४०५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४०६. (C) गीत आ कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत आ कविता” अछि।

४०७. (D) जन्म: 02.01.1957 — टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: 02.01.1957” अछि।

४०८. (A) व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

४०९. (B) लेखक नन्द विलास राय, विधा पद्य, उप-विधा गीत आ कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४१०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४११. (D) ई पाठ गीत आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४१२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४१३. (B) नन्द विलास रायक “गीत १-२ / जनसंख्या” प्रविष्टि पद्य, गीत आ कविता आ “जन्म: 02.01.1957; गीत आ व्यंग्य; जनसंख्या-संकट पर व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४१४. (A) शान्ति दूत परवा — सूचकांकमे विनीत ठाकुरक रचना “शान्ति दूत परवा” रूपमे देल अछि।

४१५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४१६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

४१७. (D) शान्त आ वीर — टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ वीर” अछि।

४१८. (A) वीर आ शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “वीर आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

४१९. (B) लेखक विनीत ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४२०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४२१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४२२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४२३. (B) विनीत ठाकुरक “शान्ति दूत परवा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ वीर; शान्ति-दूत रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४२४. (A) गीत १-२ — सूचकांकमे इन्द्रकान्त झाक रचना “गीत १-२” रूपमे देल अछि।

४२५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४२६. (C) गीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

४२७. (D) शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।

४२८. (A) शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

४२९. (B) लेखक इन्द्रकान्त झा, विधा पद्य, उप-विधा गीत — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४३०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४३१. (D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४३२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४३३. (B) इन्द्रकान्त झाक “गीत १-२” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “श्रृंगार; गीतात्मक परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४३४. (A) जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी चरित्र (आ अन्य) — सूचकांकमे मनोज कुमार मंडलक रचना “जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी चरित्र (आ अन्य)” रूपमे देल अछि।

४३५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४३६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

४३७. (D) करुण आ हास्य आ वीर — टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ हास्य आ वीर” अछि।

४३८. (A) करुण आ वीर आ हास्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ वीर आ हास्य” रूपमे देखाइत अछि।

४३९. (B) लेखक मनोज कुमार मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४४०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४४१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४४२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४४३. (B) मनोज कुमार मंडलक “जिनगी / फैशनक धमाल / चाह / मिथिला / बेटी / नारी चरित्र (आ अन्य)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ हास्य आ वीर; ‘बेटी’मे नारीवादी स्वर; मिथिला-पहचान; फैशन-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४४४. (A) हमर गाम — सूचकांकमे डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्माक रचना “हमर गाम” रूपमे देल अछि।

४४५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४४६. (C) दम्पति कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “दम्पति कविता” अछि।

४४७. (D) दम्पति-लेखन परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “दम्पति-लेखन परम्परा” अछि।

४४८. (A) शान्त आ वात्सल्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त आ वात्सल्य” रूपमे देखाइत अछि।

४४९. (B) लेखक डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्मा, विधा पद्य, उप-विधा दम्पति कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४५०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४५१. (D) ई पाठ दम्पति कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४५२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४५३. (B) डॉ. राजीव कुमार वर्मा आ डॉ. जया वर्माक “हमर गाम” प्रविष्टि पद्य, दम्पति कविता आ “दम्पति-लेखन परम्परा; शान्त आ वात्सल्य; संयुक्त लेखकीयता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४५४. (A) गजल / गीत — सूचकांकमे रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क रचना “गजल / गीत” रूपमे देल अछि।

४५५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४५६. (C) गजल आ गीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल आ गीत” अछि।

४५७. (D) जन्म: १९५१ — टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: १९५१” अछि।

४५८. (A) जन्म: १९५१ — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “जन्म: १९५१” रूपमे देखाइत अछि।

४५९. (B) लेखक रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर', विधा पद्य, उप-विधा गजल आ गीत — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४६०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४६१. (D) ई पाठ गजल आ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४६२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४६३. (B) रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क "गजल / गीत" प्रविष्टि पद्य, गजल आ गीत आ "जन्म: १९५१; विदेह-सहभागिता; लोक-आधुनिक सेतु" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४६४. (A) वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन — सूचकांकमे कामिनी कामायनीक रचना "वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन" रूपमे देल अछि।

४६५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४६६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कविता" अछि।

४६७. (D) नारी कवि — टिप्पणीक पहिल संकेत "नारी कवि" अछि।

४६८. (A) शृंगार आ बीभत्स — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "शृंगार आ बीभत्स" रूपमे देखाइत अछि।

४६९. (B) लेखक कामिनी कामायनी, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४७०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४७१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४७२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४७३. (B) कामिनी कामायनीक "वसन्त / बाजारमे स्त्री / बंजारा मोन" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "नारी कवि; शृंगार आ बीभत्स; स्पिवाकक वस्तुकरण-दृष्टि; बाजार-आलोचना" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४७४. (A) गीत — सूचकांकमे बेचन ठाकुरक रचना "गीत" रूपमे देल अछि।

४७५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४७६. (C) गीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "गीत" अछि।

४७७. (D) भिखारी ठाकुर परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत "भिखारी ठाकुर परम्परा" अछि।

४७८. (A) भिखारी ठाकुर परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "भिखारी ठाकुर परम्परा" रूपमे देखाइत अछि।

४७९. (B) लेखक बेचन ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गीत — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४८०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४८१. (D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४८२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४८३. (B) बेचन ठाकुरक "गीत" प्रविष्टि पद्य, गीत आ "भिखारी ठाकुर परम्परा; लोक-संवेदना" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४८४. (A) दिल्लीमे... — सूचकांकमे रमण कुमार सिंहक रचना "दिल्लीमे..." रूपमे देल अछि।

४८५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४८६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कविता" अछि।

४८७. (D) करुण आ व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत "करुण आ व्यंग्य" अछि।

४८८. (A) करुण आ व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "करुण आ व्यंग्य" रूपमे देखाइत अछि।

४८९. (B) लेखक रमण कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४९०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४९१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४९२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४९३. (B) रमण कुमार सिंहक “दिल्लीमे...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ व्यंग्य; बुर्दियो-दृष्टिसँ दिल्ली-क्षेत्र; प्रवासी अलगाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४९४. (A) हमर मिथिला / दहेज — सूचकांकमे विज्ञानन्द झा 'विदू'क रचना “हमर मिथिला / दहेज” रूपमे देल अछि।

४९५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४९६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

४९७. (D) विदेह भाषा-सम्पादक — टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह भाषा-सम्पादक” अछि।

४९८. (A) वीर आ रौद्र — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “वीर आ रौद्र” रूपमे देखाइत अछि।

४९९. (B) लेखक विज्ञानन्द झा 'विदू', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५००. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५०१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५०२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५०३. (B) विज्ञानन्द झा 'विदू'क “हमर मिथिला / दहेज” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “विदेह भाषा-सम्पादक; वीर आ रौद्र; दहेज-विरोध आ मिथिला-पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५०४. (A) सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साहस (आ अन्य) — सूचकांकमे इन्दु भूषण कुमारक रचना “सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साहस (आ अन्य)” रूपमे देल अछि।

५०५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५०६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

५०७. (D) वीर आ करुण आ व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर आ करुण आ व्यंग्य” अछि।

५०८. (A) करुण आ वीर आ व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ वीर आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

५०९. (B) लेखक इन्दु भूषण कुमार, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५१०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५११. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५१२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५१३. (B) इन्दु भूषण कुमारक “सफलता हमर रानी / हमर नगरक दास्तान / दहेज / साहस (आ अन्य)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर आ करुण आ व्यंग्य; सफलता-विषयक विडम्बना; नगर-जीवन; साहस-विषय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५१४. (A) नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी / हाइकू-शेनयू (आ ३० आ कविता) — सूचकांकमे विवेकानन्द झाक रचना “नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी / हाइकू-शेनयू (आ ३० आ कविता)” रूपमे देल अछि।

५१५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५१६. (C) कविता / हाइकू — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता / हाइकू” अछि।

५१७. (D) बहुत अधिक सृजनशील — टिप्पणीक पहिल संकेत “बहुत अधिक सृजनशील” अछि।

५१८. (A) करुण आ शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

५१९. (B) लेखक विवेकानन्द झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता / हाइकू — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५२०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५२१. (D) ई पाठ कविता / हाइकूक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५२२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५२३. (B) विवेकानन्द झाक "नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी / हाइकू-शेनयू (आ ३० आ कविता)" प्रविष्टि पद्य, कविता / हाइकू आ "बहुत अधिक सृजनशील; शृंगार आ करुण आ अस्तित्वगत; कामू-संदर्भित आत्महत्या-कविता; हाइडेगरक प्रामाणिकता-दृष्टि" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५२४. (A) किछु हाइकू / गजल — सूचकांकमे रोशन झाक रचना "किछु हाइकू / गजल" रूपमे देल अछि।

५२५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५२६. (C) हाइकू आ गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "हाइकू आ गजल" अछि।

५२७. (D) शान्त आ शृंगार-वियोग — टिप्पणीक पहिल संकेत "शान्त आ शृंगार-वियोग" अछि।

५२८. (A) शृंगार आ शान्त आ वियोग — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "शृंगार आ शान्त आ वियोग" रूपमे देखाइत अछि।

५२९. (B) लेखक रोशन झा, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू आ गजल — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५३०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५३१. (D) ई पाठ हाइकू आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५३२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५३३. (B) रोशन झाक "किछु हाइकू / गजल" प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ गजल आ "शान्त आ शृंगार-वियोग; सूक्ष्मतावाद आ गजल" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५३४. (A) किछु हाइकू-क्षणिका / गजल — सूचकांकमे प्रबीण चौधरी 'तीक'क रचना "किछु हाइकू-क्षणिका / गजल" रूपमे देल अछि।

५३५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५३६. (C) हाइकू आ गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "हाइकू आ गजल" अछि।

५३७. (D) शान्त आ शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत "शान्त आ शृंगार" अछि।

५३८. (A) शृंगार आ शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "शृंगार आ शान्त" रूपमे देखाइत अछि।

५३९. (B) लेखक प्रबीण चौधरी 'तीक', विधा पद्य, उप-विधा हाइकू आ गजल — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५४०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५४१. (D) ई पाठ हाइकू आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५४२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५४३. (B) प्रबीण चौधरी 'तीक'क "किछु हाइकू-क्षणिका / गजल" प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ गजल आ "शान्त आ शृंगार; झलक-कविता" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५४४. (A) क्षणिका — सूचकांकमे सुभाष चन्द्रक रचना "क्षणिका" रूपमे देल अछि।

५४५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५४६. (C) क्षणिका — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "क्षणिका" अछि।

५४७. (D) सूक्ष्मतावादी — टिप्पणीक पहिल संकेत "सूक्ष्मतावादी" अछि।

५४८. (A) सूक्ष्मतावादी — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "सूक्ष्मतावादी" रूपमे देखाइत अछि।

५४९. (B) लेखक सुभाष चन्द्र, विधा पद्य, उप-विधा क्षणिका — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५५०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५५१. (D) ई पाठ क्षणिकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५५२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५५३. (B) सुभाष चन्द्रक "क्षणिका" प्रविष्टि पद्य, क्षणिका आ "सूक्ष्मतावादी; एक-छवि-प्रधान" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५५४. (A) क्षणिका — सूचकांकमे रवीन्द्र कुमार दासक रचना "क्षणिका" रूपमे देल अछि।

५५५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५५६. (C) क्षणिका — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "क्षणिका" अछि।

५५७. (D) शान्त रस — टिप्पणीक पहिल संकेत "शान्त रस" अछि।

५५८. (A) शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "शान्त" रूपमे देखाइत अछि।

५५९. (B) लेखक रवीन्द्र कुमार दास, विधा पद्य, उप-विधा क्षणिका — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५६०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५६१. (D) ई पाठ क्षणिकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५६२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५६३. (B) रवीन्द्र कुमार दासक "क्षणिका" प्रविष्टि पद्य, क्षणिका आ "शान्त रस; शुद्ध अवलोकन" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५६४. (A) हाइकू / शेनयू — सूचकांकमे कुसुम ठाकुरक रचना "हाइकू / शेनयू" रूपमे देल अछि।

५६५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५६६. (C) हाइकू आ शेनयू — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "हाइकू आ शेनयू" अछि।

५६७. (D) नारी कवि — टिप्पणीक पहिल संकेत "नारी कवि" अछि।

५६८. (A) शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "शान्त" रूपमे देखाइत अछि।

५६९. (B) लेखक कुसुम ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू आ शेनयू — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५७०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५७१. (D) ई पाठ हाइकू आ शेनयूक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५७२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५७३. (B) कुसुम ठाकुरक "हाइकू / शेनयू" प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ शेनयू आ "नारी कवि; शान्त; प्रकृति-छवि" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५७४. (A) घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा / खिल रे बदन — सूचकांकमे रमाकान्त झा 'सौराठ'क रचना "घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा / खिल रे बदन" रूपमे देल अछि।

५७५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५७६. (C) कविता / गीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कविता / गीत" अछि।

५७७. (D) करुण आ शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत "करुण आ शृंगार" अछि।

५७८. (A) करुण आ शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "करुण आ शृंगार" रूपमे देखाइत अछि।

५७९. (B) लेखक रमाकान्त झा 'सौराठ', विधा पद्य, उप-विधा कविता / गीत — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५८०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५८१. (D) ई पाठ कविता / गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५८२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५८३. (B) रमाकान्त झा 'सौराठ'क "घर ने पथार अछि टूटल मरैया / चल चल रे हवा / खिल रे बदन" प्रविष्टि पद्य, कविता / गीत आ "करुण आ शृंगार; टूटल घरक रूपक; प्रकृति-गीत" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५८४. (A) एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल गणतन्त्र-दिवस / यमुनाजी / अन्तिम — सूचकांकमे मृदुला प्रधानक रचना "एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल गणतन्त्र-दिवस / यमुनाजी / अन्तिम" रूपमे देल अछि।

५८५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५८६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कविता" अछि।

५८७. (D) नारी कवि — टिप्पणीक पहिल संकेत "नारी कवि" अछि।

५८८. (A) करुण आ वीर आ व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "करुण आ वीर आ व्यंग्य" रूपमे देखाइत अछि।

५८९. (B) लेखक मृदुला प्रधान, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५९०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५९१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५९२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५९३. (B) मृदुला प्रधानक "एकटा आपबीती / ओइ दिन / मिथिलाक माटीमे / कतए गेल गणतन्त्र-दिवस / यमुनाजी / अन्तिम" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "नारी कवि; करुण आ व्यंग्य आ वीर; गणतन्त्र-दिवस शोकगीत; यमुना-पर्यावरण" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५९४. (A) आच्छादन — सूचकांकमे प्रवीण कश्यपक रचना "आच्छादन" रूपमे देल अछि।

५९५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५९६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कविता" अछि।

५९७. (D) शान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत "शान्त" अछि।

५९८. (A) शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "शान्त" रूपमे देखाइत अछि।

५९९. (B) लेखक प्रवीण कश्यप, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६००. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६०१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६०२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६०३. (B) प्रवीण कश्यपक "आच्छादन" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "शान्त; आच्छादन-रूपक" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६०४. (A) आजाद गजल १-२ — सूचकांकमे अरविन्द ठाकुरक रचना "आजाद गजल १-२" रूपमे देल अछि।

६०५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६०६. (C) आजाद गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "आजाद गजल" अछि।

६०७. (D) विदेह गजल-आन्दोलन — टिप्पणीक पहिल संकेत "विदेह गजल-आन्दोलन" अछि।

६०८. (A) वियोग — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "वियोग" रूपमे देखाइत अछि।

६०९. (B) लेखक अरविन्द ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा आजाद गजल — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६१०. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६११. **(D) ई पाठ आजाद गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६१२. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६१३. **(B) अरविन्द ठाकुरक "आजाद गजल १-२" प्रविष्टि पद्य, आजाद गजल आ "विदेह गजल-आन्दोलन; वियोग आ राजनीतिक" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६१४. **(A) हमर गाम** — सूचकांकमे धीरेश्वर कुमारक रचना "हमर गाम" रूपमे देल अछि।

६१५. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६१६. **(C) कविता** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कविता" अछि।

६१७. **(D) शान्त आ वात्सल्य** — टिप्पणीक पहिल संकेत "शान्त आ वात्सल्य" अछि।

६१८. **(A) शान्त आ वात्सल्य** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "शान्त आ वात्सल्य" रूपमे देखाइत अछि।

६१९. **(B) लेखक धीरेश्वर कुमार, विधा पद्य, उप-विधा कविता** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६२०. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६२१. **(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६२२. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६२३. **(B) धीरेश्वर कुमारक "हमर गाम" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "शान्त आ वात्सल्य; गामक स्मृति" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६२४. **(A) ट्रेनक चोरबा** — सूचकांकमे अखिलेश कुमार मंडलक रचना "ट्रेनक चोरबा" रूपमे देल अछि।

६२५. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६२६. **(C) कविता** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कविता" अछि।

६२७. **(D) हास्य आ व्यंग्य** — टिप्पणीक पहिल संकेत "हास्य आ व्यंग्य" अछि।

६२८. **(A) हास्य आ व्यंग्य** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "हास्य आ व्यंग्य" रूपमे देखाइत अछि।

६२९. **(B) लेखक अखिलेश कुमार मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६३०. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६३१. **(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६३२. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६३३. **(B) अखिलेश कुमार मंडलक "ट्रेनक चोरबा" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "हास्य आ व्यंग्य; ट्रेन-चोर प्रसंग; काफ्काक विसंगति-दृष्टि" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६३४. **(A) अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोकिलक** — सूचकांकमे कालीनाथ झाक रचना "अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोकिलक" रूपमे देल अछि।

६३५. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६३६. **(C) कुण्डलिया आ कविता** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कुण्डलिया आ कविता" अछि।

६३७. **(D) जन्म: 24.06.1946** — टिप्पणीक पहिल संकेत "जन्म: 24.06.1946" अछि।

६३८. **(A) जन्म: 24.06.1946** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "जन्म: 24.06.1946" रूपमे देखाइत अछि।

६३९. **(B) लेखक कालीनाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कुण्डलिया आ कविता** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६४०. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६४१. **(D) ई पाठ कुण्डलिया आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६४२. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६४३. **(B) कालीनाथ झाक "अभिशाप बापक पाप — कुण्डलिया १-७ / एक प्रस्ताविका—कोकिलक" प्रविष्टि पद्य, कुण्डलिया आ कविता आ "जन्म: 24.06.1946; कानपुर; शास्त्रीय कुण्डलिया-रूप; बापक शापक विषय; नव्य-न्याय" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६४४. **(A) आह! जाड़ चलि गेल!** — सूचकांकमे सत्यानन्द पाठकक रचना "आह! जाड़ चलि गेल!" रूपमे देल अछि।

६४५. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६४६. **(C) कविता** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कविता" अछि।

६४७. **(D) हास्य आ शान्त** — टिप्पणीक पहिल संकेत "हास्य आ शान्त" अछि।

६४८. **(A) शान्त आ हास्य** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "शान्त आ हास्य" रूपमे देखाइत अछि।

६४९. **(B) लेखक सत्यानन्द पाठक, विधा पद्य, उप-विधा कविता** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६५०. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६५१. **(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६५२. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६५३. **(B) सत्यानन्द पाठकक "आह! जाड़ चलि गेल!" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "हास्य आ शान्त; जाड़-बिदाइ; ऋतुजन्य हास्य" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६५४. **(A) मैथिल** — सूचकांकमे दयाकान्तक रचना "मैथिल" रूपमे देल अछि।

६५५. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६५६. **(C) कविता** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कविता" अछि।

६५७. **(D) वीर आ शान्त** — टिप्पणीक पहिल संकेत "वीर आ शान्त" अछि।

६५८. **(A) वीर आ शान्त** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "वीर आ शान्त" रूपमे देखाइत अछि।

६५९. **(B) लेखक दयाकान्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६६०. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६६१. **(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६६२. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६६३. **(B) दयाकान्तक "मैथिल" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "वीर आ शान्त; मैथिली-पहचानक समर्थन" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६६४. **(A) गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत** — सूचकांकमे रमेशक रचना "गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत" रूपमे देल अछि।

६६५. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६६६. **(C) गद्य कविता** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "गद्य कविता" अछि।

६६७. **(D) गद्य-कविता** — टिप्पणीक पहिल संकेत "गद्य-कविता" अछि।

६६८. **(A) गद्य-कविता** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "गद्य-कविता" रूपमे देखाइत अछि।

६६९. **(B) लेखक रमेश, विधा पद्य, उप-विधा गद्य कविता** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६७०. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६७१. **(D) ई पाठ गद्य कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६७२. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६७३. **(B) रमेशक "गद्य कविता — डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नामक अद्वैत" प्रविष्टि पद्य, गद्य कविता आ "गद्य-कविता; दार्शनिक अद्वैत-दृष्टि; अद्वैत" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६७४. **(A) बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावनाञ्जलि** — सूचकांकमे शिवशंकर सिंह ठाकुरक रचना "बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावनाञ्जलि" रूपमे देल अछि।

६७५. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६७६. **(C) बाइ आ गजल आ कविता** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "बाइ आ गजल आ कविता" अछि।

६७७. **(D) शृंगार आ करुण** — टिप्पणीक पहिल संकेत "शृंगार आ करुण" अछि।

६७८. **(A) करुण आ शृंगार** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "करुण आ शृंगार" रूपमे देखाइत अछि।

६७९. **(B) लेखक शिवशंकर सिंह ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा बाइ आ गजल आ कविता** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६८०. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६८१. **(D) ई पाठ बाइ आ गजल आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६८२. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६८३. **(B) शिवशंकर सिंह ठाकुरक "बाइ / गजल / लगै छी अहाँ सोना जक / प्रस्तावनाञ्जलि" प्रविष्टि पद्य, बाइ आ गजल आ कविता आ "शृंगार आ करुण; बाइ-रूप; सोनाक उपमा" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६८४. **(A) भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टनका / जीवन** — सूचकांकमे इरा मल्लिकक रचना "भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टनका / जीवन" रूपमे देल अछि।

६८५. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६८६. **(C) कविता आ हाइकू** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कविता आ हाइकू" अछि।

६८७. **(D) नारी कवि** — टिप्पणीक पहिल संकेत "नारी कवि" अछि।

६८८. **(A) करुण आ शान्त** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "करुण आ शान्त" रूपमे देखाइत अछि।

६८९. **(B) लेखक इरा मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा कविता आ हाइकू** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६९०. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६९१. **(D) ई पाठ कविता आ हाइकूक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६९२. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६९३. **(B) इरा मल्लिकक "भोर भेलै / आँखि सुतल नै राइतभरि / हाइकू / शेनयू / टनका / जीवन" प्रविष्टि पद्य, कविता आ हाइकू आ "नारी कवि; करुण आ शान्त; निद्राहीन राति; बहुरूपी शिल्प" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६९४. **(A) हम छी बुद्धिक थोड़** — सूचकांकमे विनीता झाक रचना "हम छी बुद्धिक थोड़" रूपमे देल अछि।

६९५. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६९६. **(C) कविता** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कविता" अछि।

६९७. **(D) हास्य आ शान्त** — टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ शान्त” अछि।

६९८. **(A) शान्त आ हास्य** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त आ हास्य” रूपमे देखाइत अछि।

६९९. **(B) लेखक विनीता झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७००. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७०१. **(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७०२. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७०३. **(B) विनीता झाक “हम छी बुद्धिक थोड़” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ शान्त; अपने बुद्धि पर विनम्र हास्यात्मक विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७०४. **(A) वाणिक लैस** — सूचकांकमे अन्य कुमार चौधरीक रचना “वाणिक लैस” रूपमे देल अछि।

७०५. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७०६. **(C) कविता** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

७०७. **(D) वीर** — टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर” अछि।

७०८. **(A) वीर** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “वीर” रूपमे देखाइत अछि।

७०९. **(B) लेखक अन्य कुमार चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७१०. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७११. **(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७१२. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७१३. **(B) अन्य कुमार चौधरीक “वाणिक लैस” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर; शस्त्रवत् वाणी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७१४. **(A) गजल १-१२** — सूचकांकमे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क रचना “गजल १-१२” रूपमे देल अछि।

७१५. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७१६. **(C) गजल** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

७१७. **(D) विदेह गजल-आन्दोलनक आधार-स्तम्भ** — टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह गजल-आन्दोलनक आधार-स्तम्भ” अछि।

७१८. **(A) शृंगार आ वियोग** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

७१९. **(B) लेखक जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', विधा पद्य, उप-विधा गजल** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७२०. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७२१. **(D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७२२. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७२३. **(B) जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क “गजल १-१२” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “विदेह गजल-आन्दोलनक आधार-स्तम्भ; शृंगार आ वियोग आ दार्शनिक; बाख्तिनक संवादवाद” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७२४. **(A) नजरि / गजल** — सूचकांकमे विकास झा रंजनक रचना “नजरि / गजल” रूपमे देल अछि।

७२५. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७२६. **(C) कविता आ गजल** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता आ गजल” अछि।

७२७. (D) श्रृंगार आ वियोग — टिप्पणीक पहिल संकेत “श्रृंगार आ वियोग” अछि।

७२८. (A) श्रृंगार आ वियोग — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “श्रृंगार आ वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

७२९. (B) लेखक विकास झा रंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता आ गजल — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७३०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७३१. (D) ई पाठ कविता आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७३२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७३३. (B) विकास झा रंजनक “नजरि / गजल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ गजल आ “श्रृंगार आ वियोग; नजरि-कविता आ गजल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७३४. (A) गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति — सूचकांकमे अनिल मल्लिकक रचना “गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति” रूपमे देल अछि।

७३५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७३६. (C) गीत आ गजल आ कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत आ गजल आ कविता” अछि।

७३७. (D) श्रृंगार आ वीर — टिप्पणीक पहिल संकेत “श्रृंगार आ वीर” अछि।

७३८. (A) वीर आ श्रृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “वीर आ श्रृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

७३९. (B) लेखक अनिल मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा गीत आ गजल आ कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७४०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७४१. (D) ई पाठ गीत आ गजल आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७४२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७४३. (B) अनिल मल्लिकक “गीत / आजाद गजल १-३ / हम कहि दैत छी / स्वीकारोक्ति” प्रविष्टि पद्य, गीत आ गजल आ कविता आ “श्रृंगार आ वीर; स्वीकारोक्ति-कविता; बहुरूपी विस्तार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७४४. (A) पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी — सूचकांकमे आनन्द झा 'मैथिल'क रचना “पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी” रूपमे देल अछि।

७४५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७४६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

७४७. (D) हास्य आ करुण — टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ करुण” अछि।

७४८. (A) करुण आ हास्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ हास्य” रूपमे देखाइत अछि।

७४९. (B) लेखक आनन्द झा 'मैथिल', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७५०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७५१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७५२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७५३. (B) आनन्द झा 'मैथिल'क “पंचैती / हमरा भेटल एक टा चिट्ठी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ करुण; गामक पंचैती-कविता; चिट्ठी-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७५४. (A) जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा — सूचकांकमे भात राय भट्टक रचना “जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा” रूपमे देल अछि।

७५५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७५६. **(C) कविता** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

७५७. **(D) नेपाल** — टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल” अछि।

७५८. **(A) वीर आ भक्ति** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “वीर आ भक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

७५९. **(B) लेखक भात राय भट्ट, विधा पद्य, उप-विधा कविता** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७६०. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७६१. **(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७६२. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७६३. **(B) भात राय भट्टक “जन्म लेलौं हम जतए सीता माएक अछि गाम / यात्रा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नेपाल; सीताक जन्मभूमि; वीर आ भक्ति; तीर्थयात्रा-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७६४. **(A) कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार** — सूचकांकमे अमित मोहन झाक रचना “कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार” रूपमे देल अछि।

७६५. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७६६. **(C) कविता** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

७६७. **(D) शान्त आ शृंगार** — टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ शृंगार” अछि।

७६८. **(A) शृंगार आ शान्त** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

७६९. **(B) लेखक अमित मोहन झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७७०. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७७१. **(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७७२. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७७३. **(B) अमित मोहन झाक “कोना जीवन बिततै / आएल प्राखीक त्योहार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ शृंगार; जीवन-प्रश्न आ त्योहार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७७४. **(A) संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक जीवनक** — सूचकांकमे गुलसारिकाक रचना “संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक जीवनक” रूपमे देल अछि।

७७५. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७७६. **(C) कविता** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

७७७. **(D) नारी कवि** — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी कवि” अछि।

७७८. **(A) करुण आ शृंगार आ शान्त** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ शृंगार आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

७७९. **(B) लेखक गुलसारिका, विधा पद्य, उप-विधा कविता** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७८०. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७८१. **(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७८२. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७८३. **(B) गुलसारिकाक “संतोख अछि / जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह / अहाँक जीवनक” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी कवि; शान्त आ करुण आ शृंगार; बहिनक बाल्यकाल-स्मृति; सन्तोष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७८४. **(A) आजाद गजल १-४** — सूचकांकमे भावना नवीनक रचना “आजाद गजल १-४” रूपमे देल अछि।

७८५. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७८६. **(C) आजाद गजल** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आजाद गजल” अछि।

७८७. **(D) नारी गजल** — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी गजल” अछि।

७८८. **(A) शृंगार आ वियोग** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

७८९. **(B) लेखक भावना नवीन, विधा पद्य, उप-विधा आजाद गजल** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७९०. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७९१. **(D) ई पाठ आजाद गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७९२. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७९३. **(B) भावना नवीनक “आजाद गजल १-४” प्रविष्टि पद्य, आजाद गजल आ “नारी गजल; शृंगार आ वियोग; गजल-रूपमे स्त्री-स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७९४. **(A) बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल / चक्रव्यूह** — सूचकांकमे मिहिर झाक रचना “बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल / चक्रव्यूह” रूपमे देल अछि।

७९५. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७९६. **(C) बहुविध पद्य** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बहुविध पद्य” अछि।

७९७. **(D) सम्पादकक अनुसार श्रेष्ठ मैथिली बाइ** — टिप्पणीक पहिल संकेत “सम्पादकक अनुसार श्रेष्ठ मैथिली बाइ” अछि।

७९८. **(A) शृंगार** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

७९९. **(B) लेखक मिहिर झा, विधा पद्य, उप-विधा बहुविध पद्य** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

८००. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

८०१. **(D) ई पाठ बहुविध पद्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

८०२. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

८०३. **(B) मिहिर झाक “बाइ १-१२ / बन्द / कसीदा १-२ / टनका-हाइकू-शेनयू / गजल / चक्रव्यूह” प्रविष्टि पद्य, बहुविध पद्य आ “सम्पादकक अनुसार श्रेष्ठ मैथिली बाइ; बहुरूपी शिल्प अस्पष्ट-विदेशी-शब्द; शृंगार आ दार्शनिक; फारसी-अरबी रूप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

८०४. **(A) की इएह कहबैछ सुन्दरता?** — सूचकांकमे डॉ. शशिधर कुमारक रचना “की इएह कहबैछ सुन्दरता?” रूपमे देल अछि।

८०५. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

८०६. **(C) कविता** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

८०७. **(D) अद्भुत आ व्यंग्य** — टिप्पणीक पहिल संकेत “अद्भुत आ व्यंग्य” अछि।

८०८. **(A) अद्भुत आ व्यंग्य** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “अद्भुत आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

८०९. **(B) लेखक डॉ. शशिधर कुमार, विधा पद्य, उप-विधा कविता** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

८१०. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

८११. **(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

८१२. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

८१३. **(B) डॉ. शशिधर कुमारक “की इएह कहबैछ सुन्दरता?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अद्भुत आ व्यंग्य; सौन्दर्य पर प्रश्न; प्लेटोक सौन्दर्य-सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

८१४. **(A) नेता** — सूचकांकमे अमरेन्द्र कुमार मिश्रक रचना “नेता” रूपमे देल अछि।

८१५. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

८१६. **(C) कविता** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

८१७. **(D) हास्य आ व्यंग्य** — टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ व्यंग्य” अछि।

८१८. **(A) हास्य आ व्यंग्य** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “हास्य आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

८१९. **(B) लेखक अमरेन्द्र कुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

८२०. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

८२१. **(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

८२२. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

८२३. **(B) अमरेन्द्र कुमार मिश्रक “नेता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ व्यंग्य; नेता-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

८२४. **(A) बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ अन्य)** — सूचकांकमे सुबोध झाक रचना “बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ अन्य)” रूपमे देल अछि।

८२५. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

८२६. **(C) कविता आ शाइरी** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता आ शाइरी” अछि।

८२७. **(D) हास्य आ करुण** — टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ करुण” अछि।

८२८. **(A) करुण आ हास्य** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ हास्य” रूपमे देखाइत अछि।

८२९. **(B) लेखक सुबोध झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता आ शाइरी** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

८३०. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

८३१. **(D) ई पाठ कविता आ शाइरीक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

८३२. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

८३३. **(B) सुबोध झाक “बतहिया / शाइरी १-५ / मनबतिया / जिनगी / वाह रे कपार (आ अन्य)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ शाइरी आ “हास्य आ करुण; बहुरूपी शिल्प; लोक-संवेदना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

८३४. **(A) सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...** — सूचकांकमे मो. गुल हसनक रचना “सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...” रूपमे देल अछि।

८३५. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

८३६. **(C) कविता** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

८३७. **(D) मुसलमान मैथिली स्वर** — टिप्पणीक पहिल संकेत “मुसलमान मैथिली स्वर” अछि।

८३८. **(A) करुण आ व्यंग्य** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

८३९. **(B) लेखक मो. गुल हसन, विधा पद्य, उप-विधा कविता** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

८४०. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

८४१. **(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

८४२. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

८४३. **(B) मो. गुल हसनक “सभटा किसानमे हमहूँ बकलेल...” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मुसलमान मैथिली स्वर; करुण आ व्यंग्य; बुर्दियो बहुलतावाद; किसान-पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

८४४. **(A) बेटी** — सूचकांकमे प्रीति प्रिया झाक रचना “बेटी” रूपमे देल अछि।

८४५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

८४६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

८४७. (D) नारी कवि — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी कवि” अछि।

८४८. (A) करुण आ वीर — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ वीर” रूपमे देखाइत अछि।

८४९. (B) लेखक प्रीति प्रिया झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

८५०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

८५१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

८५२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

८५३. (B) प्रीति प्रिया झाक “बेटी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी कवि; करुण आ वीर; बेटीक असुरक्षा; नारीवादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

८५४. (A) प्रेम / गीत १-२ — सूचकांकमे पवन कुमार साहक रचना “प्रेम / गीत १-२” रूपमे देल अछि।

८५५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

८५६. (C) कविता आ गीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता आ गीत” अछि।

८५७. (D) शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।

८५८. (A) शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

८५९. (B) लेखक पवन कुमार साह, विधा पद्य, उप-विधा कविता आ गीत — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

८६०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

८६१. (D) ई पाठ कविता आ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

८६२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

८६३. (B) पवन कुमार साहक “प्रेम / गीत १-२” प्रविष्टि पद्य, कविता आ गीत आ “शृंगार; प्रेम आ गीत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

८६४. (A) मन पड़ैत अछि — सूचकांकमे स्तुति नारायणक रचना “मन पड़ैत अछि” रूपमे देल अछि।

८६५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

८६६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

८६७. (D) करुण आ शान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ शान्त” अछि।

८६८. (A) करुण आ शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

८६९. (B) लेखक स्तुति नारायण, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

८७०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

८७१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

८७२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

८७३. (B) स्तुति नारायणक “मन पड़ैत अछि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शान्त; स्मृति-व्याकुलता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

८७४. (A) पिताजी — सूचकांकमे स्वाती शाक्यभरीक रचना “पिताजी” रूपमे देल अछि।

८७५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

८७६. **(C) कविता** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

८७७. **(D) वात्सल्य आ करुण** — टिप्पणीक पहिल संकेत “वात्सल्य आ करुण” अछि।

८७८. **(A) करुण आ भक्ति आ वात्सल्य** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ भक्ति आ वात्सल्य” रूपमे देखाइत अछि।

८७९. **(B) लेखक स्वाती शाक्यभरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

८८०. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

८८१. **(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

८८२. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

८८३. **(B) स्वाती शाक्यभरीक “पिताजी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वात्सल्य आ करुण; पिताक प्रति श्रद्धांजलि; सन्तान-भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

८८४. **(A) क्षणिका** — सूचकांकमे अरविन्द रंजन दासक रचना “क्षणिका” रूपमे देल अछि।

८८५. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

८८६. **(C) क्षणिका** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “क्षणिका” अछि।

८८७. **(D) सूक्ष्म अवलोकन** — टिप्पणीक पहिल संकेत “सूक्ष्म अवलोकन” अछि।

८८८. **(A) सूक्ष्म अवलोकन** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “सूक्ष्म अवलोकन” रूपमे देखाइत अछि।

८८९. **(B) लेखक अरविन्द रंजन दास, विधा पद्य, उप-विधा क्षणिका** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

८९०. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

८९१. **(D) ई पाठ क्षणिकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

८९२. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

८९३. **(B) अरविन्द रंजन दासक “क्षणिका” प्रविष्टि पद्य, क्षणिका आ “सूक्ष्म अवलोकन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

८९४. **(A) एलै जिबनक आहार** — सूचकांकमे बि.पि.उदासीक रचना “एलै जिबनक आहार” रूपमे देल अछि।

८९५. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

८९६. **(C) कविता** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

८९७. **(D) करुण** — टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण” अछि।

८९८. **(A) करुण** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण” रूपमे देखाइत अछि।

८९९. **(B) लेखक बि.पि.उदासी, विधा पद्य, उप-विधा कविता** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

९००. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

९०१. **(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

९०२. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

९०३. **(B) बि.पि.उदासीक “एलै जिबनक आहार” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

९०४. **(A) देखियौ अपन देशमे** — सूचकांकमे प्रमोद रंगीलेक रचना “देखियौ अपन देशमे” रूपमे देल अछि।

९०५. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

९०६. **(C) कविता** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

९०७. (D) व्यंग्य आ रौद्र — टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य आ रौद्र” अछि।

९०८. (A) व्यंग्य आ रौद्र — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “व्यंग्य आ रौद्र” रूपमे देखाइत अछि।

९०९. (B) लेखक प्रमोद रंगीले, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

९१०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

९११. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

९१२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

९१३. (B) प्रमोद रंगीलेक “देखियौ अपन देशमे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य आ रौद्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

९१४. (A) अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद गजल १-५ / नवकी बहुरिया — सूचकांकमे रवि मिश्र 'भारद्वाज'क रचना “अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद गजल १-५ / नवकी बहुरिया” रूपमे देल अछि।

९१५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

९१६. (C) कविता आ गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता आ गजल” अछि।

९१७. (D) करुण, व्यंग्य आ शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण, व्यंग्य आ शृंगार” अछि।

९१८. (A) करुण, व्यंग्य आ शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण, व्यंग्य आ शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

९१९. (B) लेखक रवि मिश्र 'भारद्वाज', विधा पद्य, उप-विधा कविता आ गजल — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

९२०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

९२१. (D) ई पाठ कविता आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

९२२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

९२३. (B) रवि मिश्र 'भारद्वाज'क “अन्तिम क्षणमे / मरहम / मतदान / कलेश / आजाद गजल १-५ / नवकी बहुरिया” प्रविष्टि पद्य, कविता आ गजल आ “करुण, व्यंग्य आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

९२४. (A) धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए — सूचकांकमे मधुपनाथ झाक रचना “धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए” रूपमे देल अछि।

९२५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

९२६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

९२७. (D) पर्यावरणीय — टिप्पणीक पहिल संकेत “पर्यावरणीय” अछि।

९२८. (A) शान्त आ करुण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त आ करुण” रूपमे देखाइत अछि।

९२९. (B) लेखक मधुपनाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

९३०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

९३१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

९३२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

९३३. (B) मधुपनाथ झाक “धरती हमरासँ खिसियाएल अछि / आएल वसन्त उल्लास लए” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

९३४. (A) टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना — सूचकांकमे बृषेश चन्द्र लालक रचना “टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना” रूपमे देल अछि।

९३५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

९३६. (C) टनका, हाइकू आ कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “टनका, हाइकू आ कविता” अछि।

९३७. (D) शान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त” अछि।

९३८. (A) शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

९३९. (B) लेखक बृषेश चन्द्र लाल, विधा पद्य, उप-विधा टनका, हाइकू आ कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

९४०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

९४१. (D) ई पाठ टनका, हाइकू आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

९४२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

९४३. (B) बृषेश चन्द्र लालक “टनका / हाइकू-शेनयू / जीवन सपना” प्रविष्टि पद्य, टनका, हाइकू आ कविता आ “शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

९४४. (A) गीत १-३ / आजाद गजल १-२ — सूचकांकमे आशुतोष मिश्रक रचना “गीत १-३ / आजाद गजल १-२” रूपमे देल अछि।

९४५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

९४६. (C) गीत आ गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत आ गजल” अछि।

९४७. (D) शृंगार आ वियोग — टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार आ वियोग” अछि।

९४८. (A) शृंगार आ वियोग — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

९४९. (B) लेखक आशुतोष मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा गीत आ गजल — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

९५०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

९५१. (D) ई पाठ गीत आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

९५२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

९५३. (B) आशुतोष मिश्रक “गीत १-३ / आजाद गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, गीत आ गजल आ “शृंगार आ वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

९५४. (A) ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद) — सूचकांकमे इन्सिता सारंगीक रचना “ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद)” रूपमे देल अछि।

९५५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

९५६. (C) अनूदित कविता (ओड़िया सँ मैथिली) — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनूदित कविता (ओड़िया सँ मैथिली)” अछि।

९५७. (D) ओड़िया सँ मैथिली — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओड़िया सँ मैथिली” अछि।

९५८. (A) ओड़िया सँ मैथिली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “ओड़िया सँ मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

९५९. (B) लेखक इन्सिता सारंगी, विधा पद्य, उप-विधा अनूदित कविता (ओड़िया सँ मैथिली) — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

९६०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

९६१. (D) ई पाठ अनूदित कविता (ओड़िया सँ मैथिली)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

९६२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

९६३. (B) इन्सिता सारंगीक “ओड़िया कविता — हिलकोर (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि पद्य, अनूदित कविता (ओड़िया सँ मैथिली) आ “ओड़िया सँ मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

९६४. (A) शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे) — सूचकांकमे मनोज कुमार झाक रचना “शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे)” रूपमे देल अछि।

९६५. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

९६६. **(C) कविता** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

९६७. **(D) रौद्र आ वीर** — टिप्पणीक पहिल संकेत “रौद्र आ वीर” अछि।

९६८. **(A) रौद्र आ वीर** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “रौद्र आ वीर” रूपमे देखाइत अछि।

९६९. **(B) लेखक मनोज कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

९७०. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

९७१. **(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

९७२. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

९७३. **(B) मनोज कुमार झाक “शासक लोकनिसँ (बाढ़िक सन्दर्भमे)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “रौद्र आ वीर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

९७४. **(A) हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / गजल १-६** — सूचकांकमे शान्तिलक्ष्मी चौधरीक रचना “हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / गजल १-६” रूपमे देल अछि।

९७५. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

९७६. **(C) हाइकू, गद्य कविता आ गजल** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हाइकू, गद्य कविता आ गजल” अछि।

९७७. **(D) नारी कवि** — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी कवि” अछि।

९७८. **(A) शान्त आ शृंगार** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त आ शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

९७९. **(B) लेखक शान्तिलक्ष्मी चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा हाइकू, गद्य कविता आ गजल** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

९८०. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

९८१. **(D) ई पाठ हाइकू, गद्य कविता आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

९८२. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

९८३. **(B) शान्तिलक्ष्मी चौधरीक “हाइकू / गद्य कविता / तिलकोर, बथुआक तीमन / गजल १-६” प्रविष्टि पद्य, हाइकू, गद्य कविता आ गजल आ “शान्त आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

९८४. **(A) हाइकू / क्षण भा** — सूचकांकमे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क रचना “हाइकू / क्षण भा” रूपमे देल अछि।

९८५. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

९८६. **(C) हाइकू आ कविता** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हाइकू आ कविता” अछि।

९८७. **(D) शान्त** — टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त” अछि।

९८८. **(A) शान्त** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

९८९. **(B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा पद्य, उप-विधा हाइकू आ कविता** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

९९०. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

९९१. **(D) ई पाठ हाइकू आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

९९२. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

९९३. **(B) शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “हाइकू / क्षण भा” प्रविष्टि पद्य, हाइकू आ कविता आ “शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

९९४. (A) अन्त — एक अनुभूति / अनुभव — सूचकांकमे नवीन ठाकुरक रचना “अन्त — एक अनुभूति / अनुभव” रूपमे देल अछि।

९९५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

९९६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

९९७. (D) जन्म: १५.०५.१९८४ — टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: १५.०५.१९८४” अछि।

९९८. (A) शान्त आ करुण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त आ करुण” रूपमे देखाइत अछि।

९९९. (B) लेखक नवीन ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१०००. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१००१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१००२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१००३. (B) नवीन ठाकुरक “अन्त — एक अनुभूति / अनुभव” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१००४. (A) सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी — सूचकांकमे डॉ. अरुण कुमार सिंहक रचना “सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी” रूपमे देल अछि।

१००५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१००६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

१००७. (D) शान्त आ व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ व्यंग्य” अछि।

१००८. (A) शान्त आ व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

१००९. (B) लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१०१०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१०११. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१०१२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१०१३. (B) डॉ. अरुण कुमार सिंहक “सोधनपाल / प्रियवर सम्पादकजी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१०१४. (A) आँखि झूठ नै बजैत अछि — सूचकांकमे कुन्दन कुमारक रचना “आँखि झूठ नै बजैत अछि” रूपमे देल अछि।

१०१५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१०१६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

१०१७. (D) शान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त” अछि।

१०१८. (A) शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

१०१९. (B) लेखक कुन्दन कुमार, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१०२०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१०२१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१०२२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१०२३. (B) कुन्दन कुमारक “आँखि झूठ नै बजैत अछि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१०२४. (A) माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / जेकर नै कएल जाएत बखान — सूचकांकमे झा हेमन्त बापीक रचना “माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / जेकर नै कएल जाएत बखान” रूपमे देल अछि।

१०२५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१०२६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

१०२७. (D) करुण, रौद्र आ शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण, रौद्र आ शृंगार” अछि।

१०२८. (A) करुण, रौद्र आ शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण, रौद्र आ शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

१०२९. (B) लेखक झा हेमन्त बापी, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१०३०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१०३१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१०३२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१०३३. (B) झा हेमन्त बापीक “माधुरी-एक नारी / दोषी / धिया / की कहू / दानव / जेकर नै कएल जाएत बखान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण, रौद्र आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१०३४. (A) हमर प्रियतम! — सूचकांकमे राहुल राहीक रचना “हमर प्रियतम!” रूपमे देल अछि।

१०३५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१०३६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

१०३७. (D) शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।

१०३८. (A) शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

१०३९. (B) लेखक राहुल राही, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१०४०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१०४१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१०४२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१०४३. (B) राहुल राहीक “हमर प्रियतम!” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१०४४. (A) खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना जी चुप / काटि लिअ कोना दुनू पखिया / हम पुछिलियिन के छी बाबू? — सूचकांकमे जवाहर लाल कश्यपक रचना “खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना जी चुप / काटि लिअ कोना दुनू पखिया / हम पुछिलियिन के छी बाबू?” रूपमे देल अछि।

१०४५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१०४६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

१०४७. (D) करुण, वीर आ व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण, वीर आ व्यंग्य” अछि।

१०४८. (A) करुण, वीर आ व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण, वीर आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

१०४९. (B) लेखक जवाहर लाल कश्यप, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१०५०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१०५१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१०५२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१०५३. (B) जवाहर लाल कश्यपक “खाइ / समयक धार / छी धन्य हम हमर मिथिला / अग्ना जी चुप / काटि लिअ कोना दुनू पखिया / हम पुछिलियिन के छी बाबू?” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण, वीर आ व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१०५४. (A) की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य — सूचकांकमे अच्छेलाल शास्त्रीक रचना “की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य” रूपमे देल अछि।

१०५५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१०५६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

१०५७. (D) व्यंग्य आ करुण — टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य आ करुण” अछि।

१०५८. (A) व्यंग्य आ करुण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “व्यंग्य आ करुण” रूपमे देखाइत अछि।

१०५९. (B) लेखक अच्छेलाल शास्त्री, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१०६०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१०६१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१०६२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१०६३. (B) अच्छेलाल शास्त्रीक “की देख रहल छी? / दू हजार दस श्रावणक दृश्य” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य आ करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१०६४. (A) पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर तकइत छी — सूचकांकमे सत्यनारायण झाक रचना “पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर तकइत छी” रूपमे देल अछि।

१०६५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१०६६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

१०६७. (D) शान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त” अछि।

१०६८. (A) शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

१०६९. (B) लेखक सत्यनारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१०७०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१०७१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१०७२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१०७३. (B) सत्यनारायण झाक “पद्य / गंगाकातमे / धारक कछेरमे बैसल टुकुर टुकुर तकइत छी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१०७४. (A) गीत १-२ — सूचकांकमे शिवशंकर श्रीनिवासक रचना “गीत १-२” रूपमे देल अछि।

१०७५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१०७६. (C) गीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गीत” अछि।

१०७७. (D) शृंगार आ शान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार आ शान्त” अछि।

१०७८. (A) शृंगार आ शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

१०७९. (B) लेखक शिवशंकर श्रीनिवास, विधा पद्य, उप-विधा गीत — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१०८०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१०८१. (D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१०८२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१०८३. (B) शिवशंकर श्रीनिवासक “गीत १-२” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “शृंगार आ शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१०८४. (A) राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल १-२ — सूचकांकमे विनीत उत्पलक रचना “राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल १-२” रूपमे देल अछि।

१०८५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१०८६. (C) कविता आ गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता आ गजल” अछि।

१०८७. (D) विदेह अनुवाद सम्पादक — टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह अनुवाद सम्पादक” अछि।

१०८८. (A) व्यंग्य, करुण आ शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “व्यंग्य, करुण आ शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

१०८९. (B) लेखक विनीत उत्पल, विधा पद्य, उप-विधा कविता आ गजल — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१०९०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१०९१. (D) ई पाठ कविता आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१०९२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१०९३. (B) विनीत उत्पलक “राजनीति / भाषा / शंका / स्मृतिलोप / हा / बेटी / गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, कविता आ गजल आ “व्यंग्य, करुण आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१०९४. (A) मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँखिमे नै मनमे — सूचकांकमे नित्या प्रियदर्शिनीक रचना “मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँखिमे नै मनमे” रूपमे देल अछि।

१०९५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१०९६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

१०९७. (D) नारी कवि — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी कवि” अछि।

१०९८. (A) अद्भुत आ करुण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “अद्भुत आ करुण” रूपमे देखाइत अछि।

१०९९. (B) लेखक नित्या प्रियदर्शिनी, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

११००. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

११०१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

११०२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

११०३. (B) नित्या प्रियदर्शिनीक “मत्स्य / समाजक गर्त / अहाँ अहाँसन / दर्द आँखिमे नै मनमे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अद्भुत आ करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

११०४. (A) सरकार / जाड़ — सूचकांकमे नारायण झाक रचना “सरकार / जाड़” रूपमे देल अछि।

११०५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

११०६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

११०७. (D) व्यंग्य आ शान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “व्यंग्य आ शान्त” अछि।

११०८. (A) व्यंग्य आ शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “व्यंग्य आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

११०९. (B) लेखक नारायण झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१११०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

११११. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१११२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१११३. (B) नारायण झाक “सरकार / जाड़” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “व्यंग्य आ शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१११४. (A) बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु — सूचकांकमे गणेश कुमार झा 'बावरा'क रचना “बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु” रूपमे देल अछि।

१११५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१११६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

१११७. (D) करुण, शृंगार आ वीर — टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण, शृंगार आ वीर” अछि।

१११८. (A) करुण, शृंगार आ वीर — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण, शृंगार आ वीर” रूपमे देखाइत अछि।

१११९. (B) लेखक गणेश कुमार झा 'बावरा', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

११२०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

११२१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

११२२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

११२३. (B) गणेश कुमार झा 'बावरा'क “बड़का काका / संघर्ष / अहाँ बिनु” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण, शृंगार आ वीर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

११२४. (A) भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद) — सूचकांकमे परिचय दासक रचना “भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद)” रूपमे देल अछि।

११२५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

११२६. (C) अनूदित कविता (भोजपुरी सँ मैथिली) — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अनूदित कविता (भोजपुरी सँ मैथिली)” अछि।

११२७. (D) भोजपुरी सँ मैथिली — टिप्पणीक पहिल संकेत “भोजपुरी सँ मैथिली” अछि।

११२८. (A) भोजपुरी सँ मैथिली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “भोजपुरी सँ मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

११२९. (B) लेखक परिचय दास, विधा पद्य, उप-विधा अनूदित कविता (भोजपुरी सँ मैथिली) — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

११३०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

११३१. (D) ई पाठ अनूदित कविता (भोजपुरी सँ मैथिली)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

११३२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

११३३. (B) परिचय दासक “भोजपुरी कविता — बेसीकाल शब्द जखन (मैथिली अनुवाद)” प्रविष्टि पद्य, अनूदित कविता (भोजपुरी सँ मैथिली) आ “भोजपुरी सँ मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

११३४. (A) गजल १-२ — सूचकांकमे स्वाती लालक रचना “गजल १-२” रूपमे देल अछि।

११३५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

११३६. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

११३७. (D) नारी गजल — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी गजल” अछि।

११३८. (A) शृंगार आ वियोग — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

११३९. (B) लेखक स्वाती लाल, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

११४०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

११४१. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

११४२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

११४३. (B) स्वाती लालक "गजल १-२" प्रविष्टि पद्य, गजल आ "शृंगार आ वियोग" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

११४४. (A) गजल १-३ — सूचकांकमे मुकुन्द मयंकक रचना "गजल १-३" रूपमे देल अछि।

११४५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

११४६. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "गजल" अछि।

११४७. (D) शृंगार आ दार्शनिकता — टिप्पणीक पहिल संकेत "शृंगार आ दार्शनिकता" अछि।

११४८. (A) शृंगार आ दार्शनिकता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "शृंगार आ दार्शनिकता" रूपमे देखाइत अछि।

११४९. (B) लेखक मुकुन्द मयंक, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

११५०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

११५१. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

११५२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

११५३. (B) मुकुन्द मयंकक "गजल १-३" प्रविष्टि पद्य, गजल आ "शृंगार आ दार्शनिकता" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

११५४. (A) बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत / सेनूरदानक गीत — सूचकांकमे आशीष अनचिन्हारक रचना "बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत / सेनूरदानक गीत" रूपमे देल अछि।

११५५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

११५६. (C) बन्द, कता, नात आ गीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "बन्द, कता, नात आ गीत" अछि।

११५७. (D) विदेह सहायक सम्पादक — टिप्पणीक पहिल संकेत "विदेह सहायक सम्पादक" अछि।

११५८. (A) विदेह सहायक सम्पादक — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "विदेह सहायक सम्पादक" रूपमे देखाइत अछि।

११५९. (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा बन्द, कता, नात आ गीत — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

११६०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

११६१. (D) ई पाठ बन्द, कता, नात आ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

११६२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

११६३. (B) आशीष अनचिन्हारक "बन्द १-२ / कता १-४ / नात / सोझ बाट पर चलैत-चलैत / सेनूरदानक गीत" प्रविष्टि पद्य, बन्द, कता, नात आ गीत आ "विदेह सहायक सम्पादक" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

११६४. (A) चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम — सूचकांकमे पवन झा 'अग्निवाण'क रचना "चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम" रूपमे देल अछि।

११६५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

११६६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कविता" अछि।

११६७. (D) वीर आ भक्ति — टिप्पणीक पहिल संकेत "वीर आ भक्ति" अछि।

११६८. (A) वीर आ भक्ति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “वीर आ भक्ति” रूपमे देखाइत अछि।

११६९. (B) लेखक पवन झा 'अग्निवाण', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

११७०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

११७१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

११७२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

११७३. (B) पवन झा 'अग्निवाण'क “चलियौ अपन गाम, जगत-जननी सीताक धाम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर आ भक्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

११७४. (A) सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान — सूचकांकमे प्रवीण नारायण चौधरीक रचना “सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान” रूपमे देल अछि।

११७५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

११७६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

११७७. (D) हास्य आ शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ शृंगार” अछि।

११७८. (A) हास्य आ शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “हास्य आ शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

११७९. (B) लेखक प्रवीण नारायण चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

११८०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

११८१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

११८२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

११८३. (B) प्रवीण नारायण चौधरीक “सभसँ सस्ता कविता! / नीक लगै तोहर मुस्कान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

११८४. (A) प्रतिदीप — सूचकांकमे संजीव कुमार 'शर्मा'क रचना “प्रतिदीप” रूपमे देल अछि।

११८५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

११८६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

११८७. (D) वीर — टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर” अछि।

११८८. (A) वीर — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “वीर” रूपमे देखाइत अछि।

११८९. (B) लेखक संजीव कुमार 'शर्मा', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

११९०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

११९१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

११९२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

११९३. (B) संजीव कुमार 'शर्मा'क “प्रतिदीप” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वीर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

११९४. (A) समए — सूचकांकमे सुधीर कुमार 'सुमन'क रचना “समए” रूपमे देल अछि।

११९५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

११९६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

११९७. (D) शान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त” अछि।

११९८. (A) शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

११९९. (B) लेखक सुधीर कुमार 'सुमन', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१२००. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१२०१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१२०२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१२०३. (B) सुधीर कुमार 'सुमन'क “समए” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१२०४. (A) दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम — सूचकांकमे उपेन्द्र नारायण 'अनुपम'क रचना “दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम” रूपमे देल अछि।

१२०५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१२०६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

१२०७. (D) करुण आ शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ शृंगार” अछि।

१२०८. (A) करुण आ शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

१२०९. (B) लेखक उपेन्द्र नारायण 'अनुपम', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१२१०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१२११. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१२१२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१२१३. (B) उपेन्द्र नारायण 'अनुपम'क “दुख हमर / घी कनी / परदेसिया प्रियतम” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१२१४. (A) निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ — सूचकांकमे डॉ. शिव कुमार प्रसादक रचना “निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ” रूपमे देल अछि।

१२१५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१२१६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

१२१७. (D) शान्त आ वीर — टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ वीर” अछि।

१२१८. (A) शान्त आ वीर — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त आ वीर” रूपमे देखाइत अछि।

१२१९. (B) लेखक डॉ. शिव कुमार प्रसाद, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१२२०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१२२१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१२२२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१२२३. (B) डॉ. शिव कुमार प्रसादक “निमलीक निमलतामे / त किछु ने किछु लिखैत जाउ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शान्त आ वीर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१२२४. (A) श्रद्धा — सूचकांकमे प्रो. राजकुमार नीलकंठक रचना “श्रद्धा” रूपमे देल अछि।

१२२५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१२२६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

१२२७. (D) भक्ति आ शान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति आ शान्त” अछि।

१२२८. (A) भक्ति आ शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “भक्ति आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

१२२९. (B) लेखक प्रो. राजकुमार नीलकंठ, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१२३०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१२३१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१२३२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१२३३. (B) प्रो. राजकुमार नीलकंठक “श्रद्धा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भक्ति आ शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१२३४. (A) देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा परबा / हेलवार / कलीक पात / कुहेस / जय हे किसान — सूचकांकमे राजदेव मंडलक रचना “देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा परबा / हेलवार / कलीक पात / कुहेस / जय हे किसान” रूपमे देल अछि।

१२३५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१२३६. (C) देश-गीत आ कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “देश-गीत आ कविता” अछि।

१२३७. (D) वीर, करुण आ व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर, करुण आ व्यंग्य” अछि।

१२३८. (A) वीर, करुण आ व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “वीर, करुण आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

१२३९. (B) लेखक राजदेव मंडल, विधा पद्य, उप-विधा देश-गीत आ कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१२४०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१२४१. (D) ई पाठ देश-गीत आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१२४२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१२४३. (B) राजदेव मंडलक “देश-गीत / जुलूसक पछुआ / कनेक सुनू / असल मरद / पोसा परबा / हेलवार / कलीक पात / कुहेस / जय हे किसान” प्रविष्टि पद्य, देश-गीत आ कविता आ “वीर, करुण आ व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१२४४. (A) जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी / चल रे जीवन / बौड़ाएल बटोही / संझ / घोड़ मन / मन-मणि / रहसा चौर / गीत १-६ — सूचकांकमे जगदीश प्रसाद मंडलक रचना “जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी / चल रे जीवन / बौड़ाएल बटोही / संझ / घोड़ मन / मन-मणि / रहसा चौर / गीत १-६” रूपमे देल अछि।

१२४५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१२४६. (C) कविता आ गीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता आ गीत” अछि।

१२४७. (D) जन्म: ५ जुलाई १९४७ — टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: ५ जुलाई १९४७” अछि।

१२४८. (A) जन्म: ५ जुलाई १९४७ — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “जन्म: ५ जुलाई १९४७” रूपमे देखाइत अछि।

१२४९. (B) लेखक जगदीश प्रसाद मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता आ गीत — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१२५०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१२५१. (D) ई पाठ कविता आ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१२५२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१२५३. (B) जगदीश प्रसाद मंडलक “जरनबिछनी / दिन-राइतक खेल / किछु ने बूझै छी / चल रे जीवन / बौड़ाएल बटोही / संझ / घोड़ मन / मन-मणि / रहसा चौर / गीत १-६” प्रविष्टि पद्य, कविता आ गीत आ “जन्म: ५ जुलाई १९४७” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१२५४. (A) समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प / ठमकल शब्द / दहेजक बिहाड़ि / हराएल हमर स्वरूप / विदाइ — सूचकांकमे मुस्नी कामतक रचना “समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प / ठमकल शब्द / दहेजक बिहाड़ि / हराएल हमर स्वरूप / विदाइ” रूपमे देल अछि।

१२५५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१२५६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

१२५७. (D) नारी कवि — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी कवि” अछि।

१२५८. (A) करुण आ वीर — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ वीर” रूपमे देखाइत अछि।

१२५९. (B) लेखक मुस्नी कामत, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१२६०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१२६१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१२६२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१२६३. (B) मुस्नी कामतक “समाजक विडम्बना / बेटी / जिन्दगीक मरीचिका / संकल्प / ठमकल शब्द / दहेजक बिहाड़ि / हराएल हमर स्वरूप / विदाइ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ वीर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१२६४. (A) टनका-हाइकू / गजल १-२ — सूचकांकमे सुनील कुमार झाक रचना “टनका-हाइकू / गजल १-२” रूपमे देल अछि।

१२६५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१२६६. (C) टनका-हाइकू आ गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “टनका-हाइकू आ गजल” अछि।

१२६७. (D) शान्त आ शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ शृंगार” अछि।

१२६८. (A) शान्त आ शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त आ शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

१२६९. (B) लेखक सुनील कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा टनका-हाइकू आ गजल — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१२७०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१२७१. (D) ई पाठ टनका-हाइकू आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१२७२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१२७३. (B) सुनील कुमार झाक “टनका-हाइकू / गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, टनका-हाइकू आ गजल आ “शान्त आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१२७४. (A) हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब — सूचकांकमे जगदानन्द झा 'मनु'क रचना “हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब” रूपमे देल अछि।

१२७५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१२७६. (C) हजल, बाइ आ गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “हजल, बाइ आ गजल” अछि।

१२७७. (D) बहुरूपी हजल-बाइ-गजल — टिप्पणीक पहिल संकेत “बहुरूपी हजल-बाइ-गजल” अछि।

१२७८. (A) बहुरूपी हजल-बाइ-गजल — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “बहुरूपी हजल-बाइ-गजल” रूपमे देखाइत अछि।

१२७९. (B) लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा पद्य, उप-विधा हजल, बाइ आ गजल — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१२८०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१२८१. (D) ई पाठ हजल, बाइ आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१२८२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१२८३. (B) जगदानन्द झा 'मनु'क "हजल / बाइ १-२ / गजल १-४ / एक दिन हमहूँ मरब" प्रविष्टि पद्य, हजल, बाइ आ गजल आ "बहुरूपी हजल-बाइ-गजल" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१२८४. (A) आजाद गजल १-३ — सूचकांकमे कुन्दन कुमार कर्णक रचना "आजाद गजल १-३" रूपमे देल अछि।

१२८५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१२८६. (C) आजाद गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "आजाद गजल" अछि।

१२८७. (D) शृंगार आ वियोग — टिप्पणीक पहिल संकेत "शृंगार आ वियोग" अछि।

१२८८. (A) शृंगार आ वियोग — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "शृंगार आ वियोग" रूपमे देखाइत अछि।

१२८९. (B) लेखक कुन्दन कुमार कर्ण, विधा पद्य, उप-विधा आजाद गजल — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१२९०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१२९१. (D) ई पाठ आजाद गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१२९२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१२९३. (B) कुन्दन कुमार कर्णक "आजाद गजल १-३" प्रविष्टि पद्य, आजाद गजल आ "शृंगार आ वियोग" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१२९४. (A) हजल / गजल १-५ — सूचकांकमे अमित मिश्रक रचना "हजल / गजल १-५" रूपमे देल अछि।

१२९५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१२९६. (C) हजल आ गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "हजल आ गजल" अछि।

१२९७. (D) हास्य आ शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत "हास्य आ शृंगार" अछि।

१२९८. (A) हास्य आ शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "हास्य आ शृंगार" रूपमे देखाइत अछि।

१२९९. (B) लेखक अमित मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा हजल आ गजल — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१३००. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१३०१. (D) ई पाठ हजल आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१३०२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१३०३. (B) अमित मिश्रक "हजल / गजल १-५" प्रविष्टि पद्य, हजल आ गजल आ "हास्य आ शृंगार" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१३०४. (A) बाइ / हजल / गजल १-३ — सूचकांकमे चन्दन कुमार झाक रचना "बाइ / हजल / गजल १-३" रूपमे देल अछि।

१३०५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१३०६. (C) बाइ, हजल आ गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "बाइ, हजल आ गजल" अछि।

१३०७. (D) त्रिविध रूप — टिप्पणीक पहिल संकेत "त्रिविध रूप" अछि।

१३०८. (A) शृंगार, हास्य आ वियोग — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "शृंगार, हास्य आ वियोग" रूपमे देखाइत अछि।

१३०९. (B) लेखक चन्दन कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा बाइ, हजल आ गजल — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१३१०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१३११. (D) ई पाठ बाइ, हजल आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१३१२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१३१३. (B) चन्दन कुमार झाक “बाइ / हजल / गजल १-३” प्रविष्टि पद्य, बाइ, हजल आ गजल आ “शृंगार, हास्य आ वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१३१४. (A) गजल — सूचकांकमे प्रबी झाक रचना “गजल” रूपमे देल अछि।

१३१५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१३१६. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल” अछि।

१३१७. (D) शृंगार आ वियोग — टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार आ वियोग” अछि।

१३१८. (A) शृंगार आ वियोग — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

१३१९. (B) लेखक प्रबी झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१३२०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१३२१. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१३२२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१३२३. (B) प्रबी झाक “गजल” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “शृंगार आ वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१३२४. (A) किछु क्षणिका — सूचकांकमे अनुष्ठिया योगक रचना “किछु क्षणिका” रूपमे देल अछि।

१३२५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१३२६. (C) क्षणिका — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “क्षणिका” अछि।

१३२७. (D) लघु रूप — टिप्पणीक पहिल संकेत “लघु रूप” अछि।

१३२८. (A) शान्त भाव — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शान्त भाव” रूपमे देखाइत अछि।

१३२९. (B) लेखक अनुष्ठिया योग, विधा पद्य, उप-विधा क्षणिका — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१३३०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१३३१. (D) ई पाठ क्षणिकाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१३३२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१३३३. (B) अनुष्ठिया योगक “किछु क्षणिका” प्रविष्टि पद्य, क्षणिका आ “शान्त भाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१३३४. (A) गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभक ईद मुबारक — सूचकांकमे सज्जे आलम गौहरक रचना “गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभक ईद मुबारक” रूपमे देल अछि।

१३३५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१३३६. (C) गजल आ कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “गजल आ कविता” अछि।

१३३७. (D) मुस्लिम मैथिली स्वर — टिप्पणीक पहिल संकेत “मुस्लिम मैथिली स्वर” अछि।

१३३८. (A) मुस्लिम मैथिली स्वर — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “मुस्लिम मैथिली स्वर” रूपमे देखाइत अछि।

१३३९. (B) लेखक सज्जे आलम गौहर, विधा पद्य, उप-विधा गजल आ कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१३४०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१३४१. (D) ई पाठ गजल आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१३४२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१३४३. (B) सज्जे आलम गौहरक “गजल / अना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध / मैथिल सभक ईद मुबारक” प्रविष्टि पद्य, गजल आ कविता आ “मुस्लिम मैथिली स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१३४४. (A) प्रेम पुष्प — सूचकांकमे बिनोद मिश्रक रचना “प्रेम पुष्प” रूपमे देल अछि।

१३४५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१३४६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

१३४७. (D) शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।

१३४८. (A) शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

१३४९. (B) लेखक बिनोद मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१३५०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१३५१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१३५२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१३५३. (B) बिनोद मिश्रक “प्रेम पुष्प” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१३५४. (A) झा (झा लोकगीत विधा) — सूचकांकमे रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क रचना “झा (झा लोकगीत विधा)” रूपमे देल अछि।

१३५५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१३५६. (C) झा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “झा” अछि।

१३५७. (D) मैथिलीक भिखारी ठाकुर-समान लोकस्वर — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिलीक भिखारी ठाकुर-समान लोकस्वर” अछि।

१३५८. (A) मैथिलीक भिखारी ठाकुर-समान लोकस्वर — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “मैथिलीक भिखारी ठाकुर-समान लोकस्वर” रूपमे देखाइत अछि।

१३५९. (B) लेखक रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार', विधा पद्य, उप-विधा झा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१३६०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१३६१. (D) ई पाठ झाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१३६२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१३६३. (B) रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “झा (झा लोकगीत विधा)” प्रविष्टि पद्य, झा आ “मैथिलीक भिखारी ठाकुर-समान लोकस्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१३६४. (A) बाइ १-२ / गजल १-४ — सूचकांकमे ओमप्रकाश झाक रचना “बाइ १-२ / गजल १-४” रूपमे देल अछि।

१३६५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१३६६. (C) बाइ आ गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “बाइ आ गजल” अछि।

१३६७. (D) शृंगार आ वियोग — टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार आ वियोग” अछि।

१३६८. (A) शृंगार आ वियोग — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

१३६९. (B) लेखक ओमप्रकाश झा, विधा पद्य, उप-विधा बाइ आ गजल — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१३७०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१३७१. (D) ई पाठ बाइ आ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१३७२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१३७३. (B) ओमप्रकाश झाक “बाइ १-२ / गजल १-४” प्रविष्टि पद्य, बाइ आ गजल आ “शृंगार आ वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१३७४. (A) आजाद गजल १-२ — सूचकांकमे त्रिपुरारी कुमार शर्माक रचना “आजाद गजल १-२” रूपमे देल अछि।

१३७५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१३७६. (C) आजाद गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आजाद गजल” अछि।

१३७७. (D) शृंगार आ वियोग — टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार आ वियोग” अछि।

१३७८. (A) शृंगार आ वियोग — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ वियोग” रूपमे देखाइत अछि।

१३७९. (B) लेखक त्रिपुरारी कुमार शर्मा, विधा पद्य, उप-विधा आजाद गजल — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१३८०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१३८१. (D) ई पाठ आजाद गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१३८२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१३८३. (B) त्रिपुरारी कुमार शर्माक “आजाद गजल १-२” प्रविष्टि पद्य, आजाद गजल आ “शृंगार आ वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१३८४. (A) भक्ति गजल १-३ — सूचकांकमे राजीव रंजन मिश्रक रचना “भक्ति गजल १-३” रूपमे देल अछि।

१३८५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१३८६. (C) भक्ति गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “भक्ति गजल” अछि।

१३८७. (D) भक्ति आ शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत “भक्ति आ शृंगार” अछि।

१३८८. (A) भक्ति आ शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “भक्ति आ शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

१३८९. (B) लेखक राजीव रंजन मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा भक्ति गजल — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१३९०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१३९१. (D) ई पाठ भक्ति गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१३९२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१३९३. (B) राजीव रंजन मिश्रक “भक्ति गजल १-३” प्रविष्टि पद्य, भक्ति गजल आ “भक्ति आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१३९४. (A) आजाद गजल — सूचकांकमे दीप नारायण विद्यार्थीक रचना “आजाद गजल” रूपमे देल अछि।

१३९५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१३९६. (C) आजाद गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “आजाद गजल” अछि।

१३९७. (D) आजाद गजल-रूप — टिप्पणीक पहिल संकेत “आजाद गजल-रूप” अछि।

१३९८. (A) आजाद गजल-रूप — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “आजाद गजल-रूप” रूपमे देखाइत अछि।

१३९९. (B) लेखक दीप नारायण विद्यार्थी, विधा पद्य, उप-विधा आजाद गजल — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१४००. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१४०१. (D) ई पाठ आजाद गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१४०२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१४०३. (B) दीप नारायण विद्यार्थीक “आजाद गजल” प्रविष्टि पद्य, आजाद गजल आ “आजाद गजल-रूप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१४०४. (A) भोगी / श्रोता — सूचकांकमे उमेश मंडलक रचना “भोगी / श्रोता” रूपमे देल अछि।

१४०५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१४०६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

१४०७. (D) विदेह सह-सम्पादक — टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह सह-सम्पादक” अछि।

१४०८. (A) करुण आ शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

१४०९. (B) लेखक उमेश मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१४१०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१४११. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१४१२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१४१३. (B) उमेश मंडलक “भोगी / श्रोता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१४१४. (A) गवहा संक्रान्ति — सूचकांकमे उमेश पासवानक रचना “गवहा संक्रान्ति” रूपमे देल अछि।

१४१५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१४१६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

१४१७. (D) दलित स्वर — टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित स्वर” अछि।

१४१८. (A) दलित स्वर — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “दलित स्वर” रूपमे देखाइत अछि।

१४१९. (B) लेखक उमेश पासवान, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१४२०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१४२१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१४२२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१४२३. (B) उमेश पासवानक “गवहा संक्रान्ति” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दलित स्वर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१४२४. (A) मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि — सूचकांकमे संजय कुमार मंडलक रचना “मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि” रूपमे देल अछि।

१४२५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१४२६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

१४२७. (D) करुण आ शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ शृंगार” अछि।

१४२८. (A) करुण आ शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

१४२९. (B) लेखक संजय कुमार मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१४३०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१४३१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१४३२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१४३३. (B) संजय कुमार मंडलक “मीता हमरा मोन पड़ैए / परदेसिया / शीतलहरि” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शृंगार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१४३४. (A) खाएब की / हम छी आजुक नेता — सूचकांकमे प्रवेश कुमार झा 'थ्रेथ'क रचना “खाएब की / हम छी आजुक नेता” रूपमे देल अछि।

१४३५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१४३६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

१४३७. (D) हास्य आ व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ व्यंग्य” अछि।

१४३८. (A) हास्य आ व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “हास्य आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

१४३९. (B) लेखक प्रवेश कुमार झा 'थ्रेथ', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१४४०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१४४१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१४४२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१४४३. (B) प्रवेश कुमार झा 'थ्रेथ'क “खाएब की / हम छी आजुक नेता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “हास्य आ व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१४४४. (A) किओ नै — सूचकांकमे कामोद झाक रचना “किओ नै” रूपमे देल अछि।

१४४५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१४४६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

१४४७. (D) करुण आ शान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ शान्त” अछि।

१४४८. (A) करुण आ शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

१४४९. (B) लेखक कामोद झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१४५०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१४५१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१४५२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१४५३. (B) कामोद झाक “किओ नै” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१४५४. (A) मातृभाषा — सूचकांकमे कपिलेश्वर राउतक रचना “मातृभाषा” रूपमे देल अछि।

१४५५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१४५६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “कविता” अछि।

१४५७. (D) दलित स्वर — टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित स्वर” अछि।

१४५८. (A) वीर आ शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “वीर आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

१४५९. (B) लेखक कपिलेश्वर राउत, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१४६०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१४६१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१४६२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१४६३. (B) कपिलेश्वर राउतक "मातृभाषा" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "वीर आ शान्त" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१४६४. (A) प्रार्थना गीत / पहिल भेट — सूचकांकमे जीबू कुमार झाक रचना "प्रार्थना गीत / पहिल भेट" रूपमे देल अछि।

१४६५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१४६६. (C) प्रार्थना गीत आ कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "प्रार्थना गीत आ कविता" अछि।

१४६७. (D) भक्ति आ शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत "भक्ति आ शृंगार" अछि।

१४६८. (A) भक्ति आ शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "भक्ति आ शृंगार" रूपमे देखाइत अछि।

१४६९. (B) लेखक जीबू कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा प्रार्थना गीत आ कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१४७०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१४७१. (D) ई पाठ प्रार्थना गीत आ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१४७२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१४७३. (B) जीबू कुमार झाक "प्रार्थना गीत / पहिल भेट" प्रविष्टि पद्य, प्रार्थना गीत आ कविता आ "भक्ति आ शृंगार" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१४७४. (A) नवका बाट — सूचकांकमे अनामिका राजक रचना "नवका बाट" रूपमे देल अछि।

१४७५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१४७६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "कविता" अछि।

१४७७. (D) वीर आ शान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत "वीर आ शान्त" अछि।

१४७८. (A) वीर आ शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "वीर आ शान्त" रूपमे देखाइत अछि।

१४७९. (B) लेखक अनामिका राज, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१४८०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१४८१. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१४८२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१४८३. (B) अनामिका राजक "नवका बाट" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "वीर आ शान्त" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१४८४. (A) डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद) — सूचकांकमे प्रो. चम्पा शर्माक रचना "डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद)" रूपमे देल अछि।

१४८५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१४८६. (C) अनूदित कविता (डोगरी सँ मैथिली) — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "अनूदित कविता (डोगरी सँ मैथिली)" अछि।

१४८७. (D) डोगरी सँ मैथिली — टिप्पणीक पहिल संकेत "डोगरी सँ मैथिली" अछि।

१४८८. (A) डोगरी सँ मैथिली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "डोगरी सँ मैथिली" रूपमे देखाइत अछि।

१४८९. (B) लेखक प्रो. चम्पा शर्मा, विधा पद्य, उप-विधा अनूदित कविता (डोगरी सँ मैथिली) — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१४९०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१४९१. (D) ई पाठ अनूदित कविता (डोगरी सँ मैथिली)क रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१४९२. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१४९३. (B) प्रो. चम्पा शर्माक "डोगरी कविता — स्नेह-भरल सनेस (मैथिली अनुवाद)" प्रविष्टि पद्य, अनूदित कविता (डोगरी सँ मैथिली) आ "डोगरी सँ मैथिली" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१४९४. (A) आउ करी नव मिथिलाक निर्माण — सूचकांकमे मोहन प्रसादक प्रविष्टि "आउ करी नव मिथिलाक निर्माण" रूपमे देल अछि।

१४९५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१४९६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप "कविता" अछि।

१४९७. (D) वीर — टिप्पणीक पहिल संकेत "वीर" अछि।

१४९८. (A) वीर — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "वीर" रूपमे देखाइत अछि।

१४९९. (B) नाम मोहन प्रसाद, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१५००. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१५०१. (D) ई प्रविष्टि कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१५०२. (A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१५०३. (B) मोहन प्रसादक "आउ करी नव मिथिलाक निर्माण" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "वीर" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१५०४. (A) साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप — सूचकांकमे नगीना कुमारी झाक प्रविष्टि "साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप" रूपमे देल अछि।

१५०५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१५०६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप "कविता" अछि।

१५०७. (D) नारी कवि — टिप्पणीक पहिल संकेत "नारी कवि" अछि।

१५०८. (A) नारी कवि — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "नारी कवि" रूपमे देखाइत अछि।

१५०९. (B) नाम नगीना कुमारी झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१५१०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१५११. (D) ई प्रविष्टि कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१५१२. (A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१५१३. (B) नगीना कुमारी झाक "साहसक डोरी / मोन पड़ैए / दहेज थाप" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "नारी कवि" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१५१४. (A) जुलूस — सूचकांकमे लालबाबू मंडलक प्रविष्टि "जुलूस" रूपमे देल अछि।

१५१५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१५१६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप "कविता" अछि।

१५१७. (D) रौद्र आ वीर — टिप्पणीक पहिल संकेत "रौद्र आ वीर" अछि।

१५१८. (A) रौद्र आ वीर — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "रौद्र आ वीर" रूपमे देखाइत अछि।

१५१९. (B) नाम लालबाबू मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१५२०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१५२१. (D) ई प्रविष्टि कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१५२२. (A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१५२३. (B) लालबाबू मंडलक "जुलूस" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "रौद्र आ वीर" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१५२४. (A) भकजोगनी / वसन्त पंचमी — सूचकांकमे संदीप कुमार साफीक प्रविष्टि "भकजोगनी / वसन्त पंचमी" रूपमे देल अछि।

१५२५. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "पद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१५२६. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप "कविता" अछि।

१५२७. (D) शान्त आ शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत "शान्त आ शृंगार" अछि।

१५२८. (A) शान्त आ शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "शान्त आ शृंगार" रूपमे देखाइत अछि।

१५२९. (B) नाम संदीप कुमार साफी, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१५३०. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१५३१. (D) ई प्रविष्टि कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१५३२. (A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१५३३. (B) संदीप कुमार साफीक "भकजोगनी / वसन्त पंचमी" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "शान्त आ शृंगार" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 7क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१५३४. (A) पाँचम किस्त — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ पाँचम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

१५३५. (A) पाँचम किस्त — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

१५३६. (A) पाँचम किस्त — सुरक्षित पठन स्रोत-सार पाँचम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

१५३७. (A) शीर्षक पाँचम किस्त दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

१५३८. (A) पाँचम किस्त — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल पाँचम किस्त सँ बनैत अछि।

१५३९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

१५४०. (A) पाँचम किस्त — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ पाँचम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

१५४१. (A) पाँचम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

१५४२. (A) शोध-लेखक रूप पाँचम किस्त केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

१५४३. (A) उत्तरकेँ पाँचम किस्त धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

१५४४. (A) सातम किस्त — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ सातम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

१५४५. (A) सातम किस्त — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

१५४६. (A) सातम किस्त — सुरक्षित पठन स्रोत-सार सातम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

१५४७. (A) शीर्षक सातम किस्त दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

१५४८. (A) सातम किस्त — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सातम किस्त सँ बनैत अछि।

१५४९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

१५५०. (A) सातम किस्त — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सातम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

१५५१. (A) सातम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

१५५२. (A) उपन्यासक रूप सातम किस्त केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

१५५३. (A) उत्तरकेँ सातम किस्त धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

१५५४. (A) सातम किस्त — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ सातम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

१५५५. (A) सातम किस्त — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

१५५६. (A) सातम किस्त — सुरक्षित पठन स्रोत-सार सातम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

१५५७. (A) शीर्षक सातम किस्त दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

१५५८. (A) सातम किस्त — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल सातम किस्त सँ बनैत अछि।

१५५९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

१५६०. (A) सातम किस्त — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ सातम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

१५६१. (A) सातम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

१५६२. (A) महाकाव्यक रूप सातम किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

१५६३. (A) उत्तरकैँ सातम किस्त धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

१५६४. (A) प्रवास-प्रेरित कथा — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ प्रवास-प्रेरित कथा सँ जोड़ैत अछि।

१५६५. (A) प्रवास-प्रेरित कथा — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

१५६६. (A) प्रवास-प्रेरित कथा — सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रवास-प्रेरित कथा धरि सीमित रहैत अछि।

१५६७. (A) शीर्षक प्रवास-प्रेरित कथा दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

१५६८. (A) प्रवास-प्रेरित कथा — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रवास-प्रेरित कथा सँ बनैत अछि।

१५६९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

१५७०. (A) प्रवास-प्रेरित कथा — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रवास-प्रेरित कथाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

१५७१. (A) प्रवास-प्रेरित कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

१५७२. (A) कथाक रूप प्रवास-प्रेरित कथा कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

१५७३. (A) उत्तरकैँ प्रवास-प्रेरित कथा धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

१५७४. (A) विविध — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ विविध सँ जोड़ैत अछि।

१५७५. (A) विविध — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

१५७६. (A) विविध — सुरक्षित पठन स्रोत-सार विविध धरि सीमित रहैत अछि।

१५७७. (A) शीर्षक विविध दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

१५७८. (A) विविध — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल विविध सँ बनैत अछि।

१५७९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

१५८०. (A) विविध — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ विविधक आधार पर ग्रहणीय अछि।

१५८१. (A) विविधक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

१५८२. (A) पद्यक रूप विविध कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

१५८३. (A) उत्तरकैँ विविध धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

१५८४. (A) धारावाहिक — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

१५८५. (A) धारावाहिक — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

१५८६. (A) धारावाहिक — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

१५८७. (A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

१५८८. (A) धारावाहिक — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

१५८९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

१५९०. **(A) धारावाहिक** — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

१५९१. **(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब** — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

१५९२. **(A) संस्कृत-शिक्षाक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि** — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

१५९३. **(A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब** — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

१५९४. **(A) --** — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ -- सँ जोड़ैत अछि।

१५९५. **(A) --** — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

१५९६. **(A) --** — सुरक्षित पठन स्रोत-सार -- धरि सीमित रहैत अछि।

१५९७. **(A) शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि** — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

१५९८. **(A) --** — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल -- सँ बनैत अछि।

१५९९. **(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब** — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

१६००. **(A) --** — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ --क आधार पर ग्रहणीय अछि।

१६०१. **(A) --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब** — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

१६०२. **(A) मिथिला कलाक रूप -- कैँ स्पष्ट करैत अछि** — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

१६०३. **(A) उत्तरकैँ -- धरि सीमित राखब** — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

१६०४. **(A) धारावाहिक** — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

१६०५. **(A) धारावाहिक** — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

१६०६. **(A) धारावाहिक** — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

१६०७. **(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि** — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

१६०८. **(A) धारावाहिक** — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

१६०९. **(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब** — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

१६१०. **(A) धारावाहिक** — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

१६११. **(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब** — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

१६१२. **(A) संगीत शिक्षाक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि** — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

१६१३. **(A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब** — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

१६१४. **(A) एकांकी** — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ एकांकी सँ जोड़ैत अछि।

१६१५. **(A) एकांकी** — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

१६१६. **(A) एकांकी** — सुरक्षित पठन स्रोत-सार एकांकी धरि सीमित रहैत अछि।

१६१७. **(A) शीर्षक एकांकी दिस संकेत करैत अछि** — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

१६१८. **(A) एकांकी** — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल एकांकी सँ बनैत अछि।

१६१९. **(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब** — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

१६२०. **(A) एकांकी** — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ एकांकीक आधार पर ग्रहणीय अछि।

१६२१. **(A) एकांकीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब** — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

१६२२. **(A) बालानां कृतेक रूप एकांकी कैँ स्पष्ट करैत अछि** — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

१६२३. **(A) उत्तरकैँ एकांकी धरि सीमित राखब** — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

१६२४. **(A) धारावाहिक** — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

१६२५. **(A) धारावाहिक** — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

१६२६. (A) धारावाहिक — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

१६२७. (A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

१६२८. (A) धारावाहिक — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

१६२९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

१६३०. (A) धारावाहिक — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

१६३१. (A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

१६३२. (A) पंजी-प्रबंधक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

१६३३. (A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

१६३४. (A) धारावाहिक — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

१६३५. (A) धारावाहिक — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

१६३६. (A) धारावाहिक — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

१६३७. (A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

१६३८. (A) धारावाहिक — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

१६३९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

१६४०. (A) धारावाहिक — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

१६४१. (A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

१६४२. (A) मिथिला आ' संस्कृतक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

१६४३. (A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

१६४४. (A) धारावाहिक — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

१६४५. (A) धारावाहिक — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

१६४६. (A) धारावाहिक — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

१६४७. (A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

१६४८. (A) धारावाहिक — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

१६४९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

१६५०. (A) धारावाहिक — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

१६५१. (A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

१६५२. (A) भाषा-प्रौद्योगिकीक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

१६५३. (A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

१६५४. (A) धारावाहिक — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

१६५५. (A) धारावाहिक — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

१६५६. (A) धारावाहिक — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

१६५७. (A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

१६५८. (A) धारावाहिक — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

१६५९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

१६६०. (A) धारावाहिक — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

१६६१. (A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

१६६२. (A) रचना लिखबासँ पहिने...क रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

१६६३. (A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

१६६४. (A) -- — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ -- सँ जोड़ैत अछि।

१६६५. (A) -- — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

१६६६. (A) -- — सुरक्षित पठन स्रोत-सार -- धरि सीमित रहैत अछि।

१६६७. (A) शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

१६६८. (A) -- — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल -- सँ बनैत अछि।

१६६९. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

१६७०. (A) -- — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ --क आधार पर ग्रहणीय अछि।

१६७१. (A) --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

१६७२. (A) अंग्रेजी-गद्यक रूप -- कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

१६७३. (A) उत्तरकैँ -- धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

अध्याय ३ : विदेह-सदेह ८ — विस्तृत अध्ययन

खण्ड ४ : विदेह-सदेह ८ — मैथिली नाट्य-इतिहास (विस्तार)

१. भरतक नाट्यशास्त्र अनुसार नाटकक उत्पत्ति कोन उत्सवसँ भेल मानल गेल अछि?

(A) इन्द्रक ध्वजा उत्सव

(B) दीपावली

(C) छठि

(D) कोनो नहि

२. भरत अनुसार नाटक मूलतः कतेक प्रकारक मानल गेल?

(A) दू (अमृत मंथन आ शिवक त्रिपुरदाह)

(B) चारि

(C) दस

(D) कोनो नहि

३. पाँचम शताब्दी ई.पू. मे पाणिनी कोन-कोन नटसूत्र-संकलकक चर्चा करैत छथि?

(A) शिलालिन् आ कृशाश्व

(B) भरत आ धनंजय

(C) अरस्तू आ प्लेटो

(D) कोनो नहि

४. मैथिली नाटकमे जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक कोन-कोन थिक?

(A) छुतहर-छुतहर घैल-छुतहा घैल

(B) भाग रौ

(C) संकर्षण

(D) कोनो नहि

५. ज्योतिरीश्वर ठाकुरक नाटक कोन शताब्दीमे रचल गेल?

(A) तेरहम

(B) दसम

(C) सोलहम

(D) बीसम

६. धूर्तसमागम कोन कोटिक नाटक मानल जाइत अछि?

(A) प्रहसन

(B) त्रासदी

(C) गीतिनाट्य

(D) कोनो नहि

७. विद्यापति ठाकुरक नाटक गोरक्षविजय कोन सम्प्रदायक प्रसंगपर अछि?

(A) नाथ/गोरक्ष सम्प्रदाय

(B) शैव सम्प्रदाय

(C) वैष्णव सम्प्रदाय

(D) कोनो नहि

८. जीवन झा द्वारा रचित नाटक ‘सुन्दर संयोग’ कोन साल रचल गेल मानल जाइत अछि?

(A) १९०४

(B) १९२०

(C) १९५०

(D) कोनो नहि

९. जीवन झा द्वारा रचित कतेक नाटकक उल्लेख विदेह-सदेह ८ मे अछि?

(A) चारि (सुन्दर संयोग, मैथिली सट्टक, नर्मदा सागर सट्टक, सामवती पुनर्जन्म)

(B) एक

(C) दस

(D) कोनो नहि

१०. जीवन झाक नाटकक मंचन कोन संस्थामे कएक बेर भेल छल?

(A) सामवेद विद्यालय काशी

(B) दिल्ली विश्वविद्यालय

(C) JNU

(D) कोनो नहि

११. ईशनाथ झाक नाटक 'उगना' कोन अवसरपर खेलाओल जाइत अछि?

(A) महाशिवरात्रि

(B) दीपावली

(C) छठि

(D) कोनो नहि

१२. ईशनाथ झाक नाटक 'चीनीक लड्डू' मे मुख्य पात्र के छथि?

(A) सुधाकांत-प्रेमकांत

(B) विनय-नवल

(C) विद्यापति-उगना

(D) कोनो नहि

१३. नचिकेताक नाटक 'नो एण्ट्री: मा प्रविश' कोन शैलीक नाटक मानल गेल?

(A) पोस्टमोडर्न ड्रामा (एबसर्ड)

(B) यथार्थवादी

(C) ऐतिहासिक

(D) कोनो नहि

१४. गोविन्द झाक नाटक 'बसात' मे कृष्णकांत केकरासँ प्रेम करैत छथि?

(A) लिली (शिक्षिता)

(B) पुष्पा

(C) मोहिनी

(D) कोनो नहि

१५. मैथिली नाटकमे जातिवादी शब्दावलीक प्रति गजेन्द्र ठाकुरक रुख की?

(A) समर्थन

(B) विरोध (ककरो अपमानित नहि करबाक चाही)

(C) उदासीनता

(D) कोनो नहि

खण्ड 1829 : विदेह-सदेह 8 — गजेन्द्र ठाकूर: हम पुछेत छी – सम्पादकीय

१६. गजेन्द्र ठाकूरक "हम पुछेत छी – सम्पादकीय" प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

(A) हम पुछेत छी – सम्पादकीय

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – सम्पादकीय”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – सम्पादकीय”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) सम्पादकीय/प्रस्तावना

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – सम्पादकीय” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) विदेह समानान्तर नाट्य आन्दोलनक उद्घोष

२०. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – सम्पादकीय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) विदेह समानान्तर नाट्य आन्दोलनक उद्घोष

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – सम्पादकीय”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाम गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय/प्रस्तावना

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – सम्पादकीय” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – सम्पादकीय”केँ विदेह-सदेह 8क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई प्रविष्टि सम्पादकीय/प्रस्तावनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – सम्पादकीय” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५. खण्ड 1829क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – सम्पादकीय” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय/प्रस्तावना आ “विदेह समानान्तर नाट्य आन्दोलनक उद्घोष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1830 : विदेह-सदेह 8 — शिल्पी कुमारी: विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)

२६. शिल्पी कुमारीक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

(A) विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७. शिल्पी कुमारीक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सम्मान

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८. शिल्पी कुमारीक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) अभिनय

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९. शिल्पी कुमारीक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) युवा नारी कलाकार

३०. शिल्पी कुमारीक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) युवा नारी कलाकार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१. शिल्पी कुमारीक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाम शिल्पी कुमारी, विधा सम्मान, उप-विधा अभिनय

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२. शिल्पी कुमारीक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३. शिल्पी कुमारीक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)”कैं विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई प्रविष्टि अभिनयक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

३४. शिल्पी कुमारीक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५. खण्ड 1830क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) शिल्पी कुमारीक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)” प्रविष्टि अभिनय क्षेत्रमे देल सम्मान, “युवा नारी कलाकार” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1831 : विदेह-सदेह 8 — शोभा कान्त महतो: विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)

३६. शोभा कान्त महतोक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

(A) विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७. शोभा कान्त महतोक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सम्मान

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८. शोभा कान्त महतोक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) अभिनय

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९. शोभा कान्त महतोक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) किशोर अभिनेता

४०. शोभा कान्त महतोक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) किशोर अभिनेता

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१. शोभा कान्त महतोक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाम शोभा कान्त महतो, विधा सम्मान, उप-विधा अभिनय

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२. शोभा कान्त महतोक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३. शोभा कान्त महतोक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)”केँ विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई प्रविष्टि अभिनयक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

४४. शोभा कान्त महतोक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५. खण्ड 1831क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) शोभा कान्त महतोक “विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)” प्रविष्टि अभिनय क्षेत्रमे देल सम्मान, “किशोर अभिनेता” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1832 : विदेह-सदेह 8 — प्रियंका कुमारी: विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२

४६. प्रियंका कुमारीक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

(A) विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७. प्रियंका कुमारीक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सम्मान

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८. प्रियंका कुमारीक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) हास्य-अभिनय

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९. प्रियंका कुमारीक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) महिला हास्य कलाकार

५०. प्रियंका कुमारीक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) महिला हास्य कलाकार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१. प्रियंका कुमारीक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाम प्रियंका कुमारी, विधा सम्मान, उप-विधा हास्य-अभिनय

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२. प्रियंका कुमारीक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३. प्रियंका कुमारीक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२”केँ विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई प्रविष्टि हास्य-अभिनयक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

५४. प्रियंका कुमारीक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५. खण्ड 1832क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) प्रियंका कुमारीक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२” प्रविष्टि हास्य-अभिनय क्षेत्रमे देल सम्मान, “महिला हास्य कलाकार” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1833 : विदेह-सदेह 8 — दुर्गानंद ठाकूर: विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२

५६. दुर्गानंद ठाकूरक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

(A) विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७. दुर्गानंद ठाकूरक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सम्मान

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८. दुर्गानंद ठाकूरक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) हास्य-अभिनय

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९. दुर्गानंद ठाकूरक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मंचपर व्यंग्य-हास्य

६०. दुर्गानंद ठाकूरक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) मंचपर व्यंग्य-हास्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१. दुर्गानंद ठाकूरक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाम दुर्गानंद ठाकूर, विधा सम्मान, उप-विधा हास्य-अभिनय

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२. दुर्गानंद ठाकूरक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३. दुर्गानंद ठाकूरक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२”केँ विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई प्रविष्टि हास्य-अभिनयक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

६४. दुर्गानंद ठाकूरक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५. खण्ड 1833क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) दुर्गानंद ठाकूरक “विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२” प्रविष्टि हास्य-अभिनय क्षेत्रमे देल सम्मान, “मंचपर व्यंग्य-हास्य” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1834 : विदेह-सदेह 8 — सुलेखा कुमारी: विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२

६६. सुलेखा कुमारीक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

(A) विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७. सुलेखा कुमारीक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सम्मान

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८. सुलेखा कुमारीक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) नृत्य

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९. सुलेखा कुमारीक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) लोकनृत्यक नवीन पीढ़ी

७०. सुलेखा कुमारीक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) लोकनृत्यक नवीन पीढ़ी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१. सुलेखा कुमारीक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाम सुलेखा कुमारी, विधा सम्मान, उप-विधा नृत्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२. सुलेखा कुमारीक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३. सुलेखा कुमारीक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२”कैं विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई प्रविष्टि नृत्यक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

७४. सुलेखा कुमारीक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५. खण्ड 1834क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सुलेखा कुमारीक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि नृत्य क्षेत्रमे देल सम्मान, “लोकनृत्यक नवीन पीढ़ी” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1835 : विदेह-सदेह 8 — अमित रंजन: विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२

७६. अमित रंजनक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

(A) विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७. अमित रंजनक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सम्मान

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८. अमित रंजनक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) नृत्य

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९. अमित रंजनक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) युवा नर्तक

८०. अमित रंजनक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) मैथिल लोकनृत्यक पुनरुज्जीवन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१. अमित रंजनक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाम अमित रंजन, विधा सम्मान, उप-विधा नृत्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२. अमित रंजनक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३. अमित रंजनक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२”केँ विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई प्रविष्टि नृत्यक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

८४. अमित रंजनक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५. खण्ड 1835क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) अमित रंजनक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि नृत्य क्षेत्रमे देल सम्मान, “मैथिल लोकनृत्यक पुनरुज्जीवन” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1836 : विदेह-सदेह 8 — पनकलाल मण्डल: विदेह चित्रकला सम्मान २०१२

८६. पनकलाल मण्डलक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

(A) विदेह चित्रकला सम्मान २०१२

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७. पनकलाल मण्डलक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सम्मान

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८. पनकलाल मण्डलक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) चित्रकला

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९. पनकलाल मण्डलक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मधुबनी चित्रकला

९०. पनकलाल मण्डलक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) मधुबनी चित्रकला

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९१. पनकलाल मण्डलक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाम पनकलाल मण्डल, विधा सम्मान, उप-विधा चित्रकला

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२. पनकलाल मण्डलक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३. पनकलाल मण्डलक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२”केँ विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई प्रविष्टि चित्रकलाक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

९४. पनकलाल मण्डलक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९५. खण्ड 1836क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पनकलाल मण्डलक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि चित्रकला क्षेत्रमे देल सम्मान, “मधुबनी चित्रकला” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1837 : विदेह-सदेह 8 — रमेश कुमार भारती: विदेह चित्रकला सम्मान २०१२

९६. रमेश कुमार भारतीक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

(A) विदेह चित्रकला सम्मान २०१२

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९७. रमेश कुमार भारतीक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सम्मान

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९८. रमेश कुमार भारतीक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) चित्रकला

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९९. रमेश कुमार भारतीक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) समकालीन मिथिला चित्रशैली

१००. रमेश कुमार भारतीक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) समकालीन मिथिला चित्रशैली

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१. रमेश कुमार भारतीक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाम रमेश कुमार भारती, विधा सम्मान, उप-विधा चित्रकला

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२. रमेश कुमार भारतीक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३. रमेश कुमार भारतीक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२”केँ विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई प्रविष्टि चित्रकलाक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०४. रमेश कुमार भारतीक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५. खण्ड 1837क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रमेश कुमार भारतीक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि चित्रकला क्षेत्रमे देल सम्मान, “समकालीन मिथिला चित्रशैली” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1838 : विदेह-सदेह 8 — परमानंद ठाकूर: विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम)

१०६. परमानंद ठाकूरक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

(A) विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७. परमानंद ठाकूरक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम)”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सम्मान

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८. परमानंद ठाकूरक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम)”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) वाद्य-संगीत

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९. परमानंद ठाकूरक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हारमोनियम वादन

११०. परमानंद ठाकूरक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) हारमोनियम वादन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११. परमानंद ठाकूरक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम)”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाम परमानंद ठाकूर, विधा सम्मान, उप-विधा वाद्य-संगीत

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२. परमानंद ठाकूरक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम)” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३. परमानंद ठाकूरक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम)”कैं विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई प्रविष्टि वाद्य-संगीतक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

११४. परमानंद ठाकूरक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५. खण्ड 1838क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) परमानंद ठाकूरक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम)” प्रविष्टि वाद्य-संगीत क्षेत्रमे देल सम्मान, “हारमोनियम वादन” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकैं एक ठाम रखैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1839 : विदेह-सदेह 8 — बुलन राउत: विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक)

११६. बुलन राउतक “विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

(A) विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७. बुलन राउतक “विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक)”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सम्मान

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८. बुलन राउतक “विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक)”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) वाद्य-संगीत

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९. बुलन राउतक “विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ढोलक वादनक परम्परा

१२०. बुलन राउतक “विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) ढोलक वादनक परम्परा

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१. बुलन राउतक “विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक)”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाम बुलन राउत, विधा सम्मान, उप-विधा वाद्य-संगीत

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२. बुलन राउतक “विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक)” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३. बुलन राउतक “विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक)”केँ विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई प्रविष्टि वाद्य-संगीतक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२४. बुलन राउतक “विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५. खण्ड 1839क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) बुलन राउतक “विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक)” प्रविष्टि वाद्य-संगीत क्षेत्रमे देल सम्मान, “ढोलक वादनक परम्परा” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1840 : विदेह-सदेह 8 — बहादुर राम: विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी)

१२६. बहादुर रामक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

(A) विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७. बहादुर रामक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी)”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सम्मान

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८. बहादुर रामक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी)”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) वाद्य-संगीत

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९. बहादुर रामक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) रसनचौकी वादन

१३०. बहादुर रामक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) रसनचौकी वादन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१. बहादुर रामक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी)”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाम बहादुर राम, विधा सम्मान, उप-विधा वाद्य-संगीत

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२. बहादुर रामक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी)” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३. बहादुर रामक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी)”केँ विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई प्रविष्टि वाद्य-संगीतक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३४. बहादुर रामक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५. खण्ड 1840क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) बहादुर रामक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी)” प्रविष्टि वाद्य-संगीत क्षेत्रमे देल सम्मान, “रसनचौकी वादन” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1841 : विदेह-सदेह 8 — जगदीश मल्लिक: विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२

१३६. जगदीश मल्लिकक “विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

(A) विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७. जगदीश मल्लिकक “विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सम्मान

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८. जगदीश मल्लिकक “विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) शिल्प

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९. जगदीश मल्लिकक “विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हस्तशिल्प

१४०. जगदीश मल्लिकक “विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) हस्तशिल्प

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१. जगदीश मल्लिकक “विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाम जगदीश मल्लिक, विधा सम्मान, उप-विधा शिल्प

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२. जगदीश मल्लिकक “विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३. जगदीश मल्लिकक “विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२”केँ विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई प्रविष्टि शिल्पक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४४. जगदीश मल्लिकक “विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५. खण्ड 1841क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) जगदीश मल्लिकक “विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि शिल्प क्षेत्रमे देल सम्मान, “हस्तशिल्प” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1842 : विदेह-सदेह 8 — यदुनंदन पंडित: विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२

१४६. यदुनंदन पंडितक “विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

(A) विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७. यदुनंदन पंडितक “विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सम्मान

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८. यदुनंदन पंडितक “विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) मूर्तिकला

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९. यदुनंदन पंडितक “विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) माटिक मूर्ति-परम्परा

१५०. यदुनंदन पंडितक “विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) माटिक मूर्ति-परम्परा

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१. यदुनंदन पंडितक “विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाम यदुनंदन पंडित, विधा सम्मान, उप-विधा मूर्तिकला

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२. यदुनंदन पंडितक “विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३. यदुनंदन पंडितक “विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२”कैं विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई प्रविष्टि मूर्तिकलाक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५४. यदुनंदन पंडितक “विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५५. खण्ड 1842क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) यदुनंदन पंडितक “विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२” प्रविष्टि मूर्तिकला क्षेत्रमे देल सम्मान, “माटिक मूर्ति-परम्परा” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकैं एक ठाम रखैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1843 : विदेह-सदेह 8 — झमेली मुखिया: विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२

१५६. झमेली मुखियाक “विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

(A) विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७. झमेली मुखियाक “विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सम्मान

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८. झमेली मुखियाक “विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) काष्ठशिल्प

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५९. झमेली मुखियाक “विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) लकड़ी कला

१६०. झमेली मुखियाक “विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) लकड़ी कला

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१. झमेली मुखियाक “विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाम झमेली मुखिया, विधा सम्मान, उप-विधा काष्ठशिल्प

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२. झमेली मुखियाक “विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३. झमेली मुखियाक “विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२”केँ विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई प्रविष्टि काष्ठशिल्पक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६४. झमेली मुखियाक “विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६५. खण्ड 1843क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) झमेली मुखियाक “विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२” प्रविष्टि काष्ठशिल्प क्षेत्रमे देल सम्मान, “लकड़ी कला” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1844 : विदेह-सदेह 8 — लक्ष्मी दास: विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२

१६६. लक्ष्मी दासक “विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना/विषय कोन अछि?

(A) विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७. लक्ष्मी दासक “विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२”क मुख्य विधा/श्रेणी कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सम्मान

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६८. लक्ष्मी दासक “विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२”क उप-विधा/क्षेत्र कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) किसानी

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६९. लक्ष्मी दासक “विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मैथिल किसानक स्वावलंबी परम्परा

१७०. लक्ष्मी दासक “विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) मैथिल किसानक स्वावलंबी परम्परा

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७१. लक्ष्मी दासक “विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२”क अध्ययनमे लेखक/सम्मान-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाम लक्ष्मी दास, विधा सम्मान, उप-विधा किसानी

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२. लक्ष्मी दासक “विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२” प्रविष्टि ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक/सांस्कृतिक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७३. लक्ष्मी दासक “विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२”केँ विदेह-सदेह 8क सम्मान-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई प्रविष्टि किसानीक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७४. लक्ष्मी दासक “विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७५. खण्ड 1844क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लक्ष्मी दासक “विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२” प्रविष्टि किसानी क्षेत्रमे देल सम्मान, “मैथिल किसानक स्वावलंबी परम्परा” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1845 : विदेह-सदेह 8 — गजेन्द्र ठाकूर: मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र

१७६. गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७७. गजेन्द्र ठाकूरक "मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) समीक्षा/शोध

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७८. गजेन्द्र ठाकूरक "मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) नाट्य-सिद्धान्त

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७९. गजेन्द्र ठाकूरक "मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र" पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श

१८०. गजेन्द्र ठाकूरक "मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र" प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८१. गजेन्द्र ठाकूरक "मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा समीक्षा/शोध, उप-विधा नाट्य-सिद्धान्त

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२. गजेन्द्र ठाकूरक "मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र" रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८३. गजेन्द्र ठाकूरक "मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र"केँ विदेह-सदेह 8क समीक्षा/शोध-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ नाट्य-सिद्धान्तक रूपमे समीक्षा/शोध-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८४. गजेन्द्र ठाकूरक "मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र" प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८५. खण्ड 1845क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र” प्रविष्टि समीक्षा/शोध, नाट्य-सिद्धान्त आ “जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1846 : विदेह-सदेह 8 — गजेन्द्र ठाकूर: जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा...

१८६. गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८७. गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक-समीक्षा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८८. गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) सामाजिक यथार्थ

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८९. गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जाति-व्यवस्था, बहिष्कार

१९०. गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) जाति-व्यवस्था, बहिष्कार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९१. गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा नाटक-समीक्षा, उप-विधा सामाजिक यथार्थ

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२. गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९३. गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल”कैं विदेह-सदेह 8क नाटक-समीक्षा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ सामाजिक यथार्थक रूपमे नाटक-समीक्षा-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९४. गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९५. खण्ड 1846क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” प्रविष्टि नाटक-समीक्षा, सामाजिक यथार्थ आ “जाति-व्यवस्था, बहिष्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1847 : विदेह-सदेह 8 — बेचन ठाकूर: डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)

१९६. बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९७. बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक (रूपान्तर)

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९८. बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) पाश्चात्य रूपान्तरण

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९९. बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मैथिली रंगमंच पर मार्लो

२००. बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) मैथिली रंगमंच पर मार्लो

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०१. बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०२. बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०३. बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक (रूपान्तर)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०४. बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०५. खण्ड 1847क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ “मैथिली रंगमंच पर मार्लो” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1848 : विदेह-सदेह 8 — बेचन ठाकूर: सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)

२०६. बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०७. बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक (रूपान्तर)

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०८. बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) पाश्चात्य रूपान्तरण

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०९. बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मिल्टनक बाइबलीय विद्रोह

२१०. बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) मिल्टनक बाइबलीय विद्रोह

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२११. बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१२. बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१३. बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)”कैं विदेह-सदेह 8क नाटक (रूपान्तर)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१४. बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१५. खण्ड 1848क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ “मिल्टनक बाइबलीय विद्रोह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1849 : विदेह-सदेह 8 — बेचन ठाकूर: मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)

२१६. बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१७. बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक (रूपान्तर)

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१८. बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) पाश्चात्य रूपान्तरण

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१९. बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) एलियटक धार्मिक-राजनीति

२२०. बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) शहादत, सत्ता-विरोध

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२१. बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२२. बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२३. बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक (रूपान्तर)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२४. बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२५. खण्ड 1849क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ “शहादत, सत्ता-विरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1850 : विदेह-सदेह 8 — बेचन ठाकूर: स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)

२२६. बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२७. बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक (रूपान्तर)

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२८. बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) पाश्चात्य रूपान्तरण

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२९. बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) औद्योगिक संघर्ष

२३०. बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) औद्योगिक संघर्ष

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३१. बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३२. बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३३. बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)”कैं विदेह-सदेह 8क नाटक (रूपान्तर)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३४. बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३५. खण्ड 1850क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ “औद्योगिक संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1851 : विदेह-सदेह 8 — बेचन ठाकूर: बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप

२३६. बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३७. बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) वार्ता/सन्दर्भ

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३८. बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) साक्षात्कार

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३९. बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) निर्देशनक व्यावहारिक चर्चा

२४०. बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) रंगमंचीय लोकाचार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४१. बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक बेचन ठाकूर, विधा वार्ता/सन्दर्भ, उप-विधा साक्षात्कार

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४२. बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४३. बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप”केँ विदेह-सदेह 8क वार्ता/सन्दर्भ-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे वार्ता/सन्दर्भ-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४४. बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४५. खण्ड 1851क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप” प्रविष्टि वार्ता/सन्दर्भ, साक्षात्कार आ “रंगमंचीय लोकाचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1852 : विदेह-सदेह 8 — बेचन ठाकूर: मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)

२४६. बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४७. बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) चिन्तन/लेख

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४८. बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) निर्देशन-विधि

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४९. बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) प्रायोगिक रंगमंच

२५०. बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) प्रायोगिक रंगमंच

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५१. बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक बेचन ठाकूर, विधा चिन्तन/लेख, उप-विधा निर्देशन-विधि

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५२. बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५३. बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)”कैं विदेह-सदेह 8क चिन्तन/लेख-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ निर्देशन-विधिक रूपमे चिन्तन/लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

२५४. बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५५. खण्ड 1852क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” प्रविष्टि चिन्तन/लेख, निर्देशन-विधि आ “प्रायोगिक रंगमंच” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1853 : विदेह-सदेह 8 — उदय नारायण सिंह “नचिकेता”: नो एंट्री : मा प्रविश

२५६. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) नो एंट्री : मा प्रविश

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५७. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५८. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) अस्तित्ववादी

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५९. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार

२६०. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६१. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक उदय नारायण सिंह “नचिकेता”, विधा नाटक, उप-विधा अस्तित्ववादी

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६२. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६३. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ अस्तित्ववादीक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

२६४. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६५. खण्ड 1853क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश” प्रविष्टि नाटक, अस्तित्ववादी आ “यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1854 : विदेह-सदेह 8 — उदय नारायण सिंह “नचिकेता”: जडैत मोमबत्ती

२६६. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) जडैत मोमबत्ती

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६७. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६८. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) प्रतीकात्मक

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६९. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मृत्यु, प्रतीक्षा, स्मृति

२७०. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) अस्तित्ववादी कोण

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७१. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक उदय नारायण सिंह “नचिकेता”, विधा नाटक, उप-विधा प्रतीकात्मक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७२. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७३. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती”कैं विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ प्रतीकात्मकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

२७४. उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७५. खण्ड 1854क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती” प्रविष्टि नाटक, प्रतीकात्मक आ “अस्तित्ववादी कोण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1855 : विदेह-सदेह 8 — गजेन्द्र ठाकूर: संकष्टन (नाटक)

२७६. गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) संकष्टन (नाटक)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७७. गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७८. गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) सामाजिक-यथार्थवादी

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७९. गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स

२८०. गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८१. गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-यथार्थवादी

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८२. गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८३. गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ सामाजिक-यथार्थवादीक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

२८४. गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८५. खण्ड 1855क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-यथार्थवादी आ “मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1856 : विदेह-सदेह 8 — विभा रानी: बलचन्दा (नाटक)

२८६. विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) बलचन्दा (नाटक)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८७. विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८८. विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) स्त्री-विमर्शी

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८९. विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध

२९०. विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९१. विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक विभा रानी, विधा नाटक, उप-विधा स्त्री-विमर्शी

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९२. विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९३. विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ स्त्री-विमर्शीक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

२९४. विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९५. खण्ड 1856क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, स्त्री-विमर्शी आ “पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1857 : विदेह-सदेह 8 — विभा रानी: भाग रौ (नाटक)

२९६. विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) भाग रौ (नाटक)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९७. विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९८. विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) सामाजिक यथार्थ

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९९. विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना

३००. विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०१. विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक विभा रानी, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक यथार्थ

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०२. विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०३. विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ सामाजिक यथार्थक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

३०४. विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०५. खण्ड 1857क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक यथार्थ आ “गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1858 : विदेह-सदेह 8 — ज्योति सुनीत चौधरी: कैसर (नाटक)

३०६. ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) कैसर (नाटक)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०७. ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०८. ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) सामाजिक-राजनीतिक

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०९. ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग

३१०. ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३११. ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-राजनीतिक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१२. ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१३. ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)”कैं विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ सामाजिक-राजनीतिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

३१४. ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१५. खण्ड 1858क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-राजनीतिक आ “शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1859 : विदेह-सदेह 8 — सरोज खिलाड़ी: बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक)

३१६. सरोज खिलाड़ीक “बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१७. सरोज खिलाड़ीक “बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१८. सरोज खिलाड़ीक “बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) सामाजिक-नैतिक

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१९. सरोज खिलाड़ीक “बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच

३२०. सरोज खिलाड़ीक “बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२१. सरोज खिलाड़ीक “बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सरोज खिलाड़ी, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-नैतिक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२२. सरोज खिलाड़ीक “बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२३. सरोज खिलाड़ीक “बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ सामाजिक-नैतिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

३२४. सरोज खिलाड़ीक “बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२५. खण्ड 1859क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सरोज खिलाड़ीक “बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-नैतिक आ “समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1860 : विदेह-सदेह 8 — जीवन झा: सुन्दर संयोग (नाटक)

३२६. जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) सुन्दर संयोग (नाटक)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२७. जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२८. जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) प्रणय-सामाजिक

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२९. जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता

३३०. जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३१. जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक जीवन झा, विधा नाटक, उप-विधा प्रणय-सामाजिक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३२. जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३३. जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ प्रणय-सामाजिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

३३४. जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३५. खण्ड 1860क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, प्रणय-सामाजिक आ “प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1861 : विदेह-सदेह 8 — जीवन झा: सामवती पुनर्जन्म (नाटक)

३३६. जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) सामवती पुनर्जन्म (नाटक)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३७. जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३८. जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) दार्शनिक-पौराणिक

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३९. जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) पुनर्जन्म, नियति, कर्म-सिद्धान्त

३४०. जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) पुनर्जन्म, नियति, कर्म-सिद्धान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४१. जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक जीवन झा, विधा नाटक, उप-विधा दार्शनिक-पौराणिक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४२. जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४३. जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ दार्शनिक-पौराणिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

३४४. जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४५. खण्ड 1861क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, दार्शनिक-पौराणिक आ “पुनर्जन्म, नियति, कर्म-सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1862 : विदेह-सदेह 8 — शिव कुमार झा: अंधविश्वास (नाटक)

३४६. शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) अंधविश्वास (नाटक)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४७. शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४८. शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) सामाजिक-व्यंग्य

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४९. शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) अंधविश्वास विरोधी चेतना

३५०. शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) अंधविश्वास विरोधी चेतना

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५१. शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक शिव कुमार झा, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-व्यंग्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५२. शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५३. शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)”कैं विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ सामाजिक-व्यंग्यक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

३५४. शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५५. खण्ड 1862क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-व्यंग्य आ “अंधविश्वास विरोधी चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1863 : विदेह-सदेह 8 — रवि भूषण पाठक: भफाइत चाहक जिनगी

३५६. रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) भफाइत चाहक जिनगी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५७. रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५८. रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) व्यक्ति-चरित्र

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५९. रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) प्रवासी जीवन-विसंगति

३६०. रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) प्रवासी जीवन-विसंगति

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६१. रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा नाटक, उप-विधा व्यक्ति-चरित्र

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६२. रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६३. रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ व्यक्ति-चरित्रक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

३६४. रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६५. खण्ड 1863क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी” प्रविष्टि नाटक, व्यक्ति-चरित्र आ “प्रवासी जीवन-विसंगति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1864 : विदेह-सदेह 8 — शम्भू कुमार सिंह: मिथिलाक बेटी (नाटक)

३६६. शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) मिथिलाक बेटी (नाटक)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६७. शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६८. शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) नारी-केन्द्रित

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६९. शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मिथिला नारी-दशा

३७०. शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) मिथिला नारी-दशा

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७१. शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक शम्भू कुमार सिंह, विधा नाटक, उप-विधा नारी-केन्द्रित

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७२. शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७३. शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ नारी-केन्द्रितक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

३७४. शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७५. खण्ड 1864क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, नारी-केन्द्रित आ “मिथिला नारी-दशा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1865 : विदेह-सदेह 8 — दुगानन्द मण्डल: आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)

३७६. दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७७. दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) संस्मरण/लेख

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७८. दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) ऐतिहासिक मूल्यांकन

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७९. दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मैथिली रंगमंचक विकासमे योगदानक दस्तावेजीकरण

३८०. दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) मैथिली रंगमंचक विकासमे योगदानक दस्तावेजीकरण

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८१. दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक दुगानन्द मण्डल, विधा संस्मरण/लेख, उप-विधा ऐतिहासिक मूल्यांकन

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८२. दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८३. दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)”केँ विदेह-सदेह 8क संस्मरण/लेख-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ ऐतिहासिक मूल्यांकनक रूपमे संस्मरण/लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

३८४. दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८५. खण्ड 1865क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) दुगानन्द मण्डलक “आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)” प्रविष्टि संस्मरण/लेख, ऐतिहासिक मूल्यांकन आ “मैथिली रंगमंचक विकासमे योगदानक दस्तावेजीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1866 : विदेह-सदेह 8 — सुजीत कुमार झा: मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन

३८६. सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८७. सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रिपोर्ताज

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८८. सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) स्ट्रीट थियेटर

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८९. सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन-जागरूकता, लोक-नाट्य परम्परा

३९०. सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) जन-जागरूकता, लोक-नाट्य परम्परा

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९१. सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सुजीत कुमार झा, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा स्ट्रीट थियेटर

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९२. सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९३. सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन”कैँ विदेह-सदेह 8क रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ स्ट्रीट थियेटरक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

३९४. सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९५. खण्ड 1866क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन” प्रविष्टि रिपोर्ताज, स्ट्रीट थियेटर आ “जन-जागरूकता, लोक-नाट्य परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकैँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1867 : विदेह-सदेह 8 — सुजीत कुमार झा: उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे

३९६. सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९७. सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रिपोर्ताज

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९८. सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) राजनीतिक

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९९. सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) नेपाली राजनीति, मैथिली प्रतिनिधित्व

४००. सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) नेपाली राजनीति, मैथिली प्रतिनिधित्व

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०१. सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सुजीत कुमार झा, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा राजनीतिक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०२. सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०३. सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे”केँ विदेह-सदेह 8क रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ राजनीतिकक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

४०४. सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०५. खण्ड 1867क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे” प्रविष्टि रिपोर्ताज, राजनीतिक आ “नेपाली राजनीति, मैथिली प्रतिनिधित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1868 : विदेह-सदेह 8 — तरुणेश मिश्र: महाविद्यालय-झंकार

४०६. तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) महाविद्यालय-झंकार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०७. तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रिपोर्ताज

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०८. तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) शैक्षिक-सांस्कृतिक

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०९. तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) छात्र आन्दोलन, सांस्कृतिक गतिविधि

४१०. तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) छात्र आन्दोलन, सांस्कृतिक गतिविधि

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४११. तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक तरुणेश मिश्र, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा शैक्षिक-सांस्कृतिक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१२. तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१३. तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार”केँ विदेह-सदेह 8क रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ शैक्षिक-सांस्कृतिकक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

४१४. तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१५. खण्ड 1868क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार” प्रविष्टि रिपोर्ताज, शैक्षिक-सांस्कृतिक आ “छात्र आन्दोलन, सांस्कृतिक गतिविधि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1869 : विदेह-सदेह 8 — उमेश मण्डल: विदेह मैथिली नाट्य उत्सव

४१६. उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) विदेह मैथिली नाट्य उत्सव

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१७. उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रिपोर्ताज

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१८. उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) नाट्य-महोत्सव

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१९. उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) दस्तावेजीकरण

४२०. उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) दस्तावेजीकरण

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२१. उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक उमेश मण्डल, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा नाट्य-महोत्सव

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२२. उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२३. उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव”केँ विदेह-सदेह 8क रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ नाट्य-महोत्सवक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

४२४. उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२५. खण्ड 1869क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव” प्रविष्टि रिपोर्ताज, नाट्य-महोत्सव आ “दस्तावेजीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1870 : विदेह-सदेह 8 — मयंक सुन्दर शशि: अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन

४२६. मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२७. मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रिपोर्ताज

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२८. मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) अन्तर्राष्ट्रिय नाट्य

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२९. मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) डायस्पोरा, बोरद्यू सांस्कृतिक पूँजी, वैश्विक मैथिली

४३०. मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) डायस्पोरा, बोरद्यू सांस्कृतिक पूँजी, वैश्विक मैथिली

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३१. मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मयंक सुन्दर शशि, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा अन्तर्राष्ट्रिय नाट्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३२. मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३३. मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन”कैं विदेह-सदेह 8क रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ अन्तर्राष्ट्रिय नाट्यक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

४३४. मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३५. खण्ड 1870क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन” प्रविष्टि रिपोर्ताज, अन्तर्राष्ट्रिय नाट्य आ “डायस्पोरा, बोरद्यू सांस्कृतिक पूँजी, वैश्विक मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1871 : विदेह-सदेह 8 — जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा): नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन

४३६. जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३७. जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रिपोर्ताज

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३८. जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) मंचन-विवरण

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३९. जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) राजा, पतन, शक्ति-विश्लेषण

४४०. जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) राजा, पतन, शक्ति-विश्लेषण

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४१. जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा), विधा रिपोर्ताज, उप-विधा मंचन-विवरण

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४२. जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४३. जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन”केँ विदेह-सदेह 8क रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ मंचन-विवरणक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

४४४. जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४५. खण्ड 1871क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन” प्रविष्टि रिपोर्ताज, मंचन-विवरण आ “राजा, पतन, शक्ति-विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1872 : विदेह-सदेह 8 — सत्यनारायण झा: मैथिली फिल्मक लिस्ट

४४६. सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) मैथिली फिल्मक लिस्ट

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४७. सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सूची/दस्तावेज

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४८. सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) सिनेमा-परम्परा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४९. सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मैथिली चलचित्रक अभिलेख

४५०. सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) मैथिली चलचित्रक अभिलेख

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५१. सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सत्यनारायण झा, विधा सूची/दस्तावेज, उप-विधा सिनेमा-परम्परा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५२. सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५३. सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट”केँ विदेह-सदेह 8क सूची/दस्तावेज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ सिनेमा-परम्पराक रूपमे सूची/दस्तावेज-संसारसँ जुड़ल अछि।

४५४. सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५५. खण्ड 1872क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट” प्रविष्टि सूची/दस्तावेज, सिनेमा-परम्परा आ “मैथिली चलचित्रक अभिलेख” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1873 : विदेह-सदेह 8 — सत्यनारायण झा: आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार

४५६. सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५७. सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पुरस्कार-वृत्त

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५८. सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) सम्मान-रिपोर्ताज

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५९. सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मैथिली रंगकर्मी सम्मान

४६०. सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) मैथिली रंगकर्मी सम्मान

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६१. सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सत्यनारायण झा, विधा पुरस्कार-वृत्त, उप-विधा सम्मान-रिपोर्ताज

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६२. सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६३. सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार”केँ विदेह-सदेह 8क पुरस्कार-वृत्त-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ सम्मान-रिपोर्ताजक रूपमे पुरस्कार-वृत्त-संसारसँ जुड़ल अछि।

४६४. सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६५. खण्ड 1873क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार” प्रविष्टि पुरस्कार-वृत्त, सम्मान-रिपोर्ताज आ “मैथिली रंगकर्मी सम्मान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1874 : विदेह-सदेह 8 — सत्यनारायण झा: रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार

४६६. सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६७. सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पुरस्कार-वृत्त

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६८. सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) सम्मान-रिपोर्ताज

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६९. सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) महिला रंगकर्मी सम्मान

४७०. सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) महिला रंगकर्मी सम्मान

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७१. सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सत्यनारायण झा, विधा पुरस्कार-वृत्त, उप-विधा सम्मान-रिपोर्ताज

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७२. सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७३. सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार”कैं विदेह-सदेह 8क पुरस्कार-वृत्त-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ सम्मान-रिपोर्ताजक रूपमे पुरस्कार-वृत्त-संसारसँ जुड़ल अछि।

४७४. सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७५. खण्ड 1874क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार” प्रविष्टि पुरस्कार-वृत्त, सम्मान-रिपोर्ताज आ “महिला रंगकर्मी सम्मान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1875 : विदेह-सदेह 8 — — (रिपोर्ताज): बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित

४७६. — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७७. — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मंचन-सूचना

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७८. — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) नाटक-प्रदर्शन

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७९. — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) कर्म, भाग्य, दैव – लोक दर्शन

४८०. — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) कर्म, भाग्य, दैव – लोक दर्शन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८१. — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक — (रिपोर्ताज), विधा मंचन-सूचना, उप-विधा नाटक-प्रदर्शन

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८२. — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८३. — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित”केँ विदेह-सदेह 8क मंचन-सूचना-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ नाटक-प्रदर्शनक रूपमे मंचन-सूचना-संसारसँ जुड़ल अछि।

४८४. — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८५. खण्ड 1875क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित” प्रविष्टि मंचन-सूचना, नाटक-प्रदर्शन आ “कर्म, भाग्य, दैव – लोक दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1876 : विदेह-सदेह 8 — गजेन्द्र ठाकूर: नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पु...

४८६. गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८७. गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पुरस्कार-वृत्त

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८८. गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) सम्मान-रिपोर्ताज

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८९. गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) युवा नाट्य-प्रतिभाक संस्थागत मान्यता

४९०. गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) युवा नाट्य-प्रतिभाक संस्थागत मान्यता

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९१. गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पुरस्कार-वृत्त, उप-विधा सम्मान-रिपोर्ताज

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९२. गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९३. गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११”केँ विदेह-सदेह 8क पुरस्कार-वृत्त-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ सम्मान-रिपोर्ताजक रूपमे पुरस्कार-वृत्त-संसारसँ जुड़ल अछि।

४९४. गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९५. खण्ड 1876क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११” प्रविष्टि पुरस्कार-वृत्त, सम्मान-रिपोर्ताज आ “युवा नाट्य-प्रतिभाक संस्थागत मान्यता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1877 : विदेह-सदेह 8 — — (रिपोर्ताज): "भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक

४९६. — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) "भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९७. — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक/मंचन

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९८. — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) सामाजिक यथार्थ

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९९. — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) विस्मृति, भूल, पहिचान

५००. — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) विस्मृति, भूल, पहिचान

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०१. — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक — (रिपोर्ताज), विधा नाटक/मंचन, उप-विधा सामाजिक यथार्थ

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०२. — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०३. — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक/मंचन-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ सामाजिक यथार्थक रूपमे नाटक/मंचन-संसारसँ जुड़ल अछि।

५०४. — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०५. खण्ड 1877क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक” प्रविष्टि नाटक/मंचन, सामाजिक यथार्थ आ “विस्मृति, भूल, पहिचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1878 : विदेह-सदेह 8 — मुन्ना जी: मैथिलोत्सव २०११

५०६. मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) मैथिलोत्सव २०११

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०७. मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रिपोर्ताज

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०८. मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) महोत्सव-विवरण

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०९. मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मैथिली उत्सव, सांस्कृतिक प्रदर्शन, सामूहिक अस्मिता

५१०. मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) मैथिली उत्सव, सांस्कृतिक प्रदर्शन, सामूहिक अस्मिता

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५११. मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मुन्ना जी, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा महोत्सव-विवरण

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१२. मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१३. मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११”कैं विदेह-सदेह 8क रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ महोत्सव-विवरणक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

५१४. मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१५. खण्ड 1878क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११” प्रविष्टि रिपोर्ताज, महोत्सव-विवरण आ “मैथिली उत्सव, सांस्कृतिक प्रदर्शन, सामूहिक अस्मिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1879 : विदेह-सदेह 8 — पूनम मण्डल: जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य...

५१६. पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१७. पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पुरस्कार-रिपोर्ताज

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१८. पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) साहित्य सम्मान

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१९. पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ग्राम-जीवन, लोक-संवेदना, दस्तावेजीकरण

५२०. पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) ग्राम-जीवन, लोक-संवेदना, दस्तावेजीकरण

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२१. पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक पूनम मण्डल, विधा पुरस्कार-रिपोर्ताज, उप-विधा साहित्य सम्मान

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२२. पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२३. पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११”कैँ विदेह-सदेह 8क पुरस्कार-रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ साहित्य सम्मानक रूपमे पुरस्कार-रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

५२४. पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२५. खण्ड 1879क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” प्रविष्टि पुरस्कार-रिपोर्ताज, साहित्य सम्मान आ “ग्राम-जीवन, लोक-संवेदना, दस्तावेजीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकैँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1880 : विदेह-सदेह 8 — मनोज कुमार मण्डल: "बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन

५२६. मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) "बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२७. मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मंचन-रिपोर्ताज

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२८. मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) सिल थियेटर

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२९. मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) पितृ-संकट

५३०. मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) पितृ-संकट

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३१. मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मनोज कुमार मण्डल, विधा मंचन-रिपोर्ताज, उप-विधा सिल थियेटर

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३२. मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३३. मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन”केँ विदेह-सदेह 8क मंचन-रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ सिल थियेटरक रूपमे मंचन-रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

५३४. मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३५. खण्ड 1880क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टि मंचन-रिपोर्ताज, सिल थियेटर आ “पितृ-संकट” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1881 : विदेह-सदेह 8 — मनोज कुमार मण्डल: "अधिकार" नाटक – सिल मंचन

५३६. मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) "अधिकार" नाटक – सिल मंचन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३७. मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मंचन-रिपोर्ताज

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३८. मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) सिल थियेटर

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३९. मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) अधिकार-चेतना, ग्राम्सी, संघर्ष

५४०. मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) अधिकार-चेतना, ग्राम्सी, संघर्ष

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४१. मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मनोज कुमार मण्डल, विधा मंचन-रिपोर्ताज, उप-विधा सिल थियेटर

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४२. मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४३. मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन”कैं विदेह-सदेह 8क मंचन-रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ सिल थियेटरक रूपमे मंचन-रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

५४४. मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४५. खण्ड 1881क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टि मंचन-रिपोर्ताज, सिल थियेटर आ “अधिकार-चेतना, ग्राम्सी, संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1882 : विदेह-सदेह 8 — बृषेश चन्द्र लाल: तितिया प्रस्तुति

५४६. बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) तितिया प्रस्तुति

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४७. बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रिपोर्ताज

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४८. बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) सांस्कृतिक प्रस्तुति

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४९. बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) रंगमंच विविधता, प्रयोगात्मक प्रदर्शन

५५०. बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) रंगमंच विविधता, प्रयोगात्मक प्रदर्शन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५१. बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक बृषेश चन्द्र लाल, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा सांस्कृतिक प्रस्तुति

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५२. बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५३. बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति”केँ विदेह-सदेह 8क रिपोर्ताज-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ सांस्कृतिक प्रस्तुतिक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।

५५४. बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५५. खण्ड 1882क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति” प्रविष्टि रिपोर्ताज, सांस्कृतिक प्रस्तुति आ “रंगमंच विविधता, प्रयोगात्मक प्रदर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1883 : विदेह-सदेह 8 — गजेन्द्र ठाकूर: हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)

५५६. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५७. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५८. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) सम्पादकीय/प्रस्तावना

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५९. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) विदेह आन्दोलनक उद्घोष

५६०. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) विदेह आन्दोलनक उद्घोष

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६१. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय/प्रस्तावना

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६२. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६३. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)”केँ विदेह-सदेह 8क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ सम्पादकीय/प्रस्तावनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५६४. गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६५. खण्ड 1883क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय/प्रस्तावना आ “विदेह आन्दोलनक उद्घोष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1884 : विदेह-सदेह 8 — गजेन्द्र ठाकूर: विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी

५६६. गजेन्द्र ठाकूरक “विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६७. गजेन्द्र ठाकूरक “विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेख

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६८. गजेन्द्र ठाकूरक “विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) पुरस्कार-वृत्त

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६९. गजेन्द्र ठाकूरक “विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) रंगमंचीय सम्मान

५७०. गजेन्द्र ठाकूरक “विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) रंगमंचीय सम्मान

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७१. गजेन्द्र ठाकूरक “विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा लेख, उप-विधा पुरस्कार-वृत्त

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७२. गजेन्द्र ठाकूरक “विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७३. गजेन्द्र ठाकूरक “विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी”केँ विदेह-सदेह 8क लेख-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ पुरस्कार-वृत्तक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

५७४. गजेन्द्र ठाकूरक “विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७५. खण्ड 1884क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गजेन्द्र ठाकूरक “विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी” प्रविष्टि लेख, पुरस्कार-वृत्त आ “रंगमंचीय सम्मान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1885 : विदेह-सदेह 8 — गजेन्द्र ठाकूर: मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र

५७६. खण्ड 1885, सूचकांक पंक्ति 576: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७७. खण्ड 1885, सूचकांक पंक्ति 576: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) समीक्षा/शोध

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७८. खण्ड 1885, सूचकांक पंक्ति 576: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) नाट्य-सिद्धान्त

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७९. खण्ड 1885, सूचकांक पंक्ति 576: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श

५८०. खण्ड 1885, सूचकांक पंक्ति 576: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८१. खण्ड 1885, सूचकांक पंक्ति 576: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा समीक्षा/शोध, उप-विधा नाट्य-सिद्धान्त

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८२. खण्ड 1885, सूचकांक पंक्ति 576: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८३. खण्ड 1885, सूचकांक पंक्ति 576: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र”केँ विदेह-सदेह 8क समीक्षा/शोध-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ नाट्य-सिद्धान्तक रूपमे समीक्षा/शोध-संसारसँ जुड़ल अछि।

५८४. खण्ड 1885, सूचकांक पंक्ति 576: गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८५. खण्ड 1885, सूचकांक पंक्ति 576: एहि खण्डक सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) खण्ड 1885, सूचकांक पंक्ति 576मे गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र” प्रविष्टि समीक्षा/शोध, नाट्य-सिद्धान्त आ “जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1886 : विदेह-सदेह 8 — गजेन्द्र ठाकूर: जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा...

५८६. खण्ड 1886, सूचकांक पंक्ति 577: गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८७. खण्ड 1886, सूचकांक पंक्ति 577: गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक-समीक्षा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८८. खण्ड 1886, सूचकांक पंक्ति 577: गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) सामाजिक यथार्थ

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८९. खण्ड 1886, सूचकांक पंक्ति 577: गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जाति-व्यवस्था, बहिष्कार

५९०. खण्ड 1886, सूचकांक पंक्ति 577: गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) जाति-व्यवस्था, बहिष्कार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९१. खण्ड 1886, सूचकांक पंक्ति 577: गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा नाटक-समीक्षा, उप-विधा सामाजिक यथार्थ

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९२. खण्ड 1886, सूचकांक पंक्ति 577: गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९३. खण्ड 1886, सूचकांक पंक्ति 577: गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-समीक्षा-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ सामाजिक यथार्थक रूपमे नाटक-समीक्षा-संसारसँ जुड़ल अछि।

५९४. खण्ड 1886, सूचकांक पंक्ति 577: गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९५. खण्ड 1886, सूचकांक पंक्ति 577: एहि खण्डक सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) खण्ड 1886, सूचकांक पंक्ति 577मे गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” प्रविष्टि नाटक-समीक्षा, सामाजिक यथार्थ आ “जाति-व्यवस्था, बहिष्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1887 : विदेह-सदेह 8 — बेचन ठाकूर: डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)

५९६. खण्ड 1887, सूचकांक पंक्ति 578: बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९७. खण्ड 1887, सूचकांक पंक्ति 578: बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक (रूपान्तर)

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९८. खण्ड 1887, सूचकांक पंक्ति 578: बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) पाश्चात्य रूपान्तरण

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९९. खण्ड 1887, सूचकांक पंक्ति 578: बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मैथिली रंगमंच पर मार्लो

६००. खण्ड 1887, सूचकांक पंक्ति 578: बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) मैथिली रंगमंच पर मार्लो

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०१. खण्ड 1887, सूचकांक पंक्ति 578: बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०२. खण्ड 1887, सूचकांक पंक्ति 578: बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०३. खण्ड 1887, सूचकांक पंक्ति 578: बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)”कैं विदेह-सदेह 8क नाटक (रूपान्तर)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि।

६०४. खण्ड 1887, सूचकांक पंक्ति 578: बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०५. खण्ड 1887, सूचकांक पंक्ति 578: एहि खण्डक सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) खण्ड 1887, सूचकांक पंक्ति 578मे बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ “मैथिली रंगमंच पर मार्लो” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1888 : विदेह-सदेह 8 — बेचन ठाकूर: सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)

६०६. खण्ड 1888, सूचकांक पंक्ति 579: बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०७. खण्ड 1888, सूचकांक पंक्ति 579: बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक (रूपान्तर)

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०८. खण्ड 1888, सूचकांक पंक्ति 579: बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) पाश्चात्य रूपान्तरण

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०९. खण्ड 1888, सूचकांक पंक्ति 579: बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मिल्टनक बाइबलीय विद्रोह

६१०. खण्ड 1888, सूचकांक पंक्ति 579: बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) रूपान्तरशास्त्र, चॉम्स्की

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६११. खण्ड 1888, सूचकांक पंक्ति 579: बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१२. खण्ड 1888, सूचकांक पंक्ति 579: बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१३. खण्ड 1888, सूचकांक पंक्ति 579: बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक (रूपान्तर)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि।

६१४. खण्ड 1888, सूचकांक पंक्ति 579: बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१५. खण्ड 1888, सूचकांक पंक्ति 579: एहि खण्डक सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) खण्ड 1888, सूचकांक पंक्ति 579मे बेचन ठाकूरक “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ “रूपान्तरशास्त्र, चॉम्स्की” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1889 : विदेह-सदेह 8 — बेचन ठाकूर: मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)

६१६. खण्ड 1889, सूचकांक पंक्ति 580: बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१७. खण्ड 1889, सूचकांक पंक्ति 580: बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक (रूपान्तर)

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१८. खण्ड 1889, सूचकांक पंक्ति 580: बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) पाश्चात्य रूपान्तरण

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१९. खण्ड 1889, सूचकांक पंक्ति 580: बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) एलियटक धार्मिक-राजनीति

६२०. खण्ड 1889, सूचकांक पंक्ति 580: बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) शहादत, सत्ता-विरोध

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२१. खण्ड 1889, सूचकांक पंक्ति 580: बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२२. खण्ड 1889, सूचकांक पंक्ति 580: बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२३. खण्ड 1889, सूचकांक पंक्ति 580: बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)”कैं विदेह-सदेह 8क नाटक (रूपान्तर)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि।

६२४. खण्ड 1889, सूचकांक पंक्ति 580: बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२५. खण्ड 1889, सूचकांक पंक्ति 580: एहि खण्डक सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) खण्ड 1889, सूचकांक पंक्ति 580मे बेचन ठाकूरक “मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ “शहादत, सत्ता-विरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1890 : विदेह-सदेह 8 — बेचन ठाकूर: स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)

६२६. खण्ड 1890, सूचकांक पंक्ति 581: बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२७. खण्ड 1890, सूचकांक पंक्ति 581: बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक (रूपान्तर)

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२८. खण्ड 1890, सूचकांक पंक्ति 581: बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) पाश्चात्य रूपान्तरण

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२९. खण्ड 1890, सूचकांक पंक्ति 581: बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) औद्योगिक संघर्ष

६३०. खण्ड 1890, सूचकांक पंक्ति 581: बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) औद्योगिक संघर्ष

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३१. खण्ड 1890, सूचकांक पंक्ति 581: बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३२. खण्ड 1890, सूचकांक पंक्ति 581: बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३३. खण्ड 1890, सूचकांक पंक्ति 581: बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक (रूपान्तर)-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि।

६३४. खण्ड 1890, सूचकांक पंक्ति 581: बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३५. खण्ड 1890, सूचकांक पंक्ति 581: एहि खण्डक सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) खण्ड 1890, सूचकांक पंक्ति 581मे बेचन ठाकूरक “स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ “औद्योगिक संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1891 : विदेह-सदेह 8 — बेचन ठाकूर: बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप

६३६. खण्ड 1891, सूचकांक पंक्ति 582: बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३७. खण्ड 1891, सूचकांक पंक्ति 582: बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) वार्ता/सन्दर्भ

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३८. खण्ड 1891, सूचकांक पंक्ति 582: बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) साक्षात्कार

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३९. खण्ड 1891, सूचकांक पंक्ति 582: बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) निर्देशनक व्यावहारिक चर्चा

६४०. खण्ड 1891, सूचकांक पंक्ति 582: बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) रंगमंचीय लोकाचार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४१. खण्ड 1891, सूचकांक पंक्ति 582: बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक बेचन ठाकूर, विधा वार्ता/सन्दर्भ, उप-विधा साक्षात्कार

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४२. खण्ड 1891, सूचकांक पंक्ति 582: बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४३. खण्ड 1891, सूचकांक पंक्ति 582: बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप”केँ विदेह-सदेह 8क वार्ता/सन्दर्भ-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे वार्ता/सन्दर्भ-संसारसँ जुड़ल अछि।

६४४. खण्ड 1891, सूचकांक पंक्ति 582: बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४५. खण्ड 1891, सूचकांक पंक्ति 582: एहि खण्डक सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) खण्ड 1891, सूचकांक पंक्ति 582मे बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप” प्रविष्टि वार्ता/सन्दर्भ, साक्षात्कार आ “रंगमंचीय लोकाचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1892 : विदेह-सदेह 8 — बेचन ठाकूर: मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)

६४६. खण्ड 1892, सूचकांक पंक्ति 583: बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४७. खण्ड 1892, सूचकांक पंक्ति 583: बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) चिन्तन/लेख

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४८. खण्ड 1892, सूचकांक पंक्ति 583: बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) निर्देशन-विधि

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४९. खण्ड 1892, सूचकांक पंक्ति 583: बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) प्रायोगिक रंगमंच

६५०. खण्ड 1892, सूचकांक पंक्ति 583: बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) प्रायोगिक रंगमंच

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५१. खण्ड 1892, सूचकांक पंक्ति 583: बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक बेचन ठाकूर, विधा चिन्तन/लेख, उप-विधा निर्देशन-विधि

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५२. खण्ड 1892, सूचकांक पंक्ति 583: बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५३. खण्ड 1892, सूचकांक पंक्ति 583: बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)”कैं विदेह-सदेह 8क चिन्तन/लेख-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ निर्देशन-विधिक रूपमे चिन्तन/लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।

६५४. खण्ड 1892, सूचकांक पंक्ति 583: बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५५. खण्ड 1892, सूचकांक पंक्ति 583: एहि खण्डक सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) खण्ड 1892, सूचकांक पंक्ति 583मे बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” प्रविष्टि चिन्तन/लेख, निर्देशन-विधि आ “प्रायोगिक रंगमंच” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1893 : विदेह-सदेह 8 — उदय नारायण सिंह “नचिकेता”: नो एंट्री : मा प्रविश

६५६. खण्ड 1893, सूचकांक पंक्ति 584: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) नो एंट्री : मा प्रविश

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५७. खण्ड 1893, सूचकांक पंक्ति 584: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५८. खण्ड 1893, सूचकांक पंक्ति 584: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) अस्तित्ववादी

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५९. खण्ड 1893, सूचकांक पंक्ति 584: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार

६६०. खण्ड 1893, सूचकांक पंक्ति 584: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६१. खण्ड 1893, सूचकांक पंक्ति 584: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक उदय नारायण सिंह “नचिकेता”, विधा नाटक, उप-विधा अस्तित्ववादी

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६२. खण्ड 1893, सूचकांक पंक्ति 584: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६३. खण्ड 1893, सूचकांक पंक्ति 584: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ अस्तित्ववादीक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

६६४. खण्ड 1893, सूचकांक पंक्ति 584: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६५. खण्ड 1893, सूचकांक पंक्ति 584: एहि खण्डक सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) खण्ड 1893, सूचकांक पंक्ति 584मे उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश” प्रविष्टि नाटक, अस्तित्ववादी आ “यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1894 : विदेह-सदेह 8 — उदय नारायण सिंह “नचिकेता”: जडैत मोमबत्ती

६६६. खण्ड 1894, सूचकांक पंक्ति 585: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) जडैत मोमबत्ती

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६७. खण्ड 1894, सूचकांक पंक्ति 585: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६८. खण्ड 1894, सूचकांक पंक्ति 585: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) प्रतीकात्मक

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६९. खण्ड 1894, सूचकांक पंक्ति 585: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मृत्यु, प्रतीक्षा, स्मृति

६७०. खण्ड 1894, सूचकांक पंक्ति 585: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) अस्तित्ववादी कोण

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७१. खण्ड 1894, सूचकांक पंक्ति 585: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक उदय नारायण सिंह “नचिकेता”, विधा नाटक, उप-विधा प्रतीकात्मक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७२. खण्ड 1894, सूचकांक पंक्ति 585: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७३. खण्ड 1894, सूचकांक पंक्ति 585: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती”कैं विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ प्रतीकात्मकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

६७४. खण्ड 1894, सूचकांक पंक्ति 585: उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७५. खण्ड 1894, सूचकांक पंक्ति 585: एहि खण्डक सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) खण्ड 1894, सूचकांक पंक्ति 585मे उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती” प्रविष्टि नाटक, प्रतीकात्मक आ “अस्तित्ववादी कोण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1895 : विदेह-सदेह 8 — गजेन्द्र ठाकूर: संकष्टन (नाटक)

६७६. खण्ड 1895, सूचकांक पंक्ति 586: गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) संकष्टन (नाटक)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७७. खण्ड 1895, सूचकांक पंक्ति 586: गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७८. खण्ड 1895, सूचकांक पंक्ति 586: गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) सामाजिक-यथार्थवादी

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७९. खण्ड 1895, सूचकांक पंक्ति 586: गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स

६८०. खण्ड 1895, सूचकांक पंक्ति 586: गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८१. खण्ड 1895, सूचकांक पंक्ति 586: गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-यथार्थवादी

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८२. खण्ड 1895, सूचकांक पंक्ति 586: गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८३. खण्ड 1895, सूचकांक पंक्ति 586: गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ सामाजिक-यथार्थवादीक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

६८४. खण्ड 1895, सूचकांक पंक्ति 586: गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८५. खण्ड 1895, सूचकांक पंक्ति 586: एहि खण्डक सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) खण्ड 1895, सूचकांक पंक्ति 586मे गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-यथार्थवादी आ “मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1896 : विदेह-सदेह 8 — विभा रानी: बलचन्दा (नाटक)

६८६. खण्ड 1896, सूचकांक पंक्ति 587: विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) बलचन्दा (नाटक)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८७. खण्ड 1896, सूचकांक पंक्ति 587: विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८८. खण्ड 1896, सूचकांक पंक्ति 587: विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) स्त्री-विमर्शी

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८९. खण्ड 1896, सूचकांक पंक्ति 587: विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध

६९०. खण्ड 1896, सूचकांक पंक्ति 587: विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९१. खण्ड 1896, सूचकांक पंक्ति 587: विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक विभा रानी, विधा नाटक, उप-विधा स्त्री-विमर्शी

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९२. खण्ड 1896, सूचकांक पंक्ति 587: विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९३. खण्ड 1896, सूचकांक पंक्ति 587: विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)”कैँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ स्त्री-विमर्शीक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

६९४. खण्ड 1896, सूचकांक पंक्ति 587: विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९५. खण्ड 1896, सूचकांक पंक्ति 587: एहि खण्डक सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) खण्ड 1896, सूचकांक पंक्ति 587मे विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, स्त्री-विमर्शी आ “पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1897 : विदेह-सदेह 8 — विभा रानी: भाग रौ (नाटक)

६९६. खण्ड 1897, सूचकांक पंक्ति 588: विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) भाग रौ (नाटक)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९७. खण्ड 1897, सूचकांक पंक्ति 588: विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९८. खण्ड 1897, सूचकांक पंक्ति 588: विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) सामाजिक यथार्थ

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९९. खण्ड 1897, सूचकांक पंक्ति 588: विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना

७००. खण्ड 1897, सूचकांक पंक्ति 588: विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०१. खण्ड 1897, सूचकांक पंक्ति 588: विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक विभा रानी, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक यथार्थ

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०२. खण्ड 1897, सूचकांक पंक्ति 588: विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०३. खण्ड 1897, सूचकांक पंक्ति 588: विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ सामाजिक यथार्थक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

७०४. खण्ड 1897, सूचकांक पंक्ति 588: विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०५. खण्ड 1897, सूचकांक पंक्ति 588: एहि खण्डक सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) खण्ड 1897, सूचकांक पंक्ति 588मे विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक यथार्थ आ “गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1898 : विदेह-सदेह 8 — ज्योति सुनीत चौधरी: कैसर (नाटक)

७०६. खण्ड 1898, सूचकांक पंक्ति 589: ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) कैसर (नाटक)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०७. खण्ड 1898, सूचकांक पंक्ति 589: ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०८. खण्ड 1898, सूचकांक पंक्ति 589: ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) सामाजिक-राजनीतिक

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०९. खण्ड 1898, सूचकांक पंक्ति 589: ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग

७१०. खण्ड 1898, सूचकांक पंक्ति 589: ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७११. खण्ड 1898, सूचकांक पंक्ति 589: ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-राजनीतिक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१२. खण्ड 1898, सूचकांक पंक्ति 589: ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१३. खण्ड 1898, सूचकांक पंक्ति 589: ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)”कैं विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ सामाजिक-राजनीतिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

७१४. खण्ड 1898, सूचकांक पंक्ति 589: ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१५. खण्ड 1898, सूचकांक पंक्ति 589: एहि खण्डक सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) खण्ड 1898, सूचकांक पंक्ति 589मे ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-राजनीतिक आ “शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1899 : विदेह-सदेह 8 — सरोज खिलाड़ी: नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनु...

७१६. खण्ड 1899, सूचकांक पंक्ति 590: सरोज खिलाड़ीक “नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनुसार)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनुसार)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१७. खण्ड 1899, सूचकांक पंक्ति 590: सरोज खिलाड़ीक “नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनुसार)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१८. खण्ड 1899, सूचकांक पंक्ति 590: सरोज खिलाड़ीक “नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनुसार)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) सामाजिक-नैतिक

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१९. खण्ड 1899, सूचकांक पंक्ति 590: सरोज खिलाड़ीक “नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनुसार)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच

७२०. खण्ड 1899, सूचकांक पंक्ति 590: सरोज खिलाड़ीक “नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनुसार)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२१. खण्ड 1899, सूचकांक पंक्ति 590: सरोज खिलाड़ीक “नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनुसार)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सरोज खिलाड़ी, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-नैतिक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२२. खण्ड 1899, सूचकांक पंक्ति 590: सरोज खिलाड़ीक “नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनुसार)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२३. खण्ड 1899, सूचकांक पंक्ति 590: सरोज खिलाड़ीक “नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनुसार)”कैँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ सामाजिक-नैतिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

७२४. खण्ड 1899, सूचकांक पंक्ति 590: सरोज खिलाड़ीक “नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनुसार)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२५. खण्ड 1899, सूचकांक पंक्ति 590: एहि खण्डक सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) खण्ड 1899, सूचकांक पंक्ति 590मे सरोज खिलाड़ीक “नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनुसार)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-नैतिक आ “समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकैँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1900 : विदेह-सदेह 8 — सरोज खिलाड़ी: नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)

७२६. खण्ड 1900, सूचकांक पंक्ति 591: सरोज खिलाड़ीक “नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२७. खण्ड 1900, सूचकांक पंक्ति 591: सरोज खिलाड़ीक “नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२८. खण्ड 1900, सूचकांक पंक्ति 591: सरोज खिलाड़ीक “नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) नारी-सामाजिक

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२९. खण्ड 1900, सूचकांक पंक्ति 591: सरोज खिलाड़ीक “नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) नारी-केन्द्रित विमर्श

७३०. खण्ड 1900, सूचकांक पंक्ति 591: सरोज खिलाड़ीक “नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) नारी-केन्द्रित विमर्श

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३१. खण्ड 1900, सूचकांक पंक्ति 591: सरोज खिलाड़ीक “नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सरोज खिलाड़ी, विधा नाटक, उप-विधा नारी-सामाजिक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३२. खण्ड 1900, सूचकांक पंक्ति 591: सरोज खिलाड़ीक “नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३३. खण्ड 1900, सूचकांक पंक्ति 591: सरोज खिलाड़ीक “नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)”कैं विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ नारी-सामाजिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

७३४. खण्ड 1900, सूचकांक पंक्ति 591: सरोज खिलाड़ीक “नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३५. खण्ड 1900, सूचकांक पंक्ति 591: एहि खण्डक सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) खण्ड 1900, सूचकांक पंक्ति 591मे सरोज खिलाड़ीक “नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)” प्रविष्टि नाटक, नारी-सामाजिक आ “नारी-केन्द्रित विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1901 : विदेह-सदेह 8 — सरोज खिलाड़ी: नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)

७३६. खण्ड 1901, सूचकांक पंक्ति 592: सरोज खिलाड़ीक “नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३७. खण्ड 1901, सूचकांक पंक्ति 592: सरोज खिलाड़ीक “नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३८. खण्ड 1901, सूचकांक पंक्ति 592: सरोज खिलाड़ीक “नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) पारिवारिक-विघटन

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३९. खण्ड 1901, सूचकांक पंक्ति 592: सरोज खिलाड़ीक “नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) परिवार-विसंगति, पितृसत्ताक चुनौती, आधुनिकता-परम्परा द्वन्द्व

७४०. खण्ड 1901, सूचकांक पंक्ति 592: सरोज खिलाड़ीक “नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) परिवार-विसंगति, पितृसत्ताक चुनौती, आधुनिकता-परम्परा द्वन्द्व

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४१. खण्ड 1901, सूचकांक पंक्ति 592: सरोज खिलाड़ीक “नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सरोज खिलाड़ी, विधा नाटक, उप-विधा पारिवारिक-विघटन

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४२. खण्ड 1901, सूचकांक पंक्ति 592: सरोज खिलाड़ीक “नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४३. खण्ड 1901, सूचकांक पंक्ति 592: सरोज खिलाड़ीक “नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ पारिवारिक-विघटनक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

७४४. खण्ड 1901, सूचकांक पंक्ति 592: सरोज खिलाड़ीक “नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४५. खण्ड 1901, सूचकांक पंक्ति 592: एहि खण्डक सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) खण्ड 1901, सूचकांक पंक्ति 592मे सरोज खिलाड़ीक “नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)” प्रविष्टि नाटक, पारिवारिक-विघटन आ “परिवार-विसंगति, पितृसत्ताक चुनौती, आधुनिकता-परम्परा द्वन्द्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1902 : विदेह-सदेह 8 — जीवन झा: सुन्दर संयोग (नाटक)

७४६. खण्ड 1902, सूचकांक पंक्ति 593: जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) सुन्दर संयोग (नाटक)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४७. खण्ड 1902, सूचकांक पंक्ति 593: जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४८. खण्ड 1902, सूचकांक पंक्ति 593: जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) प्रणय-सामाजिक

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४९. खण्ड 1902, सूचकांक पंक्ति 593: जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता

७५०. खण्ड 1902, सूचकांक पंक्ति 593: जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५१. खण्ड 1902, सूचकांक पंक्ति 593: जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक जीवन झा, विधा नाटक, उप-विधा प्रणय-सामाजिक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५२. खण्ड 1902, सूचकांक पंक्ति 593: जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५३. खण्ड 1902, सूचकांक पंक्ति 593: जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ प्रणय-सामाजिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

७५४. खण्ड 1902, सूचकांक पंक्ति 593: जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५५. खण्ड 1902, सूचकांक पंक्ति 593: एहि खण्डक सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) खण्ड 1902, सूचकांक पंक्ति 593मे जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, प्रणय-सामाजिक आ “प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1903 : विदेह-सदेह 8 — जीवन झा: सामवती पुनर्जन्म? (नाटक)

७५६. खण्ड 1903, सूचकांक पंक्ति 594: जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म? (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) सामवती पुनर्जन्म? (नाटक)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५७. खण्ड 1903, सूचकांक पंक्ति 594: जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म? (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५८. खण्ड 1903, सूचकांक पंक्ति 594: जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म? (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) दार्शनिक-पौराणिक

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५९. खण्ड 1903, सूचकांक पंक्ति 594: जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म? (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) पुनर्जन्म, नियति, कर्म-सिद्धान्त

७६०. खण्ड 1903, सूचकांक पंक्ति 594: जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म? (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) नव्य-न्याय, भारतीय दर्शन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६१. खण्ड 1903, सूचकांक पंक्ति 594: जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म? (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक जीवन झा, विधा नाटक, उप-विधा दार्शनिक-पौराणिक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६२. खण्ड 1903, सूचकांक पंक्ति 594: जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म? (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६३. खण्ड 1903, सूचकांक पंक्ति 594: जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म? (नाटक)”कैँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ दार्शनिक-पौराणिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

७६४. खण्ड 1903, सूचकांक पंक्ति 594: जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म? (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६५. खण्ड 1903, सूचकांक पंक्ति 594: एहि खण्डक सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) खण्ड 1903, सूचकांक पंक्ति 594मे जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म? (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, दार्शनिक-पौराणिक आ “नव्य-न्याय, भारतीय दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकैँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1904 : विदेह-सदेह 8 — शिव कुमार झा: अंधविश्वास (नाटक)

७६६. खण्ड 1904, सूचकांक पंक्ति 595: शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) अंधविश्वास (नाटक)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६७. खण्ड 1904, सूचकांक पंक्ति 595: शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६८. खण्ड 1904, सूचकांक पंक्ति 595: शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) सामाजिक-व्यंग्य

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६९. खण्ड 1904, सूचकांक पंक्ति 595: शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) अंधविश्वास विरोधी चेतना

७७०. खण्ड 1904, सूचकांक पंक्ति 595: शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) अंधविश्वास विरोधी चेतना

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७१. खण्ड 1904, सूचकांक पंक्ति 595: शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक शिव कुमार झा, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-व्यंग्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७२. खण्ड 1904, सूचकांक पंक्ति 595: शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७३. खण्ड 1904, सूचकांक पंक्ति 595: शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ सामाजिक-व्यंग्यक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

७७४. खण्ड 1904, सूचकांक पंक्ति 595: शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७५. खण्ड 1904, सूचकांक पंक्ति 595: एहि खण्डक सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) खण्ड 1904, सूचकांक पंक्ति 595मे शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-व्यंग्य आ “अंधविश्वास विरोधी चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1905 : विदेह-सदेह 8 — रवि भूषण पाठक: भफाइत चाहक जिनगी

७७६. खण्ड 1905, सूचकांक पंक्ति 596: रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) भफाइत चाहक जिनगी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७७. खण्ड 1905, सूचकांक पंक्ति 596: रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७८. खण्ड 1905, सूचकांक पंक्ति 596: रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) व्यक्ति-चरित्र

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७९. खण्ड 1905, सूचकांक पंक्ति 596: रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) प्रवासी जीवन-विसंगति

७८०. खण्ड 1905, सूचकांक पंक्ति 596: रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) प्रवासी जीवन-विसंगति

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८१. खण्ड 1905, सूचकांक पंक्ति 596: रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा नाटक, उप-विधा व्यक्ति-चरित्र

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८२. खण्ड 1905, सूचकांक पंक्ति 596: रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८३. खण्ड 1905, सूचकांक पंक्ति 596: रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी”केँ विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ व्यक्ति-चरित्रक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

७८४. खण्ड 1905, सूचकांक पंक्ति 596: रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८५. खण्ड 1905, सूचकांक पंक्ति 596: एहि खण्डक सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) खण्ड 1905, सूचकांक पंक्ति 596मे रवि भूषण पाठकक “भफाइत चाहक जिनगी” प्रविष्टि नाटक, व्यक्ति-चरित्र आ “प्रवासी जीवन-विसंगति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1906 : विदेह-सदेह 8 — शम्भू कुमार सिंह: मिथिलाक बेटी (नाटक)

७८६. खण्ड 1906, सूचकांक पंक्ति 597: शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य पाठ/विषय कोन अछि?

(A) मिथिलाक बेटी (नाटक)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८७. खण्ड 1906, सूचकांक पंक्ति 597: शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नाटक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८८. खण्ड 1906, सूचकांक पंक्ति 597: शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) नारी-केन्द्रित

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८९. खण्ड 1906, सूचकांक पंक्ति 597: शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मिथिला नारी-दशा

७९०. खण्ड 1906, सूचकांक पंक्ति 597: शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8मे कोन अर्थ-दिशा खोलैत अछि?

(A) मिथिला नारी-दशा

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९१. खण्ड 1906, सूचकांक पंक्ति 597: शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक शम्भू कुमार सिंह, विधा नाटक, उप-विधा नारी-केन्द्रित

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९२. खण्ड 1906, सूचकांक पंक्ति 597: शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)” रचना/लेख ककरा कारण साधारण सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९३. खण्ड 1906, सूचकांक पंक्ति 597: शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)”कैं विदेह-सदेह 8क नाटक-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ नारी-केन्द्रितक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।

७९४. खण्ड 1906, सूचकांक पंक्ति 597: शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 8क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९५. खण्ड 1906, सूचकांक पंक्ति 597: एहि खण्डक सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) खण्ड 1906, सूचकांक पंक्ति 597मे शम्भू कुमार सिंहक “मिथिलाक बेटी (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, नारी-केन्द्रित आ “मिथिला नारी-दशा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

उत्तरमाला — अध्याय ३ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (A) इन्द्रक ध्वजा उत्सव — नाट्यशास्त्रमे वर्णन अछि जे नाटकक उत्पत्ति इन्द्रक ध्वजा उत्सवसँ भेल।

२. (A) दू (अमृत मंथन आ शिवक त्रिपुरदाह) — नाट्यशास्त्र अनुसार नाटक मूलतः दू प्रकारमे मानल गेल — अमृत मंथन आ शिवक त्रिपुरदाह।

३. (A) शिलालिन् आ कृशाश्व — पाणिनी शिलालिन् आ कृशाश्वक चर्चा करैत छथि, जिनकर नटसूत्रक संकलन छल।

४. (A) छुतहर-छुतहर घैल-छुतहा घैल — छुतहर, छुतहर घैल, छुतहा घैल सन नाटक जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक कहल गेल अछि।

५. (A) तेरहम — ज्योतिरीश्वर ठाकुरक धूर्तसमागम तेरहम शताब्दीमे रचल गेल, जे संस्कृत आ मैथिली दुनूमे उपलब्ध अछि।

६. (A) प्रहसन — ज्योतिरीश्वरक धूर्तसमागम प्रहसनक कोटिमे अबैत अछि।

७. (A) नाथ/गोरक्ष सम्प्रदाय — विद्यापतिक गोरक्षविजय नाथ संप्रदाय वा गोरक्ष संप्रदायक प्रवर्तक योगी गोरखनाथक प्रसंगपर आधारित अछि।

८. (A) १९०४ — जीवन झा द्वारा रचित नाटक सुन्दर संयोग सन् १९०४ मे रचल गेल।

९. (A) चारि (सुन्दर संयोग, मैथिली सट्टक, नर्मदा सागर सट्टक, सामवती पुनर्जन्म) — जीवन झाक चारि नाटक — सुन्दर संयोग (1904), मैथिली सट्टक (1906), नर्मदा सागर सट्टक (1906) आ सामवती पुनर्जन्म (1908) — उल्लिखित अछि।

१०. (A) सामवेद विद्यालय काशी — जीवन झाक नाटकक मंचन सामवेद विद्यालय काशीमे १९२० ई.सँ पहिनहिये कएक बेर भऽ चुकल छल।

११. (A) महाशिवरात्रि — ईशनाथ झाक नाटक उगना महाशिवरात्रिकैं गौरीशंकर स्थान, जमथुरिमे खेलाओल जाइत अछि।

१२. (A) सुधाकांत-प्रेमकांत — ईशनाथ झाक चीनीक लड्डूमे सुधाकांत आ प्रेमकांत मुख्य पात्र छथि।

१३. (A) पोस्टमोडर्न ड्रामा (एबसर्ड) — ‘नो एण्ट्री: मा प्रविश’ पोस्टमोडर्न ड्रामा थिक, जकर एबसर्डिटी ज्योतिरीश्वरक धूर्तसमागम लग घुरबैत अछि।

१४. (A) लिली (शिक्षिता) — गोविन्द झाक बसातमे कृष्णकांत शिक्षिता लिलीसँ प्रेम करैत छथि, जखन कि पिता द्वारा ठीक कएल पुष्पासँ विवाह नहि करैत छथि।

१५. (B) विरोध (ककरो अपमानित नहि करबाक चाही) — गजेन्द्र ठाकुर लिखैत छथि जे मैथिली नाटक-रंगमंचमे जातिवादी शब्दावली ककरो अपमानित करबा लेल प्रयोग नहि कएल जाएब चाही।

१६. (A) हम पुछेत छी – सम्पादकीय — सूचकांकमे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि "हम पुछेत छी – सम्पादकीय" रूपमे देल अछि।

१७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "गद्य" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१८. (C) सम्पादकीय/प्रस्तावना — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप "सम्पादकीय/प्रस्तावना" अछि।

१९. (D) विदेह समानान्तर नाट्य आन्दोलनक उद्घोष — टिप्पणीक पहिल संकेत "विदेह समानान्तर नाट्य आन्दोलनक उद्घोष" अछि।

२०. (A) विदेह समानान्तर नाट्य आन्दोलनक उद्घोष — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "विदेह समानान्तर नाट्य आन्दोलनक उद्घोष" रूपमे देखाइत अछि।

२१. (B) नाम गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय/प्रस्तावना — सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२३. (D) ई प्रविष्टि सम्पादकीय/प्रस्तावनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२४. (A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२५. (B) गजेन्द्र ठाकूरक "हम पुछेत छी – सम्पादकीय" प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय/प्रस्तावना आ "विदेह समानान्तर नाट्य आन्दोलनक उद्घोष" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२६. (A) विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय) — सूचकांकमे शिल्पी कुमारीक प्रविष्टि "विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)" रूपमे देल अछि।

२७. (B) सम्मान — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "सम्मान" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२८. (C) अभिनय — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप "अभिनय" अछि।

२९. (D) युवा नारी कलाकार — टिप्पणीक पहिल संकेत "युवा नारी कलाकार" अछि।

३०. (A) युवा नारी कलाकार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "युवा नारी कलाकार" रूपमे देखाइत अछि।

३१. (B) नाम शिल्पी कुमारी, विधा सम्मान, उप-विधा अभिनय — सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३३. (D) ई प्रविष्टि अभिनयक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३४. (A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३५. (B) शिल्पी कुमारीक "विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)" प्रविष्टि अभिनय क्षेत्रमे देल सम्मान, "युवा नारी कलाकार" संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३६. (A) विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय) — सूचकांकमे शोभा कान्त महतोक प्रविष्टि "विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)" रूपमे देल अछि।

३७. (B) सम्मान — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "सम्मान" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३८. (C) अभिनय — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप "अभिनय" अछि।

३९. (D) किशोर अभिनेता — टिप्पणीक पहिल संकेत "किशोर अभिनेता" अछि।

४०. (A) किशोर अभिनेता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "किशोर अभिनेता" रूपमे देखाइत अछि।

४१. (B) नाम शोभा कान्त महतो, विधा सम्मान, उप-विधा अभिनय — सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४३. (D) ई प्रविष्टि अभिनयक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४४. (A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४५. (B) शोभा कान्त महतोक "विदेह अभिनय सम्मान २०१२ (मुख्य अभिनय)" प्रविष्टि अभिनय क्षेत्रमे देल सम्मान, "किशोर अभिनेता" संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४६. (A) विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२ — सूचकांकमे प्रियंका कुमारीक प्रविष्टि "विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२" रूपमे देल अछि।

४७. (B) सम्मान — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "सम्मान" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४८. (C) हास्य-अभिनय — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप "हास्य-अभिनय" अछि।

४९. (D) महिला हास्य कलाकार — टिप्पणीक पहिल संकेत "महिला हास्य कलाकार" अछि।

५०. (A) महिला हास्य कलाकार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "महिला हास्य कलाकार" रूपमे देखाइत अछि।

५१. (B) नाम प्रियंका कुमारी, विधा सम्मान, उप-विधा हास्य-अभिनय — सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५३. (D) ई प्रविष्टि हास्य-अभिनयक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५४. (A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५५. (B) प्रियंका कुमारीक "विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२" प्रविष्टि हास्य-अभिनय क्षेत्रमे देल सम्मान, "महिला हास्य कलाकार" संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५६. (A) विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२ — सूचकांकमे दुर्गानंद ठाकूरक प्रविष्टि "विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२" रूपमे देल अछि।

५७. (B) सम्मान — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "सम्मान" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५८. (C) हास्य-अभिनय — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप "हास्य-अभिनय" अछि।

५९. (D) मंचपर व्यंग्य-हास्य — टिप्पणीक पहिल संकेत "मंचपर व्यंग्य-हास्य" अछि।

६०. (A) मंचपर व्यंग्य-हास्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा "मंचपर व्यंग्य-हास्य" रूपमे देखाइत अछि।

६१. (B) नाम दुर्गानंद ठाकूर, विधा सम्मान, उप-विधा हास्य-अभिनय — सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६३. (D) ई प्रविष्टि हास्य-अभिनयक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६४. (A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६५. (B) दुर्गानंद ठाकूरक "विदेह हास्य-अभिनय सम्मान २०१२" प्रविष्टि हास्य-अभिनय क्षेत्रमे देल सम्मान, "मंचपर व्यंग्य-हास्य" संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६६. (A) विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२ — सूचकांकमे सुलेखा कुमारीक प्रविष्टि "विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२" रूपमे देल अछि।

६७. (B) सम्मान — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "सम्मान" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६८. (C) नृत्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप "नृत्य" अछि।

६९. (D) लोकनृत्यक नवीन पीढ़ी — टिप्पणीक पहिल संकेत "लोकनृत्यक नवीन पीढ़ी" अछि।

७०. **(A) लोकनृत्यक नवीन पीढ़ी** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “लोकनृत्यक नवीन पीढ़ी” रूपमे देखाइत अछि।

७१. **(B) नाम सुलेखा कुमारी, विधा सम्मान, उप-विधा नृत्य** — सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७३. **(D) ई प्रविष्टि नृत्यक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७४. **(A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७५. **(B) सुलेखा कुमारीक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि नृत्य क्षेत्रमे देल सम्मान, “लोकनृत्यक नवीन पीढ़ी” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७६. **(A) विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२** — सूचकांकमे अमित रंजनक प्रविष्टि “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” रूपमे देल अछि।

७७. **(B) सम्मान** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सम्मान” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७८. **(C) नृत्य** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “नृत्य” अछि।

७९. **(D) युवा नर्तक** — टिप्पणीक पहिल संकेत “युवा नर्तक” अछि।

८०. **(A) मैथिल लोकनृत्यक पुनरुज्जीवन** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “मैथिल लोकनृत्यक पुनरुज्जीवन” रूपमे देखाइत अछि।

८१. **(B) नाम अमित रंजन, विधा सम्मान, उप-विधा नृत्य** — सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

८२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

८३. **(D) ई प्रविष्टि नृत्यक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

८४. **(A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

८५. **(B) अमित रंजनक “विदेह नृत्यकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि नृत्य क्षेत्रमे देल सम्मान, “मैथिल लोकनृत्यक पुनरुज्जीवन” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

८६. **(A) विदेह चित्रकला सम्मान २०१२** — सूचकांकमे पनकलाल मण्डलक प्रविष्टि “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” रूपमे देल अछि।

८७. **(B) सम्मान** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सम्मान” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

८८. **(C) चित्रकला** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “चित्रकला” अछि।

८९. **(D) मधुबनी चित्रकला** — टिप्पणीक पहिल संकेत “मधुबनी चित्रकला” अछि।

९०. **(A) मधुबनी चित्रकला** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “मधुबनी चित्रकला” रूपमे देखाइत अछि।

९१. **(B) नाम पनकलाल मण्डल, विधा सम्मान, उप-विधा चित्रकला** — सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

९२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

९३. **(D) ई प्रविष्टि चित्रकलाक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

९४. **(A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

९५. **(B) पनकलाल मण्डलक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि चित्रकला क्षेत्रमे देल सम्मान, “मधुबनी चित्रकला” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

९६. **(A) विदेह चित्रकला सम्मान २०१२** — सूचकांकमे रमेश कुमार भारतीक प्रविष्टि “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” रूपमे देल अछि।

९७. **(B) सम्मान** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सम्मान” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

९८. **(C) चित्रकला** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “चित्रकला” अछि।

९९. **(D) समकालीन मिथिला चित्रशैली** — टिप्पणीक पहिल संकेत “समकालीन मिथिला चित्रशैली” अछि।

१००. (A) समकालीन मिथिला चित्रशैली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “समकालीन मिथिला चित्रशैली” रूपमे देखाइत अछि।

१०१. (B) नाम रमेश कुमार भारती, विधा सम्मान, उप-विधा चित्रकला — सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१०२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१०३. (D) ई प्रविष्टि चित्रकलाक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१०४. (A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१०५. (B) रमेश कुमार भारतीक “विदेह चित्रकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि चित्रकला क्षेत्रमे देल सम्मान, “समकालीन मिथिला चित्रशैली” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१०६. (A) विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम) — सूचकांकमे परमानंद ठाकूरक प्रविष्टि “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम)” रूपमे देल अछि।

१०७. (B) सम्मान — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सम्मान” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१०८. (C) वाद्य-संगीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “वाद्य-संगीत” अछि।

१०९. (D) हारमोनियम वादन — टिप्पणीक पहिल संकेत “हारमोनियम वादन” अछि।

११०. (A) हारमोनियम वादन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “हारमोनियम वादन” रूपमे देखाइत अछि।

१११. (B) नाम परमानंद ठाकूर, विधा सम्मान, उप-विधा वाद्य-संगीत — सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

११२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

११३. (D) ई प्रविष्टि वाद्य-संगीतक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

११४. (A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

११५. (B) परमानंद ठाकूरक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (हारमोनियम)” प्रविष्टि वाद्य-संगीत क्षेत्रमे देल सम्मान, “हारमोनियम वादन” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

११६. (A) विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक) — सूचकांकमे बुलन राउतक प्रविष्टि “विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक)” रूपमे देल अछि।

११७. (B) सम्मान — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सम्मान” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

११८. (C) वाद्य-संगीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “वाद्य-संगीत” अछि।

११९. (D) ढोलक वादनक परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “ढोलक वादनक परम्परा” अछि।

१२०. (A) ढोलक वादनक परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “ढोलक वादनक परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

१२१. (B) नाम बुलन राउत, विधा सम्मान, उप-विधा वाद्य-संगीत — सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१२२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१२३. (D) ई प्रविष्टि वाद्य-संगीतक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१२४. (A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१२५. (B) बुलन राउतक “विदेह वाद्यकला सम्मान २०१२ (ढोलक)” प्रविष्टि वाद्य-संगीत क्षेत्रमे देल सम्मान, “ढोलक वादनक परम्परा” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१२६. (A) विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी) — सूचकांकमे बहादुर रामक प्रविष्टि “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी)” रूपमे देल अछि।

१२७. (B) सम्मान — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सम्मान” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१२८. (C) वाद्य-संगीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “वाद्य-संगीत” अछि।

१२९. (D) रसनचौकी वादन — टिप्पणीक पहिल संकेत “रसनचौकी वादन” अछि।

१३०. (A) रसनचौकी वादन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “रसनचौकी वादन” रूपमे देखाइत अछि।

१३१. (B) नाम बहादुर राम, विधा सम्मान, उप-विधा वाद्य-संगीत — सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१३२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१३३. (D) ई प्रविष्टि वाद्य-संगीतक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१३४. (A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१३५. (B) बहादुर रामक “विदेह संगीत सम्मान २०१२ (रसनचौकी)” प्रविष्टि वाद्य-संगीत क्षेत्रमे देल सम्मान, “रसनचौकी वादन” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१३६. (A) विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२ — सूचकांकमे जगदीश मल्लिकक प्रविष्टि “विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२” रूपमे देल अछि।

१३७. (B) सम्मान — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सम्मान” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१३८. (C) शिल्प — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “शिल्प” अछि।

१३९. (D) हस्तशिल्प — टिप्पणीक पहिल संकेत “हस्तशिल्प” अछि।

१४०. (A) हस्तशिल्प — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “हस्तशिल्प” रूपमे देखाइत अछि।

१४१. (B) नाम जगदीश मल्लिक, विधा सम्मान, उप-विधा शिल्प — सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१४२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१४३. (D) ई प्रविष्टि शिल्पक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१४४. (A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१४५. (B) जगदीश मल्लिकक “विदेह शिल्पी-वस्तुकला सम्मान २०१२” प्रविष्टि शिल्प क्षेत्रमे देल सम्मान, “हस्तशिल्प” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१४६. (A) विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२ — सूचकांकमे यदुनंदन पंडितक प्रविष्टि “विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२” रूपमे देल अछि।

१४७. (B) सम्मान — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सम्मान” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१४८. (C) मूर्तिकला — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “मूर्तिकला” अछि।

१४९. (D) माटिक मूर्ति-परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “माटिक मूर्ति-परम्परा” अछि।

१५०. (A) माटिक मूर्ति-परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “माटिक मूर्ति-परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

१५१. (B) नाम यदुनंदन पंडित, विधा सम्मान, उप-विधा मूर्तिकला — सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१५२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१५३. (D) ई प्रविष्टि मूर्तिकलाक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१५४. (A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१५५. (B) यदुनंदन पंडितक “विदेह मूर्ति-मृत्तिका कला सम्मान २०१२” प्रविष्टि मूर्तिकला क्षेत्रमे देल सम्मान, “माटिक मूर्ति-परम्परा” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१५६. (A) विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२ — सूचकांकमे झमेली मुखियाक प्रविष्टि “विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२” रूपमे देल अछि।

१५७. (B) सम्मान — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सम्मान” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१५८. (C) काष्ठशिल्प — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “काष्ठशिल्प” अछि।

१५९. (D) लकड़ी कला — टिप्पणीक पहिल संकेत “लकड़ी कला” अछि।

१६०. (A) लकड़ी कला — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “लकड़ी कला” रूपमे देखाइत अछि।

१६१. (B) नाम झमेली मुखिया, विधा सम्मान, उप-विधा काष्ठशिल्प — सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१६२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१६३. (D) ई प्रविष्टि काष्ठशिल्पक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१६४. (A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१६५. (B) झमेली मुखियाक “विदेह काष्ठ-कला सम्मान २०१२” प्रविष्टि काष्ठशिल्प क्षेत्रमे देल सम्मान, “लकड़ी कला” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१६६. (A) विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२ — सूचकांकमे लक्ष्मी दासक प्रविष्टि “विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२” रूपमे देल अछि।

१६७. (B) सम्मान — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सम्मान” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१६८. (C) किसानी — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठ/सम्मानक स्वरूप “किसानी” अछि।

१६९. (D) मैथिल किसानक स्वावलंबी परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिल किसानक स्वावलंबी परम्परा” अछि।

१७०. (A) मैथिल किसानक स्वावलंबी परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “मैथिल किसानक स्वावलंबी परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

१७१. (B) नाम लक्ष्मी दास, विधा सम्मान, उप-विधा किसानी — सूचकांक नाम, विषय, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१७२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१७३. (D) ई प्रविष्टि किसानीक रूपमे सम्मान-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि प्रविष्टिक साहित्यिक/सांस्कृतिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१७४. (A) ओ नाम, विषय आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१७५. (B) लक्ष्मी दासक “विदेह किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति सम्मान २०१२” प्रविष्टि किसानी क्षेत्रमे देल सम्मान, “मैथिल किसानक स्वावलंबी परम्परा” संकेत आ विदेह-सदेह 8क सांस्कृतिक दस्तावेजीकरणकेँ एक ठाम रखैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१७६. (A) मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र — सूचकांकमे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र” रूपमे देल अछि।

१७७. (B) समीक्षा/शोध — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “समीक्षा/शोध” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१७८. (C) नाट्य-सिद्धान्त — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाट्य-सिद्धान्त” अछि।

१७९. (D) जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श — टिप्पणीक पहिल संकेत “जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श” अछि।

१८०. (A) जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।

१८१. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा समीक्षा/शोध, उप-विधा नाट्य-सिद्धान्त — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१८२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१८३. (D) ई पाठ नाट्य-सिद्धान्तक रूपमे समीक्षा/शोध-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१८४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१८५. (B) गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र” प्रविष्टि समीक्षा/शोध, नाट्य-सिद्धान्त आ “जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१८६. (A) जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल — सूचकांकमे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” रूपमे देल अछि।

१८७. (B) नाटक-समीक्षा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक-समीक्षा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१८८. (C) सामाजिक यथार्थ — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सामाजिक यथार्थ” अछि।

१८९. (D) जाति-व्यवस्था, बहिष्कार — टिप्पणीक पहिल संकेत “जाति-व्यवस्था, बहिष्कार” अछि।

१९०. (A) जाति-व्यवस्था, बहिष्कार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जाति-व्यवस्था, बहिष्कार” रूपमे देखाइत अछि।

१९१. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा नाटक-समीक्षा, उप-विधा सामाजिक यथार्थ — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१९२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१९३. (D) ई पाठ सामाजिक यथार्थक रूपमे नाटक-समीक्षा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१९४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१९५. (B) गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” प्रविष्टि नाटक-समीक्षा, सामाजिक यथार्थ आ “जाति-व्यवस्था, बहिष्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१९६. (A) डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक) — सूचकांकमे बेचन ठाकूरक प्रविष्टि “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” रूपमे देल अछि।

१९७. (B) नाटक (रूपान्तर) — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक (रूपान्तर)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१९८. (C) पाश्चात्य रूपान्तरण — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पाश्चात्य रूपान्तरण” अछि।

१९९. (D) मैथिली रंगमंच पर मार्लो — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली रंगमंच पर मार्लो” अछि।

२००. (A) मैथिली रंगमंच पर मार्लो — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली रंगमंच पर मार्लो” रूपमे देखाइत अछि।

२०१. (B) लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२०२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२०३. (D) ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२०४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२०५. (B) बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ “मैथिली रंगमंच पर मार्लो” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२०६. (A) सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक) — सूचकांकमे बेचन ठाकूरक प्रविष्टि “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” रूपमे देल अछि।

२०७. (B) नाटक (रूपान्तर) — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक (रूपान्तर)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२०८. (C) पाश्चात्य रूपान्तरण — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पाश्चात्य रूपान्तरण” अछि।

२०९. (D) मिल्टनक बाइबलीय विद्रोह — टिप्पणीक पहिल संकेत “मिल्टनक बाइबलीय विद्रोह” अछि।

२१०. (A) मिल्टनक बाइबलीय विद्रोह — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मिल्टनक बाइबलीय विद्रोह” रूपमे देखाइत अछि।

२११. (B) लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२१२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२१३. (D) ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२१४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२१५. (B) बेचन ठाकूरक "सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)" प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ "मिल्टनक बाइबलीय विद्रोह" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२१६. (A) मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक) — सूचकांकमे बेचन ठाकूरक प्रविष्टि "मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)" रूपमे देल अछि।

२१७. (B) नाटक (रूपान्तर) — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "नाटक (रूपान्तर)" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२१८. (C) पाश्चात्य रूपान्तरण — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "पाश्चात्य रूपान्तरण" अछि।

२१९. (D) एलियटक धार्मिक-राजनीति — टिप्पणीक पहिल संकेत "एलियटक धार्मिक-राजनीति" अछि।

२२०. (A) शहादत, सत्ता-विरोध — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "शहादत, सत्ता-विरोध" रूपमे देखाइत अछि।

२२१. (B) लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२२२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२२३. (D) ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२२४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२२५. (B) बेचन ठाकूरक "मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)" प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ "शहादत, सत्ता-विरोध" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२२६. (A) स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक) — सूचकांकमे बेचन ठाकूरक प्रविष्टि "स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)" रूपमे देल अछि।

२२७. (B) नाटक (रूपान्तर) — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "नाटक (रूपान्तर)" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२२८. (C) पाश्चात्य रूपान्तरण — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "पाश्चात्य रूपान्तरण" अछि।

२२९. (D) औद्योगिक संघर्ष — टिप्पणीक पहिल संकेत "औद्योगिक संघर्ष" अछि।

२३०. (A) औद्योगिक संघर्ष — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "औद्योगिक संघर्ष" रूपमे देखाइत अछि।

२३१. (B) लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२३२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२३३. (D) ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२३४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२३५. (B) बेचन ठाकूरक "स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)" प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ "औद्योगिक संघर्ष" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२३६. (A) बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप — सूचकांकमे बेचन ठाकूरक प्रविष्टि "बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप" रूपमे देल अछि।

२३७. (B) वार्ता/सन्दर्भ — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "वार्ता/सन्दर्भ" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२३८. (C) साक्षात्कार — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "साक्षात्कार" अछि।

२३९. (D) निर्देशनक व्यावहारिक चर्चा — टिप्पणीक पहिल संकेत "निर्देशनक व्यावहारिक चर्चा" अछि।

२४०. (A) रंगमंचीय लोकाचार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "रंगमंचीय लोकाचार" रूपमे देखाइत अछि।

२४१. (B) लेखक बेचन ठाकूर, विधा वार्ता/सन्दर्भ, उप-विधा साक्षात्कार — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२४२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२४३. (D) ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे वार्ता/सन्दर्भ-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२४४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२४५. (B) बेचन ठाकूरक "बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप" प्रविष्टि वार्ता/सन्दर्भ, साक्षात्कार आ "रंगमंचीय लोकाचार" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२४६. (A) मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य) — सूचकांकमे बेचन ठाकूरक प्रविष्टि "मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)" रूपमे देल अछि।

२४७. (B) चिन्तन/लेख — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "चिन्तन/लेख" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२४८. (C) निर्देशन-विधि — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "निर्देशन-विधि" अछि।

२४९. (D) प्रायोगिक रंगमंच — टिप्पणीक पहिल संकेत "प्रायोगिक रंगमंच" अछि।

२५०. (A) प्रायोगिक रंगमंच — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "प्रायोगिक रंगमंच" रूपमे देखाइत अछि।

२५१. (B) लेखक बेचन ठाकूर, विधा चिन्तन/लेख, उप-विधा निर्देशन-विधि — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२५२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२५३. (D) ई पाठ निर्देशन-विधिक रूपमे चिन्तन/लेख-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२५४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२५५. (B) बेचन ठाकूरक "मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)" प्रविष्टि चिन्तन/लेख, निर्देशन-विधि आ "प्रायोगिक रंगमंच" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२५६. (A) नो एंट्री : मा प्रविश — सूचकांकमे उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क प्रविष्टि "नो एंट्री : मा प्रविश" रूपमे देल अछि।

२५७. (B) नाटक — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "नाटक" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२५८. (C) अस्तित्ववादी — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "अस्तित्ववादी" अछि।

२५९. (D) यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार — टिप्पणीक पहिल संकेत "यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार" अछि।

२६०. (A) यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार" रूपमे देखाइत अछि।

२६१. (B) लेखक उदय नारायण सिंह "नचिकेता", विधा नाटक, उप-विधा अस्तित्ववादी — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२६२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२६३. (D) ई पाठ अस्तित्ववादीक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२६४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२६५. (B) उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क "नो एंट्री : मा प्रविश" प्रविष्टि नाटक, अस्तित्ववादी आ "यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२६६. (A) जडैत मोमबत्ती — सूचकांकमे उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क प्रविष्टि "जडैत मोमबत्ती" रूपमे देल अछि।

२६७. (B) नाटक — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "नाटक" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२६८. (C) प्रतीकात्मक — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "प्रतीकात्मक" अछि।

२६९. (D) मृत्यु, प्रतीक्षा, स्मृति — टिप्पणीक पहिल संकेत "मृत्यु, प्रतीक्षा, स्मृति" अछि।

२७०. (A) अस्तित्ववादी कोण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "अस्तित्ववादी कोण" रूपमे देखाइत अछि।

२७१. (B) लेखक उदय नारायण सिंह "नचिकेता", विधा नाटक, उप-विधा प्रतीकात्मक — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२७२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२७३. **(D) ई पाठ प्रतीकात्मकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२७४. **(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२७५. **(B) उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क "जडैत मोमबत्ती" प्रविष्टि नाटक, प्रतीकात्मक आ "अस्तित्ववादी कोण" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२७६. **(A) संकष्टन (नाटक)** — सूचकांकमे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि "संकष्टन (नाटक)" रूपमे देल अछि।

२७७. **(B) नाटक** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "नाटक" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२७८. **(C) सामाजिक-यथार्थवादी** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "सामाजिक-यथार्थवादी" अछि।

२७९. **(D) मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स** — टिप्पणीक पहिल संकेत "मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स" अछि।

२८०. **(A) मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स" रूपमे देखाइत अछि।

२८१. **(B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-यथार्थवादी** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२८२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२८३. **(D) ई पाठ सामाजिक-यथार्थवादीक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२८४. **(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२८५. **(B) गजेन्द्र ठाकूरक "संकष्टन (नाटक)" प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-यथार्थवादी आ "मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२८६. **(A) बलचन्दा (नाटक)** — सूचकांकमे विभा रानीक प्रविष्टि "बलचन्दा (नाटक)" रूपमे देल अछि।

२८७. **(B) नाटक** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "नाटक" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२८८. **(C) स्त्री-विमर्शी** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "स्त्री-विमर्शी" अछि।

२८९. **(D) पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध** — टिप्पणीक पहिल संकेत "पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध" अछि।

२९०. **(A) पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध" रूपमे देखाइत अछि।

२९१. **(B) लेखक विभा रानी, विधा नाटक, उप-विधा स्त्री-विमर्शी** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२९२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२९३. **(D) ई पाठ स्त्री-विमर्शीक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२९४. **(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२९५. **(B) विभा रानीक "बलचन्दा (नाटक)" प्रविष्टि नाटक, स्त्री-विमर्शी आ "पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२९६. **(A) भाग रौ (नाटक)** — सूचकांकमे विभा रानीक प्रविष्टि "भाग रौ (नाटक)" रूपमे देल अछि।

२९७. **(B) नाटक** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "नाटक" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२९८. **(C) सामाजिक यथार्थ** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "सामाजिक यथार्थ" अछि।

२९९. **(D) गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना** — टिप्पणीक पहिल संकेत "गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना" अछि।

३००. **(A) गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना" रूपमे देखाइत अछि।

३०१. **(B) लेखक विभा रानी, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक यथार्थ** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३०२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३०३. (D) ई पाठ सामाजिक यथार्थक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३०४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३०५. (B) विभा रानीक "भाग रौ (नाटक)" प्रविष्टि नाटक, सामाजिक यथार्थ आ "गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३०६. (A) कैसर (नाटक) — सूचकांकमे ज्योति सुनीत चौधरीक प्रविष्टि "कैसर (नाटक)" रूपमे देल अछि।

३०७. (B) नाटक — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "नाटक" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३०८. (C) सामाजिक-राजनीतिक — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "सामाजिक-राजनीतिक" अछि।

३०९. (D) शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग — टिप्पणीक पहिल संकेत "शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग" अछि।

३१०. (A) शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग" रूपमे देखाइत अछि।

३११. (B) लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-राजनीतिक — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३१२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३१३. (D) ई पाठ सामाजिक-राजनीतिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३१४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३१५. (B) ज्योति सुनीत चौधरीक "कैसर (नाटक)" प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-राजनीतिक आ "शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३१६. (A) बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक) — सूचकांकमे सरोज खिलाड़ीक प्रविष्टि "बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक)" रूपमे देल अछि।

३१७. (B) नाटक — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "नाटक" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३१८. (C) सामाजिक-नैतिक — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "सामाजिक-नैतिक" अछि।

३१९. (D) समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच — टिप्पणीक पहिल संकेत "समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच" अछि।

३२०. (A) समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच" रूपमे देखाइत अछि।

३२१. (B) लेखक सरोज खिलाड़ी, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-नैतिक — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३२२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३२३. (D) ई पाठ सामाजिक-नैतिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३२४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३२५. (B) सरोज खिलाड़ीक "बोतल राम / सोच / ललका कपडा (नाटक)" प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-नैतिक आ "समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३२६. (A) सुन्दर संयोग (नाटक) — सूचकांकमे जीवन झाक प्रविष्टि "सुन्दर संयोग (नाटक)" रूपमे देल अछि।

३२७. (B) नाटक — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "नाटक" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३२८. (C) प्रणय-सामाजिक — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "प्रणय-सामाजिक" अछि।

३२९. (D) प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता — टिप्पणीक पहिल संकेत "प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता" अछि।

३३०. (A) प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता” रूपमे देखाइत अछि।

३३१. (B) लेखक जीवन झा, विधा नाटक, उप-विधा प्रणय-सामाजिक — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३३२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३३३. (D) ई पाठ प्रणय-सामाजिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३३४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३३५. (B) जीवन झाक “सुन्दर संयोग (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, प्रणय-सामाजिक आ “प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३३६. (A) सामवती पुनर्जन्म (नाटक) — सूचकांकमे जीवन झाक प्रविष्टि “सामवती पुनर्जन्म (नाटक)” रूपमे देल अछि।

३३७. (B) नाटक — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३३८. (C) दार्शनिक-पौराणिक — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “दार्शनिक-पौराणिक” अछि।

३३९. (D) पुनर्जन्म, नियति, कर्म-सिद्धान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “पुनर्जन्म, नियति, कर्म-सिद्धान्त” अछि।

३४०. (A) पुनर्जन्म, नियति, कर्म-सिद्धान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पुनर्जन्म, नियति, कर्म-सिद्धान्त” रूपमे देखाइत अछि।

३४१. (B) लेखक जीवन झा, विधा नाटक, उप-विधा दार्शनिक-पौराणिक — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३४२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३४३. (D) ई पाठ दार्शनिक-पौराणिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३४४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३४५. (B) जीवन झाक “सामवती पुनर्जन्म (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, दार्शनिक-पौराणिक आ “पुनर्जन्म, नियति, कर्म-सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३४६. (A) अंधविश्वास (नाटक) — सूचकांकमे शिव कुमार झाक प्रविष्टि “अंधविश्वास (नाटक)” रूपमे देल अछि।

३४७. (B) नाटक — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३४८. (C) सामाजिक-व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सामाजिक-व्यंग्य” अछि।

३४९. (D) अंधविश्वास विरोधी चेतना — टिप्पणीक पहिल संकेत “अंधविश्वास विरोधी चेतना” अछि।

३५०. (A) अंधविश्वास विरोधी चेतना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अंधविश्वास विरोधी चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

३५१. (B) लेखक शिव कुमार झा, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-व्यंग्य — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३५२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३५३. (D) ई पाठ सामाजिक-व्यंग्यक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३५४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३५५. (B) शिव कुमार झाक “अंधविश्वास (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-व्यंग्य आ “अंधविश्वास विरोधी चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३५६. (A) भफाइत चाहक जिनगी — सूचकांकमे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि “भफाइत चाहक जिनगी” रूपमे देल अछि।

३५७. (B) नाटक — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३५८. (C) व्यक्ति-चरित्र — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “व्यक्ति-चरित्र” अछि।

३५९. (D) प्रवासी जीवन-विसंगति — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रवासी जीवन-विसंगति” अछि।

३६०. (A) प्रवासी जीवन-विसंगति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रवासी जीवन-विसंगति” रूपमे देखाइत अछि।

३६१. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा नाटक, उप-विधा व्यक्ति-चरित्र — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३६२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३६३. (D) ई पाठ व्यक्ति-चरित्रक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३६४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३६५. (B) रवि भूषण पाठकक "भफाइत चाहक जिनगी" प्रविष्टि नाटक, व्यक्ति-चरित्र आ "प्रवासी जीवन-विसंगति" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३६६. (A) मिथिलाक बेटी (नाटक) — सूचकांकमे शम्भू कुमार सिंहक प्रविष्टि "मिथिलाक बेटी (नाटक)" रूपमे देल अछि।

३६७. (B) नाटक — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "नाटक" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३६८. (C) नारी-केन्द्रित — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "नारी-केन्द्रित" अछि।

३६९. (D) मिथिला नारी-दशा — टिप्पणीक पहिल संकेत "मिथिला नारी-दशा" अछि।

३७०. (A) मिथिला नारी-दशा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "मिथिला नारी-दशा" रूपमे देखाइत अछि।

३७१. (B) लेखक शम्भू कुमार सिंह, विधा नाटक, उप-विधा नारी-केन्द्रित — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३७२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३७३. (D) ई पाठ नारी-केन्द्रितक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३७४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३७५. (B) शम्भू कुमार सिंहक "मिथिलाक बेटी (नाटक)" प्रविष्टि नाटक, नारी-केन्द्रित आ "मिथिला नारी-दशा" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३७६. (A) आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण) — सूचकांकमे दुगानन्द मण्डलक प्रविष्टि "आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)" रूपमे देल अछि।

३७७. (B) संस्मरण/लेख — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "संस्मरण/लेख" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३७८. (C) ऐतिहासिक मूल्यांकन — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "ऐतिहासिक मूल्यांकन" अछि।

३७९. (D) मैथिली रंगमंचक विकासमे योगदानक दस्तावेजीकरण — टिप्पणीक पहिल संकेत "मैथिली रंगमंचक विकासमे योगदानक दस्तावेजीकरण" अछि।

३८०. (A) मैथिली रंगमंचक विकासमे योगदानक दस्तावेजीकरण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "मैथिली रंगमंचक विकासमे योगदानक दस्तावेजीकरण" रूपमे देखाइत अछि।

३८१. (B) लेखक दुगानन्द मण्डल, विधा संस्मरण/लेख, उप-विधा ऐतिहासिक मूल्यांकन — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३८२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३८३. (D) ई पाठ ऐतिहासिक मूल्यांकनक रूपमे संस्मरण/लेख-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३८४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३८५. (B) दुगानन्द मण्डलक "आनन्द जीक योगदान (नाट्य संस्मरण)" प्रविष्टि संस्मरण/लेख, ऐतिहासिक मूल्यांकन आ "मैथिली रंगमंचक विकासमे योगदानक दस्तावेजीकरण" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३८६. (A) मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन — सूचकांकमे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि "मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन" रूपमे देल अछि।

३८७. (B) रिपोर्ताज — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "रिपोर्ताज" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३८८. (C) स्ट्रीट थियेटर — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "स्ट्रीट थियेटर" अछि।

३८९. (D) जन-जागरूकता, लोक-नाट्य परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “जन-जागरूकता, लोक-नाट्य परम्परा” अछि।

३९०. (A) जन-जागरूकता, लोक-नाट्य परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जन-जागरूकता, लोक-नाट्य परम्परा” रूपमे देखाइत अछि।

३९१. (B) लेखक सुजीत कुमार झा, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा स्ट्रीट थियेटर — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३९२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३९३. (D) ई पाठ स्ट्रीट थियेटरक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३९४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३९५. (B) सुजीत कुमार झाक “मैथिली भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन” प्रविष्टि रिपोर्ताज, स्ट्रीट थियेटर आ “जन-जागरूकता, लोक-नाट्य परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३९६. (A) उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे — सूचकांकमे सुजीत कुमार झाक प्रविष्टि “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे” रूपमे देल अछि।

३९७. (B) रिपोर्ताज — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३९८. (C) राजनीतिक — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “राजनीतिक” अछि।

३९९. (D) नेपाली राजनीति, मैथिली प्रतिनिधित्व — टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाली राजनीति, मैथिली प्रतिनिधित्व” अछि।

४००. (A) नेपाली राजनीति, मैथिली प्रतिनिधित्व — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नेपाली राजनीति, मैथिली प्रतिनिधित्व” रूपमे देखाइत अछि।

४०१. (B) लेखक सुजीत कुमार झा, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा राजनीतिक — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४०२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४०३. (D) ई पाठ राजनीतिकक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४०४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४०५. (B) सुजीत कुमार झाक “उप-प्रधानमन्त्री विमान अपमे” प्रविष्टि रिपोर्ताज, राजनीतिक आ “नेपाली राजनीति, मैथिली प्रतिनिधित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४०६. (A) महाविद्यालय-झंकार — सूचकांकमे तरुणेश मिश्रक प्रविष्टि “महाविद्यालय-झंकार” रूपमे देल अछि।

४०७. (B) रिपोर्ताज — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४०८. (C) शैक्षिक-सांस्कृतिक — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “शैक्षिक-सांस्कृतिक” अछि।

४०९. (D) छात्र आन्दोलन, सांस्कृतिक गतिविधि — टिप्पणीक पहिल संकेत “छात्र आन्दोलन, सांस्कृतिक गतिविधि” अछि।

४१०. (A) छात्र आन्दोलन, सांस्कृतिक गतिविधि — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “छात्र आन्दोलन, सांस्कृतिक गतिविधि” रूपमे देखाइत अछि।

४११. (B) लेखक तरुणेश मिश्र, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा शैक्षिक-सांस्कृतिक — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४१२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४१३. (D) ई पाठ शैक्षिक-सांस्कृतिकक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४१४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४१५. (B) तरुणेश मिश्रक “महाविद्यालय-झंकार” प्रविष्टि रिपोर्ताज, शैक्षिक-सांस्कृतिक आ “छात्र आन्दोलन, सांस्कृतिक गतिविधि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४१६. (A) विदेह मैथिली नाट्य उत्सव — सूचकांकमे उमेश मण्डलक प्रविष्टि “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव” रूपमे देल अछि।

४१७. (B) रिपोर्ताज — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४१८. (C) नाट्य-महोत्सव — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाट्य-महोत्सव” अछि।

४१९. (D) दस्तावेजीकरण — टिप्पणीक पहिल संकेत “दस्तावेजीकरण” अछि।

४२०. (A) दस्तावेजीकरण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “दस्तावेजीकरण” रूपमे देखाइत अछि।

४२१. (B) लेखक उमेश मण्डल, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा नाट्य-महोत्सव — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४२२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४२३. (D) ई पाठ नाट्य-महोत्सवक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४२४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४२५. (B) उमेश मण्डलक “विदेह मैथिली नाट्य उत्सव” प्रविष्टि रिपोर्ताज, नाट्य-महोत्सव आ “दस्तावेजीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४२६. (A) अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन — सूचकांकमे मयंक सुन्दर शशिक प्रविष्टि “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन” रूपमे देल अछि।

४२७. (B) रिपोर्ताज — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४२८. (C) अन्तर्राष्ट्रिय नाट्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अन्तर्राष्ट्रिय नाट्य” अछि।

४२९. (D) डायस्पोरा, बोरद्यू सांस्कृतिक पूँजी, वैश्विक मैथिली — टिप्पणीक पहिल संकेत “डायस्पोरा, बोरद्यू सांस्कृतिक पूँजी, वैश्विक मैथिली” अछि।

४३०. (A) डायस्पोरा, बोरद्यू सांस्कृतिक पूँजी, वैश्विक मैथिली — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “डायस्पोरा, बोरद्यू सांस्कृतिक पूँजी, वैश्विक मैथिली” रूपमे देखाइत अछि।

४३१. (B) लेखक मयंक सुन्दर शशि, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा अन्तर्राष्ट्रिय नाट्य — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४३२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४३३. (D) ई पाठ अन्तर्राष्ट्रिय नाट्यक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४३४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४३५. (B) मयंक सुन्दर शशिक “अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजन” प्रविष्टि रिपोर्ताज, अन्तर्राष्ट्रिय नाट्य आ “डायस्पोरा, बोरद्यू सांस्कृतिक पूँजी, वैश्विक मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४३६. (A) नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन — सूचकांकमे जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क प्रविष्टि “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन” रूपमे देल अछि।

४३७. (B) रिपोर्ताज — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४३८. (C) मंचन-विवरण — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “मंचन-विवरण” अछि।

४३९. (D) राजा, पतन, शक्ति-विश्लेषण — टिप्पणीक पहिल संकेत “राजा, पतन, शक्ति-विश्लेषण” अछि।

४४०. (A) राजा, पतन, शक्ति-विश्लेषण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “राजा, पतन, शक्ति-विश्लेषण” रूपमे देखाइत अछि।

४४१. (B) लेखक जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा), विधा रिपोर्ताज, उप-विधा मंचन-विवरण — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४४२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४४३. (D) ई पाठ मंचन-विवरणक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४४४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४४५. (B) जीतू (विजयेन्द्र कुमार झा)क “नचिकेताक "एक छल राजा"क मंचन” प्रविष्टि रिपोर्ताज, मंचन-विवरण आ “राजा, पतन, शक्ति-विश्लेषण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४४६. **(A) मैथिली फिल्मक लिस्ट** — सूचकांकमे सत्यनारायण झाक प्रविष्टि “मैथिली फिल्मक लिस्ट” रूपमे देल अछि।

४४७. **(B) सूची/दस्तावेज** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “सूची/दस्तावेज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४४८. **(C) सिनेमा-परम्परा** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सिनेमा-परम्परा” अछि।

४४९. **(D) मैथिली चलचित्रक अभिलेख** — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली चलचित्रक अभिलेख” अछि।

४५०. **(A) मैथिली चलचित्रक अभिलेख** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली चलचित्रक अभिलेख” रूपमे देखाइत अछि।

४५१. **(B) लेखक सत्यनारायण झा, विधा सूची/दस्तावेज, उप-विधा सिनेमा-परम्परा** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४५२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४५३. **(D) ई पाठ सिनेमा-परम्पराक रूपमे सूची/दस्तावेज-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४५४. **(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४५५. **(B) सत्यनारायण झाक “मैथिली फिल्मक लिस्ट” प्रविष्टि सूची/दस्तावेज, सिनेमा-परम्परा आ “मैथिली चलचित्रक अभिलेख” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४५६. **(A) आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार** — सूचकांकमे सत्यनारायण झाक प्रविष्टि “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार” रूपमे देल अछि।

४५७. **(B) पुरस्कार-वृत्त** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पुरस्कार-वृत्त” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४५८. **(C) सम्मान-रिपोर्ताज** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सम्मान-रिपोर्ताज” अछि।

४५९. **(D) मैथिली रंगकर्मी सम्मान** — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली रंगकर्मी सम्मान” अछि।

४६०. **(A) मैथिली रंगकर्मी सम्मान** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली रंगकर्मी सम्मान” रूपमे देखाइत अछि।

४६१. **(B) लेखक सत्यनारायण झा, विधा पुरस्कार-वृत्त, उप-विधा सम्मान-रिपोर्ताज** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४६२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४६३. **(D) ई पाठ सम्मान-रिपोर्ताजक रूपमे पुरस्कार-वृत्त-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४६४. **(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४६५. **(B) सत्यनारायण झाक “आशुतोष अभिज्ञ – शैलबाला पुरस्कार” प्रविष्टि पुरस्कार-वृत्त, सम्मान-रिपोर्ताज आ “मैथिली रंगकर्मी सम्मान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४६६. **(A) रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार** — सूचकांकमे सत्यनारायण झाक प्रविष्टि “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार” रूपमे देल अछि।

४६७. **(B) पुरस्कार-वृत्त** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पुरस्कार-वृत्त” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४६८. **(C) सम्मान-रिपोर्ताज** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सम्मान-रिपोर्ताज” अछि।

४६९. **(D) महिला रंगकर्मी सम्मान** — टिप्पणीक पहिल संकेत “महिला रंगकर्मी सम्मान” अछि।

४७०. **(A) महिला रंगकर्मी सम्मान** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “महिला रंगकर्मी सम्मान” रूपमे देखाइत अछि।

४७१. **(B) लेखक सत्यनारायण झा, विधा पुरस्कार-वृत्त, उप-विधा सम्मान-रिपोर्ताज** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४७२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४७३. **(D) ई पाठ सम्मान-रिपोर्ताजक रूपमे पुरस्कार-वृत्त-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४७४. **(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४७५. **(B) सत्यनारायण झाक “रीतू कर्ण – कामेश्वरी देवी पुरस्कार” प्रविष्टि पुरस्कार-वृत्त, सम्मान-रिपोर्ताज आ “महिला रंगकर्मी सम्मान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४७६. (A) बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित — सूचकांकमे — (रिपोर्ताज)क प्रविष्टि “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित” रूपमे देल अछि।

४७७. (B) मंचन-सूचना — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “मंचन-सूचना” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४७८. (C) नाटक-प्रदर्शन — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाटक-प्रदर्शन” अछि।

४७९. (D) कर्म, भाग्य, दैव – लोक दर्शन — टिप्पणीक पहिल संकेत “कर्म, भाग्य, दैव – लोक दर्शन” अछि।

४८०. (A) कर्म, भाग्य, दैव – लोक दर्शन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “कर्म, भाग्य, दैव – लोक दर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

४८१. (B) लेखक — (रिपोर्ताज), विधा मंचन-सूचना, उप-विधा नाटक-प्रदर्शन — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४८२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४८३. (D) ई पाठ नाटक-प्रदर्शनक रूपमे मंचन-सूचना-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४८४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४८५. (B) — (रिपोर्ताज)क “बेरमा मे "अप्पन कर्मणक लि" नाटक मंचित” प्रविष्टि मंचन-सूचना, नाटक-प्रदर्शन आ “कर्म, भाग्य, दैव – लोक दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४८६. (A) नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११ — सूचकांकमे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११” रूपमे देल अछि।

४८७. (B) पुरस्कार-वृत्त — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पुरस्कार-वृत्त” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४८८. (C) सम्मान-रिपोर्ताज — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सम्मान-रिपोर्ताज” अछि।

४८९. (D) युवा नाट्य-प्रतिभाक संस्थागत मान्यता — टिप्पणीक पहिल संकेत “युवा नाट्य-प्रतिभाक संस्थागत मान्यता” अछि।

४९०. (A) युवा नाट्य-प्रतिभाक संस्थागत मान्यता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “युवा नाट्य-प्रतिभाक संस्थागत मान्यता” रूपमे देखाइत अछि।

४९१. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा पुरस्कार-वृत्त, उप-विधा सम्मान-रिपोर्ताज — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४९२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४९३. (D) ई पाठ सम्मान-रिपोर्ताजक रूपमे पुरस्कार-वृत्त-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४९४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४९५. (B) गजेन्द्र ठाकूरक “नाटककार आनन्द कुमार झा – साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०११” प्रविष्टि पुरस्कार-वृत्त, सम्मान-रिपोर्ताज आ “युवा नाट्य-प्रतिभाक संस्थागत मान्यता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४९६. (A) "भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक — सूचकांकमे — (रिपोर्ताज)क प्रविष्टि “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक” रूपमे देल अछि।

४९७. (B) नाटक/मंचन — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक/मंचन” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४९८. (C) सामाजिक यथार्थ — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सामाजिक यथार्थ” अछि।

४९९. (D) विस्मृति, भूल, पहिचान — टिप्पणीक पहिल संकेत “विस्मृति, भूल, पहिचान” अछि।

५००. (A) विस्मृति, भूल, पहिचान — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विस्मृति, भूल, पहिचान” रूपमे देखाइत अछि।

५०१. (B) लेखक — (रिपोर्ताज), विधा नाटक/मंचन, उप-विधा सामाजिक यथार्थ — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५०२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५०३. (D) ई पाठ सामाजिक यथार्थक रूपमे नाटक/मंचन-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५०४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५०५. (B) — (रिपोर्ताज)क “"भोरक भुलाइल" – जवाहरलाल कश्यपक नाटक” प्रविष्टि नाटक/मंचन, सामाजिक यथार्थ आ “विस्मृति, भूल, पहिचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५०६. (A) मैथिलोत्सव २०११ — सूचकांकमे मुन्ना जीक प्रविष्टि “मैथिलोत्सव २०११” रूपमे देल अछि।

५०७. (B) रिपोर्ताज — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५०८. (C) महोत्सव-विवरण — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “महोत्सव-विवरण” अछि।

५०९. (D) मैथिली उत्सव, सांस्कृतिक प्रदर्शन, सामूहिक अस्मिता — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली उत्सव, सांस्कृतिक प्रदर्शन, सामूहिक अस्मिता” अछि।

५१०. (A) मैथिली उत्सव, सांस्कृतिक प्रदर्शन, सामूहिक अस्मिता — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली उत्सव, सांस्कृतिक प्रदर्शन, सामूहिक अस्मिता” रूपमे देखाइत अछि।

५११. (B) लेखक मुन्ना जी, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा महोत्सव-विवरण — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५१२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५१३. (D) ई पाठ महोत्सव-विवरणक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५१४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५१५. (B) मुन्ना जीक “मैथिलोत्सव २०११” प्रविष्टि रिपोर्ताज, महोत्सव-विवरण आ “मैथिली उत्सव, सांस्कृतिक प्रदर्शन, सामूहिक अस्मिता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५१६. (A) जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११ — सूचकांकमे पूनम मण्डलक प्रविष्टि “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” रूपमे देल अछि।

५१७. (B) पुरस्कार-रिपोर्ताज — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “पुरस्कार-रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५१८. (C) साहित्य सम्मान — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “साहित्य सम्मान” अछि।

५१९. (D) ग्राम-जीवन, लोक-संवेदना, दस्तावेजीकरण — टिप्पणीक पहिल संकेत “ग्राम-जीवन, लोक-संवेदना, दस्तावेजीकरण” अछि।

५२०. (A) ग्राम-जीवन, लोक-संवेदना, दस्तावेजीकरण — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “ग्राम-जीवन, लोक-संवेदना, दस्तावेजीकरण” रूपमे देखाइत अछि।

५२१. (B) लेखक पूनम मण्डल, विधा पुरस्कार-रिपोर्ताज, उप-विधा साहित्य सम्मान — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५२२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५२३. (D) ई पाठ साहित्य सम्मानक रूपमे पुरस्कार-रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५२४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५२५. (B) पूनम मण्डलक “जगदीश प्रसाद मण्डल – "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११” प्रविष्टि पुरस्कार-रिपोर्ताज, साहित्य सम्मान आ “ग्राम-जीवन, लोक-संवेदना, दस्तावेजीकरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५२६. (A) "बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन — सूचकांकमे मनोज कुमार मण्डलक प्रविष्टि “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन” रूपमे देल अछि।

५२७. (B) मंचन-रिपोर्ताज — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “मंचन-रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५२८. (C) सिल थियेटर — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सिल थियेटर” अछि।

५२९. (D) पितृ-संकट — टिप्पणीक पहिल संकेत “पितृ-संकट” अछि।

५३०. **(A) पितृ-संकट** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पितृ-संकट” रूपमे देखाइत अछि।

५३१. **(B) लेखक मनोज कुमार मण्डल, विधा मंचन-रिपोर्ताज, उप-विधा सिल थियेटर** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५३२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५३३. **(D) ई पाठ सिल थियेटरक रूपमे मंचन-रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५३४. **(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५३५. **(B) मनोज कुमार मण्डलक “"बाप भेल विपत्ति" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टि मंचन-रिपोर्ताज, सिल थियेटर आ “पितृ-संकट” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५३६. **(A) "अधिकार" नाटक – सिल मंचन** — सूचकांकमे मनोज कुमार मण्डलक प्रविष्टि “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन” रूपमे देल अछि।

५३७. **(B) मंचन-रिपोर्ताज** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “मंचन-रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५३८. **(C) सिल थियेटर** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सिल थियेटर” अछि।

५३९. **(D) अधिकार-चेतना, ग्राम्सी, संघर्ष** — टिप्पणीक पहिल संकेत “अधिकार-चेतना, ग्राम्सी, संघर्ष” अछि।

५४०. **(A) अधिकार-चेतना, ग्राम्सी, संघर्ष** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अधिकार-चेतना, ग्राम्सी, संघर्ष” रूपमे देखाइत अछि।

५४१. **(B) लेखक मनोज कुमार मण्डल, विधा मंचन-रिपोर्ताज, उप-विधा सिल थियेटर** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५४२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५४३. **(D) ई पाठ सिल थियेटरक रूपमे मंचन-रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५४४. **(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५४५. **(B) मनोज कुमार मण्डलक “"अधिकार" नाटक – सिल मंचन” प्रविष्टि मंचन-रिपोर्ताज, सिल थियेटर आ “अधिकार-चेतना, ग्राम्सी, संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५४६. **(A) तितिया प्रस्तुति** — सूचकांकमे बृषेश चन्द्र लालक प्रविष्टि “तितिया प्रस्तुति” रूपमे देल अछि।

५४७. **(B) रिपोर्ताज** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “रिपोर्ताज” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५४८. **(C) सांस्कृतिक प्रस्तुति** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सांस्कृतिक प्रस्तुति” अछि।

५४९. **(D) रंगमंच विविधता, प्रयोगात्मक प्रदर्शन** — टिप्पणीक पहिल संकेत “रंगमंच विविधता, प्रयोगात्मक प्रदर्शन” अछि।

५५०. **(A) रंगमंच विविधता, प्रयोगात्मक प्रदर्शन** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रंगमंच विविधता, प्रयोगात्मक प्रदर्शन” रूपमे देखाइत अछि।

५५१. **(B) लेखक बृषेश चन्द्र लाल, विधा रिपोर्ताज, उप-विधा सांस्कृतिक प्रस्तुति** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५५२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५५३. **(D) ई पाठ सांस्कृतिक प्रस्तुतिक रूपमे रिपोर्ताज-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५५४. **(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५५५. **(B) बृषेश चन्द्र लालक “तितिया प्रस्तुति” प्रविष्टि रिपोर्ताज, सांस्कृतिक प्रस्तुति आ “रंगमंच विविधता, प्रयोगात्मक प्रदर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५५६. **(A) हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)** — सूचकांकमे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)” रूपमे देल अछि।

५५७. **(B) गद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५५८. **(C) सम्पादकीय/प्रस्तावना** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सम्पादकीय/प्रस्तावना” अछि।

५५९. **(D) विदेह आन्दोलनक उद्घोष** — टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह आन्दोलनक उद्घोष” अछि।

५६०. **(A) विदेह आन्दोलनक उद्घोष** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “विदेह आन्दोलनक उद्घोष” रूपमे देखाइत अछि।

५६१. **(B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा गद्य, उप-विधा सम्पादकीय/प्रस्तावना** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५६२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५६३. **(D) ई पाठ सम्पादकीय/प्रस्तावनाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५६४. **(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५६५. **(B) गजेन्द्र ठाकूरक “हम पुछेत छी – (सम्पादकीय)” प्रविष्टि गद्य, सम्पादकीय/प्रस्तावना आ “विदेह आन्दोलनक उद्घोष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५६६. **(A) विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी** — सूचकांकमे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी” रूपमे देल अछि।

५६७. **(B) लेख** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “लेख” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५६८. **(C) पुरस्कार-वृत्त** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पुरस्कार-वृत्त” अछि।

५६९. **(D) रंगमंचीय सम्मान** — टिप्पणीक पहिल संकेत “रंगमंचीय सम्मान” अछि।

५७०. **(A) रंगमंचीय सम्मान** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रंगमंचीय सम्मान” रूपमे देखाइत अछि।

५७१. **(B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा लेख, उप-विधा पुरस्कार-वृत्त** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५७२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५७३. **(D) ई पाठ पुरस्कार-वृत्तक रूपमे लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५७४. **(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५७५. **(B) गजेन्द्र ठाकूरक “विदेह सम्मान २०११-१२ – ज्योति सुनीत चौधरी” प्रविष्टि लेख, पुरस्कार-वृत्त आ “रंगमंचीय सम्मान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५७६. **(A) मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र** — सूचकांक पंक्ति 576मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र” रूपमे देल अछि।

५७७. **(B) समीक्षा/शोध** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “समीक्षा/शोध” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५७८. **(C) नाट्य-सिद्धान्त** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नाट्य-सिद्धान्त” अछि।

५७९. **(D) जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श** — टिप्पणीक पहिल संकेत “जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श” अछि।

५८०. **(A) जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।

५८१. **(B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा समीक्षा/शोध, उप-विधा नाट्य-सिद्धान्त** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५८२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५८३. **(D) ई पाठ नाट्य-सिद्धान्तक रूपमे समीक्षा/शोध-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५८४. **(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५८५. **(B) खण्ड 1885, सूचकांक पंक्ति 576मे गजेन्द्र ठाकूरक “मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र” प्रविष्टि समीक्षा/शोध, नाट्य-सिद्धान्त आ “जातिवाद, ब्रेख्तीय परिप्रेक्ष्य, लूकाच्सीय विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५८६. **(A) जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल** — सूचकांक पंक्ति 577मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” रूपमे देल अछि।

५८७. (B) नाटक-समीक्षा — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक-समीक्षा” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५८८. (C) सामाजिक यथार्थ — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सामाजिक यथार्थ” अछि।

५८९. (D) जाति-व्यवस्था, बहिष्कार — टिप्पणीक पहिल संकेत “जाति-व्यवस्था, बहिष्कार” अछि।

५९०. (A) जाति-व्यवस्था, बहिष्कार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “जाति-व्यवस्था, बहिष्कार” रूपमे देखाइत अछि।

५९१. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा नाटक-समीक्षा, उप-विधा सामाजिक यथार्थ — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५९२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५९३. (D) ई पाठ सामाजिक यथार्थक रूपमे नाटक-समीक्षा-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५९४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५९५. (B) खण्ड 1886, सूचकांक पंक्ति 577मे गजेन्द्र ठाकूरक “जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक – छुतहर / छुतहा घैल” प्रविष्टि नाटक-समीक्षा, सामाजिक यथार्थ आ “जाति-व्यवस्था, बहिष्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५९६. (A) डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक) — सूचकांक पंक्ति 578मे बेचन ठाकूरक प्रविष्टि “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” रूपमे देल अछि।

५९७. (B) नाटक (रूपान्तर) — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक (रूपान्तर)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५९८. (C) पाश्चात्य रूपान्तरण — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पाश्चात्य रूपान्तरण” अछि।

५९९. (D) मैथिली रंगमंच पर मार्लो — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली रंगमंच पर मार्लो” अछि।

६००. (A) मैथिली रंगमंच पर मार्लो — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मैथिली रंगमंच पर मार्लो” रूपमे देखाइत अछि।

६०१. (B) लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६०२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६०३. (D) ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६०४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६०५. (B) खण्ड 1887, सूचकांक पंक्ति 578मे बेचन ठाकूरक “डॉक्टर फॉस्टस (अंग्रेजी नाटक)” प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ “मैथिली रंगमंच पर मार्लो” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६०६. (A) सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक) — सूचकांक पंक्ति 579मे बेचन ठाकूरक प्रविष्टि “सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)” रूपमे देल अछि।

६०७. (B) नाटक (रूपान्तर) — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक (रूपान्तर)” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६०८. (C) पाश्चात्य रूपान्तरण — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पाश्चात्य रूपान्तरण” अछि।

६०९. (D) मिल्टनक बाइबलीय विद्रोह — टिप्पणीक पहिल संकेत “मिल्टनक बाइबलीय विद्रोह” अछि।

६१०. (A) रूपान्तरशास्त्र, चॉम्स्की — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रूपान्तरशास्त्र, चॉम्स्की” रूपमे देखाइत अछि।

६११. (B) लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६१२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६१३. (D) ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६१४. **(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६१५. **(B) खण्ड 1888, सूचकांक पंक्ति 579मे बेचन ठाकूरक "सैमसन एगोनिस्टेस (अंग्रेजी नाटक)" प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ "रूपान्तरशास्त्र, चॉम्स्की" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६१६. **(A) मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)** — सूचकांक पंक्ति 580मे बेचन ठाकूरक प्रविष्टि "मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)" रूपमे देल अछि।

६१७. **(B) नाटक (रूपान्तर)** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "नाटक (रूपान्तर)" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६१८. **(C) पाश्चात्य रूपान्तरण** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "पाश्चात्य रूपान्तरण" अछि।

६१९. **(D) एलियटक धार्मिक-राजनीति** — टिप्पणीक पहिल संकेत "एलियटक धार्मिक-राजनीति" अछि।

६२०. **(A) शहादत, सत्ता-विरोध** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "शहादत, सत्ता-विरोध" रूपमे देखाइत अछि।

६२१. **(B) लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६२२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६२३. **(D) ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६२४. **(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६२५. **(B) खण्ड 1889, सूचकांक पंक्ति 580मे बेचन ठाकूरक "मर्डर इन द कैथेड्रल (अंग्रेजी नाटक)" प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ "शहादत, सत्ता-विरोध" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६२६. **(A) स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)** — सूचकांक पंक्ति 581मे बेचन ठाकूरक प्रविष्टि "स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)" रूपमे देल अछि।

६२७. **(B) नाटक (रूपान्तर)** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "नाटक (रूपान्तर)" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६२८. **(C) पाश्चात्य रूपान्तरण** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "पाश्चात्य रूपान्तरण" अछि।

६२९. **(D) औद्योगिक संघर्ष** — टिप्पणीक पहिल संकेत "औद्योगिक संघर्ष" अछि।

६३०. **(A) औद्योगिक संघर्ष** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "औद्योगिक संघर्ष" रूपमे देखाइत अछि।

६३१. **(B) लेखक बेचन ठाकूर, विधा नाटक (रूपान्तर), उप-विधा पाश्चात्य रूपान्तरण** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६३२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६३३. **(D) ई पाठ पाश्चात्य रूपान्तरणक रूपमे नाटक (रूपान्तर)-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६३४. **(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६३५. **(B) खण्ड 1890, सूचकांक पंक्ति 581मे बेचन ठाकूरक "स्ट्राइफ (अंग्रेजी नाटक)" प्रविष्टि नाटक (रूपान्तर), पाश्चात्य रूपान्तरण आ "औद्योगिक संघर्ष" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६३६. **(A) बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप** — सूचकांक पंक्ति 582मे बेचन ठाकूरक प्रविष्टि "बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप" रूपमे देल अछि।

६३७. **(B) वार्ता/सन्दर्भ** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "वार्ता/सन्दर्भ" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६३८. **(C) साक्षात्कार** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "साक्षात्कार" अछि।

६३९. **(D) निर्देशनक व्यावहारिक चर्चा** — टिप्पणीक पहिल संकेत "निर्देशनक व्यावहारिक चर्चा" अछि।

६४०. **(A) रंगमंचीय लोकाचार** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “रंगमंचीय लोकाचार” रूपमे देखाइत अछि।

६४१. **(B) लेखक बेचन ठाकूर, विधा वार्ता/सन्दर्भ, उप-विधा साक्षात्कार** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६४२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६४३. **(D) ई पाठ साक्षात्कारक रूपमे वार्ता/सन्दर्भ-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६४४. **(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६४५. **(B) खण्ड 1891, सूचकांक पंक्ति 582मे बेचन ठाकूरक “बेचन ठाकुरसँ मुत्राजीक गपशप” प्रविष्टि वार्ता/सन्दर्भ, साक्षात्कार आ “रंगमंचीय लोकाचार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६४६. **(A) मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)** — सूचकांक पंक्ति 583मे बेचन ठाकूरक प्रविष्टि “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” रूपमे देल अछि।

६४७. **(B) चिन्तन/लेख** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “चिन्तन/लेख” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६४८. **(C) निर्देशन-विधि** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “निर्देशन-विधि” अछि।

६४९. **(D) प्रायोगिक रंगमंच** — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रायोगिक रंगमंच” अछि।

६५०. **(A) प्रायोगिक रंगमंच** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रायोगिक रंगमंच” रूपमे देखाइत अछि।

६५१. **(B) लेखक बेचन ठाकूर, विधा चिन्तन/लेख, उप-विधा निर्देशन-विधि** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६५२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६५३. **(D) ई पाठ निर्देशन-विधिक रूपमे चिन्तन/लेख-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६५४. **(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६५५. **(B) खण्ड 1892, सूचकांक पंक्ति 583मे बेचन ठाकूरक “मैथिली नाटकक निर्देशन / मंचन (सामान्य)” प्रविष्टि चिन्तन/लेख, निर्देशन-विधि आ “प्रायोगिक रंगमंच” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६५६. **(A) नो एंट्री : मा प्रविश** — सूचकांक पंक्ति 584मे उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क प्रविष्टि “नो एंट्री : मा प्रविश” रूपमे देल अछि।

६५७. **(B) नाटक** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६५८. **(C) अस्तित्ववादी** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “अस्तित्ववादी” अछि।

६५९. **(D) यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार** — टिप्पणीक पहिल संकेत “यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार” अछि।

६६०. **(A) यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार” रूपमे देखाइत अछि।

६६१. **(B) लेखक उदय नारायण सिंह “नचिकेता”, विधा नाटक, उप-विधा अस्तित्ववादी** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६६२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६६३. **(D) ई पाठ अस्तित्ववादीक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६६४. **(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६६५. **(B) खण्ड 1893, सूचकांक पंक्ति 584मे उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “नो एंट्री : मा प्रविश” प्रविष्टि नाटक, अस्तित्ववादी आ “यम, चित्रगुप्त, मृत्यु-द्वार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६६६. **(A) जडैत मोमबत्ती** — सूचकांक पंक्ति 585मे उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क प्रविष्टि “जडैत मोमबत्ती” रूपमे देल अछि।

६६७. **(B) नाटक** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६६८. **(C) प्रतीकात्मक** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रतीकात्मक” अछि।

६६९. **(D) मृत्यु, प्रतीक्षा, स्मृति** — टिप्पणीक पहिल संकेत “मृत्यु, प्रतीक्षा, स्मृति” अछि।

६७०. **(A) अस्तित्ववादी कोण** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “अस्तित्ववादी कोण” रूपमे देखाइत अछि।

६७१. **(B) लेखक उदय नारायण सिंह “नचिकेता”, विधा नाटक, उप-विधा प्रतीकात्मक** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६७२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६७३. **(D) ई पाठ प्रतीकात्मकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६७४. **(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६७५. **(B) खण्ड 1894, सूचकांक पंक्ति 585मे उदय नारायण सिंह “नचिकेता”क “जडैत मोमबत्ती” प्रविष्टि नाटक, प्रतीकात्मक आ “अस्तित्ववादी कोण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६७६. **(A) संकष्टन (नाटक)** — सूचकांक पंक्ति 586मे गजेन्द्र ठाकूरक प्रविष्टि “संकष्टन (नाटक)” रूपमे देल अछि।

६७७. **(B) नाटक** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६७८. **(C) सामाजिक-यथार्थवादी** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सामाजिक-यथार्थवादी” अछि।

६७९. **(D) मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स** — टिप्पणीक पहिल संकेत “मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स” अछि।

६८०. **(A) मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स” रूपमे देखाइत अछि।

६८१. **(B) लेखक गजेन्द्र ठाकूर, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-यथार्थवादी** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६८२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६८३. **(D) ई पाठ सामाजिक-यथार्थवादीक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६८४. **(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६८५. **(B) खण्ड 1895, सूचकांक पंक्ति 586मे गजेन्द्र ठाकूरक “संकष्टन (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-यथार्थवादी आ “मानवीय संकट, ग्राम्सी, लूकाच्स” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६८६. **(A) बलचन्दा (नाटक)** — सूचकांक पंक्ति 587मे विभा रानीक प्रविष्टि “बलचन्दा (नाटक)” रूपमे देल अछि।

६८७. **(B) नाटक** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६८८. **(C) स्त्री-विमर्शी** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “स्त्री-विमर्शी” अछि।

६८९. **(D) पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध** — टिप्पणीक पहिल संकेत “पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध” अछि।

६९०. **(A) पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध” रूपमे देखाइत अछि।

६९१. **(B) लेखक विभा रानी, विधा नाटक, उप-विधा स्त्री-विमर्शी** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६९२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६९३. **(D) ई पाठ स्त्री-विमर्शीक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६९४. **(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६९५. **(B) खण्ड 1896, सूचकांक पंक्ति 587मे विभा रानीक “बलचन्दा (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, स्त्री-विमर्शी आ “पितृसत्ता, नारी-प्रतिरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६९६. **(A) भाग रौ (नाटक)** — सूचकांक पंक्ति 588मे विभा रानीक प्रविष्टि “भाग रौ (नाटक)” रूपमे देल अछि।

६९७. **(B) नाटक** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६९८. **(C) सामाजिक यथार्थ** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सामाजिक यथार्थ” अछि।

६९९. **(D) गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना** — टिप्पणीक पहिल संकेत “गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना” अछि।

७००. **(A) गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना” रूपमे देखाइत अछि।

७०१. **(B) लेखक विभा रानी, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक यथार्थ** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७०२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७०३. **(D) ई पाठ सामाजिक यथार्थक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७०४. **(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७०५. **(B) खण्ड 1897, सूचकांक पंक्ति 588मे विभा रानीक “भाग रौ (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक यथार्थ आ “गरीबी, महिला-उत्पीड़न, प्रतिरोध-चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७०६. **(A) कैसर (नाटक)** — सूचकांक पंक्ति 589मे ज्योति सुनीत चौधरीक प्रविष्टि “कैसर (नाटक)” रूपमे देल अछि।

७०७. **(B) नाटक** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७०८. **(C) सामाजिक-राजनीतिक** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सामाजिक-राजनीतिक” अछि।

७०९. **(D) शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग** — टिप्पणीक पहिल संकेत “शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग” अछि।

७१०. **(A) शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग” रूपमे देखाइत अछि।

७११. **(B) लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-राजनीतिक** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७१२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७१३. **(D) ई पाठ सामाजिक-राजनीतिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७१४. **(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७१५. **(B) खण्ड 1898, सूचकांक पंक्ति 589मे ज्योति सुनीत चौधरीक “कैसर (नाटक)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-राजनीतिक आ “शक्ति-व्यवस्था, मैथिली रंगमंच पर यथार्थवादी प्रयोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७१६. **(A) नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनुसार)** — सूचकांक पंक्ति 590मे सरोज खिलाड़ीक प्रविष्टि “नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनुसार)” रूपमे देल अछि।

७१७. **(B) नाटक** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७१८. **(C) सामाजिक-नैतिक** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “सामाजिक-नैतिक” अछि।

७१९. **(D) समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच** — टिप्पणीक पहिल संकेत “समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच” अछि।

७२०. **(A) समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच” रूपमे देखाइत अछि।

७२१. **(B) लेखक सरोज खिलाड़ी, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-नैतिक** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७२२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७२३. **(D) ई पाठ सामाजिक-नैतिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७२४. **(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७२५. **(B) खण्ड 1899, सूचकांक पंक्ति 590मे सरोज खिलाड़ीक “नाटक १ (प्रेम के प्रताप / धर्म-अधर्म – अनुक्रम अनुसार)” प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-नैतिक आ “समकालीन मैथिली यथार्थवादी रंगमंच” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७२६. **(A) नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)** — सूचकांक पंक्ति 591मे सरोज खिलाड़ीक प्रविष्टि “नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)” रूपमे देल अछि।

७२७. **(B) नाटक** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७२८. **(C) नारी-सामाजिक** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “नारी-सामाजिक” अछि।

७२९. **(D) नारी-केन्द्रित विमर्श** — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी-केन्द्रित विमर्श” अछि।

७३०. **(A) नारी-केन्द्रित विमर्श** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “नारी-केन्द्रित विमर्श” रूपमे देखाइत अछि।

७३१. **(B) लेखक सरोज खिलाड़ी, विधा नाटक, उप-विधा नारी-सामाजिक** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७३२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७३३. **(D) ई पाठ नारी-सामाजिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७३४. **(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७३५. **(B) खण्ड 1900, सूचकांक पंक्ति 591मे सरोज खिलाड़ीक “नाटक २ (नारी अस्मिता / ग्रामीण परिदृश्य)” प्रविष्टि नाटक, नारी-सामाजिक आ “नारी-केन्द्रित विमर्श” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७३६. **(A) नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)** — सूचकांक पंक्ति 592मे सरोज खिलाड़ीक प्रविष्टि “नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)” रूपमे देल अछि।

७३७. **(B) नाटक** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७३८. **(C) पारिवारिक-विघटन** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “पारिवारिक-विघटन” अछि।

७३९. **(D) परिवार-विसंगति, पितृसत्ताक चुनौती, आधुनिकता-परम्परा द्वन्द्व** — टिप्पणीक पहिल संकेत “परिवार-विसंगति, पितृसत्ताक चुनौती, आधुनिकता-परम्परा द्वन्द्व” अछि।

७४०. **(A) परिवार-विसंगति, पितृसत्ताक चुनौती, आधुनिकता-परम्परा द्वन्द्व** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “परिवार-विसंगति, पितृसत्ताक चुनौती, आधुनिकता-परम्परा द्वन्द्व” रूपमे देखाइत अछि।

७४१. **(B) लेखक सरोज खिलाड़ी, विधा नाटक, उप-विधा पारिवारिक-विघटन** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७४२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७४३. **(D) ई पाठ पारिवारिक-विघटनक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७४४. **(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७४५. **(B) खण्ड 1901, सूचकांक पंक्ति 592मे सरोज खिलाड़ीक “नाटक ३ (परिवार-संघर्ष)” प्रविष्टि नाटक, पारिवारिक-विघटन आ “परिवार-विसंगति, पितृसत्ताक चुनौती, आधुनिकता-परम्परा द्वन्द्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७४६. **(A) सुन्दर संयोग (नाटक)** — सूचकांक पंक्ति 593मे जीवन झाक प्रविष्टि “सुन्दर संयोग (नाटक)” रूपमे देल अछि।

७४७. **(B) नाटक** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “नाटक” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७४८. **(C) प्रणय-सामाजिक** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “प्रणय-सामाजिक” अछि।

७४९. **(D) प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता** — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता” अछि।

७५०. **(A) प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा “प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता” रूपमे देखाइत अछि।

७५१. **(B) लेखक जीवन झा, विधा नाटक, उप-विधा प्रणय-सामाजिक** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७५२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७५३. (D) ई पाठ प्रणय-सामाजिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७५४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७५५. (B) खण्ड 1902, सूचकांक पंक्ति 593मे जीवन झाक "सुन्दर संयोग (नाटक)" प्रविष्टि नाटक, प्रणय-सामाजिक आ "प्रेम, मिलन, सामाजिक अनुकूलता" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७५६. (A) सामवती पुनर्जन्म? (नाटक) — सूचकांक पंक्ति 594मे जीवन झाक प्रविष्टि "सामवती पुनर्जन्म? (नाटक)" रूपमे देल अछि।

७५७. (B) नाटक — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "नाटक" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७५८. (C) दार्शनिक-पौराणिक — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "दार्शनिक-पौराणिक" अछि।

७५९. (D) पुनर्जन्म, नियति, कर्म-सिद्धान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत "पुनर्जन्म, नियति, कर्म-सिद्धान्त" अछि।

७६०. (A) नव्य-न्याय, भारतीय दर्शन — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "नव्य-न्याय, भारतीय दर्शन" रूपमे देखाइत अछि।

७६१. (B) लेखक जीवन झा, विधा नाटक, उप-विधा दार्शनिक-पौराणिक — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७६२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७६३. (D) ई पाठ दार्शनिक-पौराणिकक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७६४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७६५. (B) खण्ड 1903, सूचकांक पंक्ति 594मे जीवन झाक "सामवती पुनर्जन्म? (नाटक)" प्रविष्टि नाटक, दार्शनिक-पौराणिक आ "नव्य-न्याय, भारतीय दर्शन" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७६६. (A) अंधविश्वास (नाटक) — सूचकांक पंक्ति 595मे शिव कुमार झाक प्रविष्टि "अंधविश्वास (नाटक)" रूपमे देल अछि।

७६७. (B) नाटक — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "नाटक" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७६८. (C) सामाजिक-व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "सामाजिक-व्यंग्य" अछि।

७६९. (D) अंधविश्वास विरोधी चेतना — टिप्पणीक पहिल संकेत "अंधविश्वास विरोधी चेतना" अछि।

७७०. (A) अंधविश्वास विरोधी चेतना — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "अंधविश्वास विरोधी चेतना" रूपमे देखाइत अछि।

७७१. (B) लेखक शिव कुमार झा, विधा नाटक, उप-विधा सामाजिक-व्यंग्य — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७७२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७७३. (D) ई पाठ सामाजिक-व्यंग्यक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७७४. (A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७७५. (B) खण्ड 1904, सूचकांक पंक्ति 595मे शिव कुमार झाक "अंधविश्वास (नाटक)" प्रविष्टि नाटक, सामाजिक-व्यंग्य आ "अंधविश्वास विरोधी चेतना" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क नाट्य-साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७७६. (A) भफाइत चाहक जिनगी — सूचकांक पंक्ति 596मे रवि भूषण पाठकक प्रविष्टि "भफाइत चाहक जिनगी" रूपमे देल अछि।

७७७. (B) नाटक — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "नाटक" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७७८. (C) व्यक्ति-चरित्र — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "व्यक्ति-चरित्र" अछि।

७७९. (D) प्रवासी जीवन-विसंगति — टिप्पणीक पहिल संकेत "प्रवासी जीवन-विसंगति" अछि।

७८०. (A) प्रवासी जीवन-विसंगति — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "प्रवासी जीवन-विसंगति" रूपमे देखाइत अछि।

७८१. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा नाटक, उप-विधा व्यक्ति-चरित्र — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७८२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७८३. **(D) ई पाठ व्यक्ति-चरित्रक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७८४. **(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७८५. **(B) खण्ड 1905, सूचकांक पंक्ति 596मे रवि भूषण पाठकक "भफाइत चाहक जिनगी" प्रविष्टि नाटक, व्यक्ति-चरित्र आ "प्रवासी जीवन-विसंगति" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७८६. **(A) मिथिलाक बेटी (नाटक)** — सूचकांक पंक्ति 597मे शम्भू कुमार सिंहक प्रविष्टि "मिथिलाक बेटी (नाटक)" रूपमे देल अछि।

७८७. **(B) नाटक** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ "नाटक" रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७८८. **(C) नारी-केन्द्रित** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप "नारी-केन्द्रित" अछि।

७८९. **(D) मिथिला नारी-दशा** — टिप्पणीक पहिल संकेत "मिथिला नारी-दशा" अछि।

७९०. **(A) मिथिला नारी-दशा** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख अर्थ-दिशा "मिथिला नारी-दशा" रूपमे देखाइत अछि।

७९१. **(B) लेखक शम्भू कुमार सिंह, विधा नाटक, उप-विधा नारी-केन्द्रित** — सूचकांक लेखक, पाठ, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७९२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७९३. **(D) ई पाठ नारी-केन्द्रितक रूपमे नाटक-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७९४. **(A) ओ लेखक, पाठ आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७९५. **(B) खण्ड 1906, सूचकांक पंक्ति 597मे शम्भू कुमार सिंहक "मिथिलाक बेटी (नाटक)" प्रविष्टि नाटक, नारी-केन्द्रित आ "मिथिला नारी-दशा" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 8क साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।